वर्ष 23, अंक 257, पृष्ठ 08, मूल्य: 3.00

अखंड भारत संदेश

www.akhandbharatsandesh.net

प्रयागराज से प्रकाशित

नगर संस्करण प्रयागराज शुक्रवार 11 अक्टूबर 2024

विश्व निर्माण एवं मानव विकास को द्रुतगति प्रदान करने हेतु क्रियायोग आश्रम एवं अनुसंधान आश्रम की अनुपम भेंट

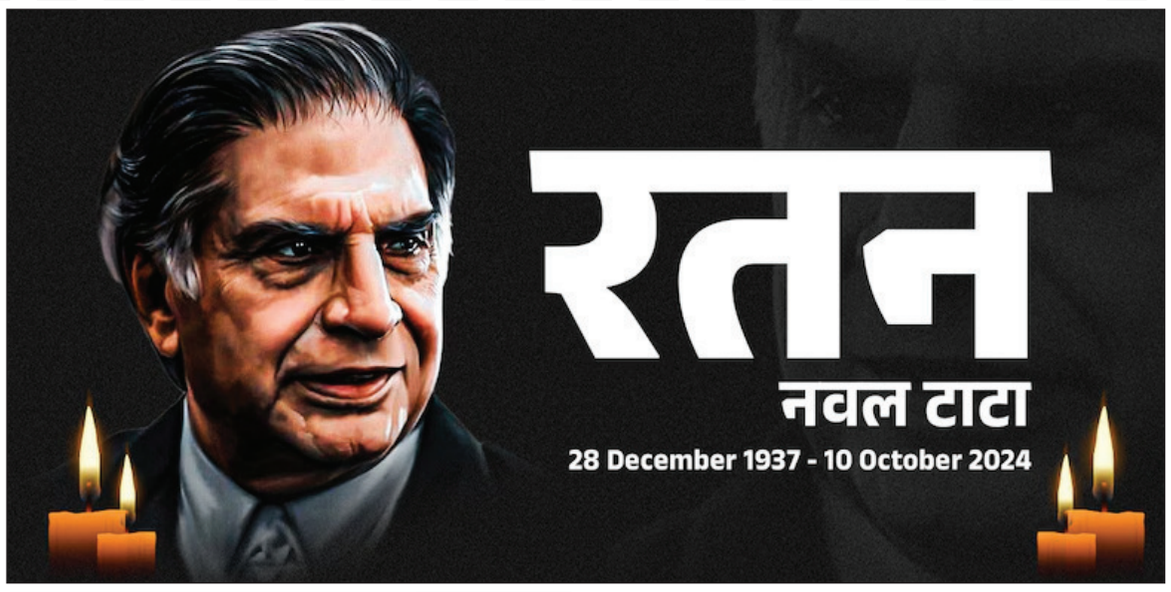

श्रद्धांजलि

झलक पड़े आंसू

अलविदा

रतन टाटा को श्रद्धांजलि देने पहुंचे अमित शाह, शिंदे, नायडू... NCPA ग्राउंड में लोग कर रहे हैं अंतिम दर्शन

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने श्री रतन टाटा के निधन पर शोक व्यक्त किया है "श्री रतन टाटा जी एक दूरदर्शी उद्योगपति, एक दयालु आत्मा और एक असाधारण इंसान थे। उन्होंने भारत के सबसे पुराने और सबसे प्रतिष्ठित व्यापारिक घरानों में से एक को स्थिर नेतृत्व प्रदान किया। साथ ही उनका योगदान बोर्डरूम से कहीं आगे तक गया। उन्होंने अपनी विनम्रता, दयालुता और हमारे समाज को बेहतर बनाने के लिए एक अटूट प्रतिबद्धता के कारण कई लोगों के बीच अपनी जगह बनाई।"

रतन टाटा के निधन पर विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर ने कहा, "मैं उनसे पहली बार तब मिला था जब मैं सरकार में एक तरह से मध्यम स्तर पर था. उस समय, हमने संयुक्त राज्य अमेरिका के साथ सीईओ फोरम की शुरूआत की थी. वह एक ऐसे व्यक्ति के रूप में स्वाभाविक पसंद थे जो इसका नेतृत्व करने वाले थे. इसलिए उन वर्षों में हम एक साथ मिलकर काम करते थे, साथ में अमेरिका की यात्रा करते थे. वह वास्तव में एक उल्लेखनीय व्यक्ति थे. मुझे लगता है कि अगर आप आज भावनाओं, स्नेह, सम्मान के प्रवाह को देखें, तो मुझे उद्योग जगत में ऐसा कोई व्यक्ति याद नहीं आता जिसने बहुत व्यापक वर्ग के लोगों में इस तरह की भावना पैदा की हो. मेरा मतलब है, इसे वास्तव में राष्ट्रीय क्षति के रूप में देखा जाता है. वह अपने समय से आगे के व्यक्ति थे. उन्होंने टाटा समूह को एक तरह से विदेश में ले गए."

रतन टाटा के निधन पर केंद्रीय मंत्री सबार्नंद सोनोवाल ने कहा, "देश के महान सेवक रतन टाटा अब हमारे बीच नहीं रहे. उन्होंने अपने जीवन में जो योगदान दिया और देश के विकास को दिशा देने के लिए जो कदम उठाए, इतिहास उन्हें हमेशा बहुत सम्मान के साथ याद रखेगा."

कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा, "रतन टाटा ने अपने अथक परिश्रम और प्रगतिशील दृष्टिकोण से भारतीय उद्योग जगत को नई ऊंचाइयां दीं. जनकल्याण और मानवता की सेवा के क्षेत्र में रतन टाटा ने जो अभूतपूर्व उदाहरण पेश किया है, वह सदियों तक प्रेरणा देता रहेगा. देश को उनकी कमी हमेशा खलेगी. रतन टाटा के परिवार और चाहने वालों के प्रति मेरी गहरी संवेदनाएं. ईश्वर उन्हें अपने श्रीचरणों में स्थान दें."

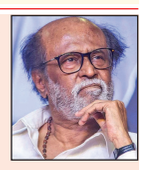

अभिनेता रजनीकांत ने ने कहा, "एक महान दिग्गज आइकन जिन्होंने अपनी दूरदर्शिता और जुनून से भारत को वैश्विक मानचित्र पर स्थापित किया. वह व्यक्ति जिसने हजारों उद्योगपतियों को प्रेरित किया. वह व्यक्ति जिसने कई पीढ़ियों के लिए लाखों नौकरियां पैदा कीं. वह व्यक्ति जिसे सभी प्यार करते थे और सम्मान देते थे. उन्हें मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि. मैं इस महान आत्मा के साथ बिताए हर पल को हमेशा संजो कर रखूंगा. भारत का एक सच्चा सपूत अब हमारे बीच नहीं रहा. शांति से विश्राम करें."

मुंबई

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने मुंबई में रतन टाटा को अंतिम श्रद्धांजलि दी। महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे और उपमुख्यमंत्री देवेन्द्र फडणवीस ने मुंबई में रतन टाटा को अंतिम श्रद्धांजलि दी। टाटा समूह के पूर्व अध्यक्ष टाटा, जिन्होंने एक प्रतिष्ठित समूह को भारत के सबसे बड़े और सबसे प्रभावशाली समूह में बदल दिया, ने बुधवार रात मुंबई में अंतिम सांस ली। शिवसेना (यूबीटी) नेता उद्धव ठाकरे के साथ अदतिया ठाकरे, अनिल देसाई और अरविंद सावंत ने मुंबई में रतन टाटा को अंतिम श्रद्धांजलि दी। आज एक कार्यक्रम में अमित शाह ने कहा कि श्री रतन टाटा का कल निधन हो गया। मैं उन्हें हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। वह न केवल भारत बल्कि विश्व के प्रतिष्ठित उद्योगपति थे। उन्होंने ऐसे समय में टाटा समूह का नेतृत्व संभाला जब टाटा समूह के लिए बदलाव करना महत्वपूर्ण था। उन्होंने टाटा ग्रुप के काम करने के तरीके और कई व्यवसायों को बदल दिया। शाह ने कहा कि रतन टाटा जी के नेतृत्व में बिजनेस ग्रुप ने शिक्षा और कैंसर के इलाज सहित कई अन्य क्षेत्रों में बहुत काम किया। रतन टाटा की विरासत उद्योग जगत में लोगों का मार्गदर्शन करेगी।

महान उद्योगपति रतन टाटा को यहां राष्ट्रीय प्रदर्शन कला केंद्र (एनसीपीए) में बृहस्पतिवार कोश्रद्धांजलि देने के लिए एकत्र हुए छात्रों और युवाओं के लिए, वह सिर्फ एक उद्योगपति ही नहीं थे बल्कि मानवीय मूल्यों के एक जीवंत प्रतीक और एक आदर्श व्यक्ति थे जो परोपकार और पशुओं के प्रति अपने प्रेम के लिए भी जाने जाते थे। महाराष्ट्र मंत्रिमंडल ने बृहस्पतिवार को एक प्रस्ताव पारित किया है जिसमें केंद्र सरकार से दिवंगत उद्योगपति रतन टाटा को देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किए।

दिल्ली में कांग्रेस की हुई बड़ी बैठक, बन गया मास्टरप्लान

नई दिल्ली। हरियाणा चुनाव के नतीजों के बाद आज कांग्रेस ने दिल्ली में समीक्षा बैठक बुलाई। इस बैठक में पार्टी अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे और नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी भी मौजूद रहे।

बता दे बैठक में चुनाव नतीजों को लेकर एक फैक्ट फाइंडिंग कमेटी के गठन को हरी झंडी दी गई। बैठक के बाद पार्टी नेता अजय माकन ने इस मीटिंग की जानकारी साझा की। माकन ने कि हरियाणा चुनाव के नतीजों को अप्रत्याशित बताया और

कहा कि एग्जिट पोल्स और चुनाव नतीजों में जमीन-आसमान का फर्क था। माकन ने आगे बताया कि मीटिंग में चुनाव आयोग को लेकर भी बात हुई जिसको लेकर पार्टी आगे अभी और कार्रवाई करेंगी।

आतिशी को बंगला आवंटित ही नहीं किया गया था: एलजी

नई दिल्ली। उपराज्यपाल कार्यालय ने गुरुवार को दिल्ली के मुख्यमंत्री आवास को सील करने और मुख्यमंत्री आतिशी का सामान बाहर किए जाने पर बयान दिया है। उपराज्यपाल की तरफ से कहा गया है कि आतिशी को आधिकारिक रूप से सरकारी बंगला आवंटित नहीं किया गया था। इसके बावजूद उन्होंने अवैध रूप से सरकारी बंगले में घुसने की कोशिश की थी और जब आप किसी के घर में घुसते हैं, तो स्वाभाविक है कि उस घर का मालिक आपके खिलाफ कार्रवाई करेगा ही।

उपराज्यपाल कार्यालय ने अपनी तरफ से जारी बयान में कहा, मुख्यमंत्री आतिशी ने सरकारी बंगले के लिए अनुरोध किया था, जो विचाराधीन था। अभी तक उन्हें अधिकृत रूप से बंगला आवंटित नहीं किया गया था। इसके

बावजूद वे बंगले में दाखिल हुईं, जिसके परिणामस्वरूप लोक निर्माण विभाग ने उनके खिलाफ यह कार्रवाई की है।

आम आदमी पार्टी का कहना है कि केंद्र सरकार मुख्यमंत्री का सरकारी बंगला भाजपा नेता को आवंटित करना चाहती है, जबकि नियमों के अनरूप यह बंगला मुख्यमंत्री को आवंटित किया जाता है, लेकिन केंद्र सरकार इन नियमों को ताक पर रखकर अपनी मनमानी कर रही है, जिसे हम किसी भी कीमत पर बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं।

बता दें कि बुधवार दिल्ली विकास प्राधिकरण ने हैंडओवर का हवाला देकर मुख्यमंत्री आतिशी का सरकारी बंगला सील कर दिया था और उनका सामान भी बाहर कर दिया था। जिस पर आम आदमी पार्टी ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की थी। पूर्व मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल मुख्यमंत्री पद से इस्तीफा देने के बाद सरकारी बंगला खाली कर चुके हैं। ऐसे में अब यह बंगला नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री आतिशी को आवंटित किया जाना था, लेकिन भाजपा का दावा है कि अभी तक आतिशी को अधिकृत रूप से यह बंगला आवंटित नहीं किया गया है, जिसे लेकर दोनों दलों के बीच सियासी तकरार अपने चरम पर है।

नेशनल कॉन्फ्रेंस को मिला 4 निर्दलीय विधायकों का समर्थन, उमर अब्दुल्ला चुने गए विधायक दल के नेता

जम्मू-कश्मीर

नेशनल कॉन्फ्रेंस ने 90 सदस्यीय विधानसभा में 46 सीटों के साथ बहुमत के आंकड़े के साथ 42 सीटें जीती हैं। नेशनल कॉन्फ्रेंस की सहयोगी कांग्रेस को छह सीटें मिली हैं। हालाँकि, 4 स्वतंत्र विधायकों के समर्थन से, एनसी को अपने दम पर बहुमत मिल गया है और वह कांग्रेस पर भरोसा करने के लिए बाध्य नहीं है।

भारत निर्वाचन आयोग द्वारा विधानसभा चुनाव परिणाम घोषित करने के बाद, चार निर्दलीय विधायक गुरुवार को नेशनल कॉन्फ्रेंस गठबंधन में शामिल हो गए। एनसी प्रमुख और पूर्व मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला को सर्वसम्मति से नेशनल कॉन्फ्रेंस के विधायक दल का प्रमुख चुना गया। फारूक अब्दुल्ला ने कहा कि विधायक दल की एक बैठक हुई जहां सभी ने सर्वसम्मति से उमर अब्दुल्ला को अपना नेता चुना। उन्होंने कहा कि सरकार गठन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए चुनाव पूर्व गठबंधन सहयोगियों की एक बैठक शुक्रवार को होगी।

उमर अब्दुल्ला ने कहा क आज नेशनल कॉन्फ्रेंस विधायक दल की बैठक में मुझे विधायक दल का नेता चुना गया है। मैं विधायकों का आभार व्यक्त करता हूं। कांग्रेस से समर्थन पत्र लेने के लिए बातचीत चल रही है। उन्होंने कहा कि 4 निर्दलीय विधायकों ने भी नेशनल कॉन्फ्रेंस को अपना समर्थन दिया है। अब एनसी की संख्या 42 प्लस 4 निर्दलीय विधायक हैं। कांग्रेस का पत्र मिलने के बाद हम राजभवन जाकर सरकार बनाने का दावा पेश करेंगे।

नेशनल कॉन्फ्रेंस ने 90 सदस्यीय विधानसभा में 46 सीटों के साथ बहुमत के आंकड़े के साथ 42 सीटें जीती हैं। नेशनल कॉन्फ्रेंस की सहयोगी कांग्रेस को

छह सीटें मिली हैं। हालाँकि, 4 स्वतंत्र विधायकों के समर्थन से, एनसी को अपने दम पर बहुमत मिल गया है और वह कांग्रेस पर भरोसा करने के लिए बाध्य नहीं है। एनसी को निर्दलीय विधायकों के समर्थन ने गठबंधन में कांग्रेस पार्टी की सौदेबाजी की शक्ति को भी कम कर दिया है।

इससे पहले नेशनल कॉन्फ्रेंस के नेता उमर अब्दुल्ला ने बुधवार को कहा कि विधानसभा चुनाव के नतीजे साबित करते हैं कि जम्मू-कश्मीर के ज्यादातर लोग पूर्ववर्ती राज्य के विशेष दर्जे को समाप्त करने के केंद्र सरकार के फैसले के पक्ष में नहीं हैं। उमर ने यहां पीटीआई वीडियो से कहा, यह (जनादेश) स्पष्ट रूप से उस फैसले के पक्ष में नहीं है। अगर ऐसा होता, तो भाजपा जीत जाती। जम्मू-कश्मीर के ज्यादातर लोगों ने पांच अगस्त 2019 के कदम का समर्थन नहीं किया है। यह एक सच्चाई है। हमसे परामर्श नहीं किया गया और हम उस फैसला का हिस्सा नहीं थे। लेकिन अब हम आगे बढ़ेंगे और देखेंगे कि हम क्या कर सकते हैं।

मुलायम सिंह यादव की दूसरी पुण्यतिथि आज, मुख्यमंत्री योगी ने दी श्रद्धांजलि

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के संस्थापक मुलायम सिंह यादव की आज दूसरी पुण्यतिथि है। प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने मुलायम सिंह यादव को याद करते हुए विनम्र श्रद्धांजलि प्रेषित की है। मुख्यमंत्री योगी ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर लिखा योगी पूर्व रक्षा मंत्री, उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री, ह्यपद्म विभूषणह्व मुलायम सिंह यादव की पुण्यतिथि पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि! उप मुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्या ने समाजवादी पार्टी के संस्थापक व वरिष्ठ राजनेता एवं उत्तर प्रदेश के

पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव जी की पुण्यतिथि पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि।

उपमुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने भी वरिष्ठ राजनेता एवं उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव को याद किया और पुण्यतिथि पर उन्हें विनम्र श्रद्धांजलि दी।

महिला प्रधान संघ अध्यक्ष नीलम पथिक पर बदले की कार्रवाई पर गरजे प्रधान

निष्पक्ष जांच तक गांव में मनरेगा के सभी कार्य बंद का प्रधानों का निर्णय

अखंड भारत संदेश

करछना। ग्राम प्रधान पर सरकारी धन गबन के आरोप में जिला अधिकारी द्वारा कार्रवाई के आदेश के मामले में करछना विकास खंड कार्यालय पर गरजे प्रधान, विधानसभा के चाका ब्लाक के अंतर्गत आने वाले चाका बलापुर गांव के प्रधान नीलम पथिक पर तीन सौ मीटर कच्चे काम में गबन के आरोप में बलापुर प्रधान एवं प्रधान संघ प्रदेश उपाध्यक्ष महिला मोर्चा के उपर कार्रवाई के आदेश पर गुरुवार को करछना विकास खंड कार्यालय पर प्रधान संघ अध्यक्ष अवतार किशन सिंह की अगुवाई में करछना विकास खंड के 80 ग्राम प्रधानों के द्वारा विरोध-प्रदर्शन करते हुए डीएम कार्यालय का घेराव किया जाएगा की चेतावनी दी करवाई वापस करने की मांग की जाएगी यदि जब तक जिलाधिकारी द्वारा कार्रवाई के आदेश को वापस नही लिया जाएगा तब तक प्रधान संघ किसी भी ग्राम पंचायत में कोई कार्य नहीं करेगा इस मौके पर प्रधान संघ के प्रदेश अध्यक्ष सत्येंद्र त्रिपाठी ने प्रधान कहा कि यदि बलापुर प्रधान के ऊपर की जा रही कार्रवाई को निष्पक्ष ढंग से निस्तारित नहीं किया गया तो प्रधान संघ लाम बंद होकर प्रदर्शन करेगा प्रदेश के वरिष्ठ उपाध्यक्ष सत्येंद्र त्रिपाठी ने कहा की प्रधानों के उपर दबाव बनाकर कमीशन खोरी करने के लिए ब्लाक के कर्मचारी और अधिकारियों के द्वारा प्रधानो का उत्पीड़न किया जा रहा है जिसमें सत्ता में बैठे जनप्रतिनिधि का भी हाथ है जो प्रधान को परेशान करने की नियत से ऐसा कार्य कर रहे हैं लगातार चर्चा में बने विधायक करछना पर भी आरोप लगाया गया की उनके द्वारा जिलाधिकारी को पत्र के माध्यम से नीलम पथिक के उपर कार्रवाई करवाने की मांग की गई है जो पूर्णतया गलत है

नवरात्रि पर दुर्गा पंडालों में भक्त कर रहे जगराता, वीर काजी गांव में भक्ति गीतों पर जमकर झूमे श्रोता

फूलपुर। नवरात्रि पर सजे दुर्गा पंडालों में भक्त जगराता कर जहां मां की महिमा का बखान कर रहे हैं रहे हैं। वहीं भव्य रूप से सजी मां की झांकी के सामने माथा टेककर अपनी मनोकामनाओं की पूर्ति हेतु प्रार्थना भी कर रहे हैं। इफको पुलिस चौकी क्षेत्र के वीरकाजी गांव में युवा दुर्गा पूजा समिति द्वारा मां की मनमोहक झांकी को सजाकर प्रतिदिन गीत संगीत का कार्यक्रम किया जा रहा है। बुधवार को दुर्गा पंडाल में पूजा अर्चना करने पहुंचे सपा नेता व जिला पंचायत सदस्य दीनानाथ यादव ने मां की आरती कर गांव के साथ ही क्षेत्र की खुशहाली हेतु प्रार्थना की। उन्होंने कहा की गांवों में युवाओं द्वारा ऐसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करना सराहनीय है। पंडाल में गीत संगीत के साथ ही मां के जयकारों से सारा पंडाल भक्तिमय हो गया। एक के बाद एक भक्ति गीतों पर नृत्य देख भक्त भावविभोर हो गए। जैसे-जैसे रात बीतती गई गीत-संगीत के सागर में श्रोता झूमते रहे। कड़े धाम माई के बसेरा , मैया सब जानती हैं, हम माई के दीवाने , करके शेर पे सवारी, मैया हो घर आ जयतु ,तेरे दर पर ओह मेरी मैया तेरे दीवाने आए हैं के साथ ही अन्य भक्ति गीतों पर हर कोई झूम उठा। युवा दुर्गा पूजा समिति के आयोजक मंडल से मोहन सिंह, ज्ञान सिंह चौहान व महेन्द्र प्रताप सिंह ने उपस्थित अतिथियों के साथ ही भक्तों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए धन्यवाद ज्ञापित किया। मौके पर राकेश कुमार, अशोक गौतम, सोनू, सुनील सिंह, अंकू सिंह, दारा सिंह, रामसिंह, राम उजागिर, रतन सिंह, बलवन्त सिंह, उमाकांत, विजय, रंजीत, नागेन्द, सतीश, रतन, अनुराग, श्यामाचरण सिंह, ताराचंद सिंह सहित सैकड़ों की संख्या में भक्त मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

जिलाध्यक्ष संजय गौतम ने उद्योगपति रतन टाटा के निधन पर प्रकट किया दुःख

मेजा। भाजपा समर्थित रिपब्लिकन पार्टी आफ इंडिया के प्रयागराज जिलाध्यक्ष संजय गौतम ने भारत के प्रख्यात उद्योगपति पद्म विभूषण रतन टाटा जी के निधन को बेहद दुःखद बताते हुए कहा कि उद्योगपति श्री टाटा भारतीय उद्योग जगत के महानायक थे। देश एवं विदेश में उनकी ख्याति रही है। उनका आकस्मिक इस लोक से जाना उद्योग जगत से जुड़े लोगों को बड़ा झटका है। साथ ही साथ उद्योग जगत के लिए अपूर्णीय क्षति है। श्री गौतम ने आगे कहा रतन टाटा का सम्पूर्ण जीवन देश के औद्योगिक और सामाजिक विकास को समर्पित था। वे महान भारत देश के रत्न थे। प्रभु श्रीराम से प्रार्थना है कि दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों में स्थान तथा उनके शोकाकुल परिजनों और प्रशंसकों को यह दुःख सहने की शक्ति प्रदान करें।

श्री रतन टाटा के निधन से उद्योग जगत की हुई अपूरणीय क्षति : भाजपा नेता रामकृष्ण त्रिपाठी

मेजा। भाजपा नेता एवं समाजसेवी पंडित रामकृष्ण त्रिपाठी ने भारत के प्रख्यात उद्योगपति पद्म विभूषण रतन टाटा जी के निधन को अत्यंत दुःखद बताते हुए शोक प्रकट किया है। उन्होंने कहा कि उद्योगपति श्री टाटा भारतीय उद्योग जगत के महानायक थे। उनका इस लोक से जाना उद्योग जगत के लिए अपूर्णीय क्षति है। श्री त्रिपाठी ने आगे कहा उनका सम्पूर्ण जीवन देश के औद्योगिक और सामाजिक विकास को समर्पित था। वे सच्चे अर्थों में देश के रत्न थे। प्रभु श्रीराम से प्रार्थना है कि दिवंगत पुण्यात्मा को अपने श्री चरणों में स्थान तथा उनके शोकाकुल परिजनों और प्रशंसकों को यह दुःख सहने की शक्ति प्रदान करें।

एसआरजी की मौजूदगी में शिक्षक अभिभावक बैठक संपन्न

सैदाबाद। प्राथमिक विद्यालय मना का पूरा में शिक्षक अभिभावक बैठक कार्यक्रम प्रधानाध्यापक इंदेश कुमार तिवारी द्वारा आयोजित किया गया। सर्वप्रथम सत्र परीक्षा की कॉपी को संबंधित कक्षा अध्यापक द्वारा अभिभावकों को दिखाई गई तथा बच्चों की शैक्षणिक प्रगति के बारे में व्यक्तिगत चर्चा की गई उसके पश्चात बैठक का आयोजन किया गया स्टेट रिसोर्स पर्सन प्रयागराज श्रीमती वंदना श्रीवास्तव प्राथमिक विद्यालय मना का पूरा में शिक्षक अभिभावक बैठक में उपस्थित रहीं। सर्वप्रथम मां सरस्वती की प्रतिमा पर एसआरजी श्रीमती वंदना श्रीवास्तव ,एसएमसी अध्यक्ष प्रेमनाथ भारतीय द्वारा माल्यार्पण कर कार्यक्रम की शुरूआत की गई । वंदना श्रीवास्तव द्वारा अभिभावकों को जागरूक करते हुए दीक्षा एप,रीड अलांग एप एवं मिशन प्रेरणा की सभी योजना के तहत बालिकाओं को जागरूक करने के लिए प्रेरित किया। प्रधानाध्यापक इंदेश कुमार तिवारी ने बच्चों के नामांकन ,उपस्थिति एवं ठहराव पर अभिभावकों को शिक्षा के महत्व के बारे में बताते हुए बच्चों को अनिवार्य रूप से प्रतिदिन विद्यालय में भेजने के लिए प्रेरित किया। इसके साथ ही डीबीटी द्वारा भेजे जा रहे ?1200 में यूनिफॉर्म, स्वेटर, जूता, मौजा, बैग खरीदने के लिए बताया विद्यालय प्रबंध समिति के स्वरूप, गठन ,कर्तव्य एवं दायित्व पर भी चर्चा किया गया। ऑपरेशन कायाकल्प के अंतर्गत कराए गए कार्यों के बारे में भी अभिभावकों को बताया गया । समर्थ अप, बच्चों एवं विद्यालय की सफाई की व्यवस्था पर भी चर्चा हुई।अपार, रजिस्ट्रेशन हेतु अभिभावकों से सहमति पत्र प्राप्त करने पर चर्चा हुई। तत पश्चात प्रत्येक कक्षा के 100% उपस्थित वाले बच्चों एवं पढ़ने में सबसे तेज बच्चों को बैच लगाकर सम्मानित किया गया। बैठक में विद्यालय प्रबंध समिति के अध्यक्ष प्रेमनाथ भारतीय, शिक्षक साधना सिंह, निधि श्रीवास्तव ,पूनम शुक्ला, सरिता मिश्रा, अश्वनी त्रिपाठी ,अंकिता यादव, सोनी देवी ,मीनाक्षी त्रिपाठी, शालू जायसवाल आदि अभिभावक गण उपस्थित रहे।

सातवें दिन भक्तों को दिए कालरात्रि माता के रुप में दर्शन, झांकिया निकाली

मांडा। शारदीय नवरात्र के सात वें दिन क्षेत्र में स्थापित किए गए दुर्गा पूजा पंडालों में माता रानी ने भक्तों को कालरात्रि माता के रुप में दर्शन दिए। विधि विधान से पूजी गई माता के दर्शन के लिए भक्तों की काफी भीड़ जुटी रही। मांडा काली मां चौराहे पर स्थापित दुर्गा जी के अलावा क्षेत्र में विभिन्न जगहों पर देवी की प्रतिमा स्थापित कर पूजा अर्चना कर झांकिया निकाली गई ' पूजा पंडाल में बुधवार को भजन कीर्तन में महिलाओं ने बढ़ चढ़कर भाग लिया। जयकारे के साथ पूजा पुरा मांडा क्षेत्र के भरथीपुर गांव निवासी मांडा पत्रकार हिन्दी दैनिक समाचार के कार्यालय पर माँ दुर्गा की प्रतिमा स्थापित कर माता रानी के दर्शन के लिए उमड़े भक्तगण। वही पुजारी कन्हैया लाल जी ने माताराने से प्रार्थना कर सभी के लिए आशीर्वाद माँगा तथा संचालन मनीष कुमार उर्फ संजय ने अद्वितीय सिंह, दुर्गा, रेखा को देवी का स्वरूप तैयार कर झांकिया निकाली गई ' माँ दुर्गा जी के कार्यक्रम में लक्ष्मिन सोनकर उर्फ पुल्लू, माता प्रसाद लाल, प्रदीप कुमार, प्रवीण कुमार, चन्द्र भान, दिलीप सोनकर, आशीष कुमार, पंडा बिन्द, बबलू, शालू सोनकर, विनोद कुमार, भोला सोनकर,प्रेम कुमार, ओम प्रकाश, मंजू देवी,निर्मला देवी,ज्योति सोनकर, प्रेमलता,चम्पा देवी, पप्पी सोनकर, नेहा, वन्दना, अर्चना, आदि भक्तो ने सहयोग करते रहे हैं ' इसी क्रम में क्षेत्र के मांडवी देवी धाम, मेढुली मैया मन्दिर में दर्शन के लिए श्रद्धालुओं का आवा जाहि लगा रहा। और आरती के दौरान स्थानीय पुलिस मुस्तैद रहती हैं ।वहीं खवासतारा, सुरवादलापुर, भारतगंज, मांडा रोड, चिलबिला आदि प्रमुख जगहों पर स्थापित की गई दुर्गा पूजा पंडाल में भक्तों का तांता लगा रहता है।

माँ कालरात्रि की पूजा के दिन देवी गीत पर झूमे भक्तगण

मांडा ' इलाकाई क्षेत्र के मांडा थाना अन्तर्गत भरथीपुर गांव मे मांडा पत्रकार हिन्दी दैनिक समाचार पत्र के कार्यालय पर माँ दुर्गा के सात वें रूप माँ कालरात्रि की पूजा अर्चना मे शामिल होकर प्रेम कुमार ने अपने गायक टीम के साथ माँ दुर्गा जी का गीत प्रारम्भ किया वही गीत गाते ही श्रोता झूम उठे और जय जय कारो से पंडाल गुंजायमान ही गया

जन कल्याण दुर्गा पंडाल भोगीपुर में मां कालरात्रि का पूजन अर्चन

जंघई। जन कल्याण दुर्गा पूजा समिति पंडाल भोगीपुर में नवरात्रि के सातवें दिन गुरुवार को मां कालरात्रि स्वरुप का पूजन अर्चन किया गया। सातवां दिन मां कालरात्रि की पूजा-अर्चना के लिए समर्पित है यह मां दुर्गा का रौद्ध रूप भी है जिसका वर्ण काला है इसलिए इन्हें मां काली या कालिका के नाम से भी जाना जाता है। माता का यह रूप अत्यंत भयंकर है, परंतु भक्तों के लिए अत्यंत शुभ फलदायी है। माना जाता है कि मां काली की पूजा करने से व्यक्ति का सभी प्रकार का भय खत्म होता है। मां कालरात्रि की पूजा मध्य रात्रि में करने का विधान है साथ ही यह भी माना गया है कि मां काली की पूजा से अकाल मृत्यु के भय से मुक्ति मिलती है। क्योंकि मां कालरात्रि दुष्टों का विनाश करने वाली हैं इसलिए हिंदू धर्म में उन्हें वीरता और साहस का प्रतीक माना जाता है। पूजन अर्चन आरती में मुख्य पुजारी अशोक तिवारी, प्रदीप तिवारी, पंडित उमेश शुक्ला, प्रत्युश तिवारी, प्रवीण तिवारी, अभिषेक तिवारी, मीडिया प्रभारी प्रज्वल तिवारी, आशीष तिवारी, रंजीत तिवारी, गोलू शर्मा, तूफानी गुप्ता, चंदू विश्वकर्मा, ऋषभ, शुलभ, धीरज, शिवम, सुमित, रोहित ब्राह्मण सहित तमाम लोग मौजूद रहे।

मझियारी तरहार मे दुर्गा पूजा पंडाल में जुट रही भक्तों की भीड़

लालापुर। नव युवक माँ दुर्गा पूजा समिति मझियारी तरहार की ओर से शारदीय नवरात्र में चल रहे मझियारी गांव स्थित बरगद वाली देवी मां के धाम में पूजा पाठ करने के लिए पुरुषो, महिलाओं एवं बच्चो की प्रति दिन भीड़ जुटी रहती है। भक्तो द्वारा मां आदिशक्ति स्वरूपा दुर्गा माता का विधि- विधान से पूजा अर्चन किया जा रहा है। वही माता रानी को चुनरी नारियल फल फूल मिष्ठान धूप दीप नैवेद्य चढ़ाकर विधि विधान से पूजा अर्चना किया जा रहा है। नवरात्र के सप्तम दिवस पर समिति के लोगों सहित अन्य भक्त लोगों की ओर से माता रानी के दरबार मे कन्या पूजन एवं कन्या भोजन कराया गया। कन्याओ को उपहार देकर विदा किया गया। संध्या आरती से पहले माता रानी का का भव्य श्रृंगार किया गया। मां आदिशक्ति बरगद वाली देवी के धाम को भव्य विद्युत रोशनियों से सजाया गया, जो आकर्षण का केंद्र बना हुआ है। कार्यक्रम मे माँ आदिशक्ति के पुजारी विनोद पंडित, वेदप्रकाश मलाइहा, समाजसेवी अंकुश पाण्डेय अंश, तोता दुबे,कृष्णकुमार दुबे, मैना दुबे, शिवम पाण्डेय बीडीसी मझियारी - घूरी,राजन सिंह, धीरज सिंह,राइटर विपिन पाण्डेय, नितेश सिंह,गौरव सिंह,श्याम लाल,अनिल धुरिया, अंकित साहू,आदि भक्त लोग शामिल रहे। वही रात्रि में कलाकारों की ओर से भजन संध्या की प्रस्तुतियां हुई और महिलाओं की ओर से भक्ति गीतों के गायन भी हुए।

थाना में विजय दशमी और दुर्गा पूजा आयोजकों की हुई बैठक

मऊआइमा। दुर्गा पूजा और विजय दशमी पर्व को लेकर मऊआइमा थाना परिसर में गुरूवार को मेला आयोजकों की पीस कमेटी बैठक की गयी ।जिसमें मेला आयोजकों को होने वाली समस्याओं के बारे में अवगत कराया गया। बैठक में कहा गया है मेला आपसी सौहार्द पूर्वक मनाया जाए तथा कोई नई परम्परा न शुरू की जाए। जैसे हमेशा से होता रहा है वैसे ही पर्व को मनाए। कोई समस्या है तो वह तुरंत थाने में सूचना दें ।किसी को माध्यम बनाकर कर थाना में न आएं । इंस्पेक्टर मऊआइमा वीरेंद्र कुमार मिश्रा ने बताया कि मऊआइमा क्षेत्र में कुल 76 स्थानों पर दुर्गा प्रतिमाएं स्थापित हैं ।जिनका विसर्जन शादरा सहायक नहर, तालाबों, श्रंगवेरपुर आदि स्थानों पर होता है। पीस कमेटी में मुदित खत्री, नीरज कुमार पाल, दयाराम मौर्या, अजय पासी, संतोष कुमार यादव, महेंद्र कुमार, हबीबुर्रहमान, ललन, मेराज, मंजय पटेल, हरिकेश कुमार, सचिन साहू आदि बडी संख्या में लोग मौजूद रहे।

बाढ़ से निजात के लिए कठौली समहन मार्ग पर बनी पुलिया का होगा जीणोर्धार : हरिशंकर शर्मा

मेजा। पूर्व राज्य सभा सांसद कुंवर रेवती रमण सिंह के अथक प्रयास से बाढ़ से राहत पाने के लिए कठौली - समहन संपर्क मार्ग के बीच स्थित पुलिया का जीर्णोद्धार के साथ साथ देवी चौरा से शिव मंदिर तक शीशी रोड का कार्य शीघ्र ही प्रारंभ किया जाएगा। उक्त बातें वरिष्ठ समाजसेवी तथा ग्राम पंचायत कठौली के प्रधान प्रतिनिधि हरिशंकर शर्मा पप्पू भईया जी ने एक आडियो जारी कर ग्रामीणों को खुश खबरी देते हुए व्यक्त किया। उन्होंने नवरात्रि पर्व के महेनजर कठौली गांव के लोगों को खुशखबरी देते हुए आडियो में कहा कि कठौली गांव से सटा टौंस नदी के किनारे बेहद सुंदर तथा बाग बगीचों से युक्त स्वयं में खूबसूरत हरियाली समेटे किसी पर्यटक स्थल की भांति दिखने वाले कनवा नाम से सुप्रसिद्ध जंगल जहां ग्रामीण सुबह शाम प्रायः घूमने जाया करते हैं के बगल से कठौली और समहन गांव को जोड़ने वाले संपर्क मार्ग के बीच बनी पुलिया अत्यधिक नीचे होने के कारण प्रत्येक वर्ष टोंस नदी में बाढ़ आने के कारण दोनों गांवों का संपर्क जहां टूट जाता था वहीं लोग बाढ़ के चपेट में भी आ जाते थे। श्री शर्मा ने आगे कहा कि बाढ़ की इस विकट समस्या के निदान के

बुधवार को ट्रेन हादसे में जान गवाने वाली महिला नौरंगी देवी की मौत पर समाजसेवी पप्पू भईया जी ने जताया दुःख,रेल मंडल प्रबंधक को गेट नंबर 26 सी के बाबत स्वतः संज्ञान लेने और रास्ता देने का किया अनुरोध

लिए पूर्व सांसद कुंवर रेवती रमण सिंह के संज्ञान किया जिस त्वरित एक्शन लेते हुए कुंवर साहब ने अधिकारियों से वार्ता कर उक्त पुलिया के जीर्णोर्धार हेतु बजट स्वीकृत करा दिए हैं साथ ही गांव के देवी चौरा से शिव मंदिर तक 6सौ मीटर शीशी रोड भी प्रस्तावित करा दिए हैं। प्रधान प्रतिनिधि पप्पू भैया ने बताया कि शीघ्र ही उपरोक्त दोनों प्रोजेक्टों पर काम शुरू करा दिया जाएगा। और आने वाले समय में लोगों को बाढ़ की समस्या से निजात मिल जायेगा। इतना ही नहीं बीते बुधवार को तीन हादसे में जान गंवाने वाली महिला नौरंगी देवी पत्नी गुरु प्रसाद की मौत पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए उन्होंने यह भी कहा कि ग्रामीणों के काफी विरोध प्रदर्शन के बाद भी रेलवे विभाग के अधिकारियों ने कठौली के गेट नंबर 26 सी/ 3ई को विना कोई रास्ता दिए ही पूरी तरह से दीवाल बनाकर बंद कर दिया है जिसके कारण जान जोखिम में डाल कर मजबूरी में रेलवे लाइन पार कर आ जा रहे हैं और आए दिन ट्रेन हादसे में अपनी जान भी गंवा रहे हैं लेकिन रेल प्रशासन अपनी मनमानी एवं अड़ियल रवैए पर अड़ा है। उन्होंने प्रयागराज के रेल मंडल प्रबंधक को चेतावनी देते हुए कहा है कि कठौली स्थित गेट नंबर 26 सी के रास्ते के प्रकरण को स्वतः संज्ञान लेकर फ्लाई ओवर अथवा अंडर पास पुलिया का निर्माण कराकर विकल्प के तौर पर लोगों को आने जाने का रास्ता मुहैया कराएं अन्यथा आगे कोई ट्रेन हादसे में गांव के लोगों की जान गई तो पूरा गांव सड़क पर उतरकर प्रदर्शन करने को बाध्य होगा। साथ ही साथ विभाग को पार्टी बनाते हुए उच्च न्यायालय की शरण में जाने को विवश हो जायेंगे।

सरायममरेज पुलिस द्वारा पिलखिनी दुर्गा पंडाल में महिलाओं को किया गया जागरूक

जंघई। प्रदेश सरकार द्वारा बालिकाओं एवं महिलाओं की सुरक्षा सम्मान एवं स्वावलंबन हेतु शारदीय नवरात्रि के पर्व पर मिशन शक्ति फेस-5 के अनुपालन में थाना प्रभारी सरायममरेज योगेश प्रताप सिंह के निर्देशन में 90 दिवस के कार्यक्रम के क्रम में प्रथम 10 दिवस के चलाए गए अभियान गरुण के तहत एंटी रोमियो टीम/मिशन शक्ति की महिला पुलिस अधिकारियों उ0नि0 प्रिया त्रिपाठी, उ0नि0 आराधना सिंह तथा चौकी प्रभारी जंघई-उ0नि0 संजय मौर्या, उ0नि0 सौमित्र सिंह, उ0नि0 सौरभ यादव के द्वारा भ्रमण के दौरान थाना क्षेत्र के ग्राम पिलखिनी के दुर्गा पूजा पंडाल के माध्यम से बालिकाओं/महिलाओं को उच्च अधिकारी गणों द्वारा दिए गए आदेश निर्देश के बारे में बताया गया तथा महिला सुरक्षा, महिला सशक्तिकरण तथा केंद्र सरकार व राज्य सरकार द्वारा संचालित विभिन्न योजनाएं जैसे सुकन्या समृद्धि योजना, वृद्धा पेंशन योजना, विधवा पेंशन योजना, उज्जवला योजना, कौशल विकास योजना, सामूहिक विवाह योजना, चिकित्सा संबंधित आयुष्मान योजना एवं साइबर क्राइम, आईटी एक्ट के अपराध आदि के साथ साथ विभिन्न हेल्पलाइन नम्बर- वूमेन पॉवर लाइन 1090, यूपी-112, चाइल्ड हेल्पलाइन-1098, मुख्यमंत्री हेल्पलाइन-1076 साइबर हेल्पलाइन नंबर- 1930 आदि के बारे में के विस्तार पूर्वक जानकारी दी गई तथा पंपलेट वितरित किए गए।

जगत जननी दुर्गा माता का स्वरूप होती हैं कन्याएंः लाला शुक्ला

लालापुर। माँ शिवकुमारी शुक्ला इण्टर कालेज भटपुरा लालापुर में शारदीय नवरात्र के पावन पर्व पर गुरु मां शारदा की प्रेरणा से कन्या पूजन महोत्सव के रूप में बड़े धूमधाम से मनाया गया। साथ ही क्षेत्रवासियों के कल्याण हेतु कन्या भोज का भी आयोजन किया गया। कन्या पूजन कार्यक्रम में विद्यालय के प्रबन्धक लाला शुक्ला द्वारा विद्यालय में अध्ययनरत मातृस्वरूपा सभी कन्याओं का पैर धोकर टीका लगाकर धूप दीप से आरती करके सभी को भोग प्रसाद ग्रहण कराया। तत्पश्चात माता स्वरूपा सभी कन्याओं के ऊपर पुष्प वर्षा कर यथाशक्ति दक्षिणा भेंट कर सभी माता रुपी कन्याओं का आशीर्वाद प्राप्त कर विदा किया गया। विद्यालय के सभी बालकों को एवं राहगीरों को माता का भोग प्रसाद वितरण किया गया। कार्यक्रम में थानाध्यक्ष अजय कुमार मिश्रा व विद्यालय के प्रबन्धक लाला शुक्ला (एडवोकेट), देवेश कुमार मिश्रा, शिवानन्द शुक्ला एडवोकेट,नागेश शुक्ला प्रधानाचार्य, उप प्रधानाचार्य सर्वेश चतुर्वेदी, विनय त्रिपाठी , चन्द्रशेखर यादव , सूर्यकान्त शुक्ला,अमितेन्द्र शुक्ला , सुग्गन लाल द्विवेदी, मनोज कुमार,विनोद कुमार पाठक , शौनक पाण्डेय, राममोहन यादव, प्रशांत त्रिपाठी , नीरज शुक्ला, प्रमोद वर्मा,अतुल पान्डेय, रोहित सिंह आदि लोग मुख्य रूप से उपस्थित रहे। उपरोक्त कार्यक्रम को सफल बनाने में माता दक्खिनी के सेवक अरुण पाण्डेय ,दुर्गेश शुक्ला , सुभाष चन्द्र उपाध्याय , राजा शुक्ला, विद्यालय के संरक्षक हरिकान्त शुक्ला एवं जीतू समेत माता शारदा के अनन्य सेवकों का विशेष योगदान रहा। जिसके लिए इन सभी महानुभावों का विद्यालय के प्रबन्धक एडवोकेट लाला शुक्ला के द्वारा हार्दिक आभार प्रकट किया गया।

धनुष भंग होते ही जय श्रीराम उद्घोष, सीता ने पहनाई राम को जयमाला

सहसों। आदर्श रामलीला कमेटी सहसों के द्वारा मयार्दा पुरुषोत्तम भगवान राम की लीला का मंचन सुंदर अनुभवी पात्रों द्वारा किया जा रहा है। रामलीला मंचन जनक बाजार, फुलवारी लीला एवं धनुष यज्ञ की लीला का मंचन देखने के लिए क्षेत्र के लोगों की भारी भीड़ जुट गई। मिथिला नरेश महाराज जनक के द्वारा संकल्पित यज्ञशाला में देश देश के शूरवीर राजा धनुष का भंजन करने के लिए जुटे थे तो वहीं रावण एवं बाणासुर के बीच हुए संवाद पर दर्शक रोमांचित हो उठे। स्वयंवर में आए राजाओं के बहुत प्रयास करने के बाद भी शिव धनुष टूटना तो दूर हील तक नहीं पाया। जिस पर चिंताग्रस्त, निरास महाराज जनक ने कहा कि हे देश देश के राजागण हम किसे कहें बलशाली हैं मुझको तो यह विश्वास हुआ कि पृथ्वी वीरों से खाली है। इतना सुनते ही वीर लक्ष्मण क्रोधित होकर अपनी बातों से महाराज जनक को आश्चर्यचकित करते हिला दिया। भगवान राम के कहने पर लक्ष्मण शांत हुए, गुरु विश्वामित्र के आदेश पर प्रभु श्री राम अपने इष्ट देव, गुरुजनों एवं श्रेष्ठ जनों का मन ही मन प्रणाम कर आशीर्वाद लेकर भगवान शिव का पिनाक धनुष भंग कर दिया। धनुष भंग होते ही उपस्थित दर्शकों ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ जय श्री राम का उद्घोष करने लगे। तत्पश्चात स्वयंवर में माता सीता ने प्रभु श्री राम के गले में जयमाल डालकर उनका वरण किया। इस बीच मयार्दा पुरुषोत्तम राम एवं जगत जननी सीता के जयकारों से क्षेत्र गुंजायमान हो उठा। इस अवसर पर कमेटी के अध्यक्ष अजय केसरवानी, प्रबंधक अनुराग सिंह अन्नू , कोषाध्यक्ष शिवबाबू केसरवानी, श्याम बाबू मोदनवाल, शशांक धर द्विवेदी, मनोज कुमार तिवारी, आलोक धर द्विवेदी, गुड्डू सिंह, आलोक सिंह, जयेश केसरवानी, पिंटू केसरवानी, राहुल सिंह, विनीत शुक्ला, मनीष सिंह, सोहनलाल केसरवानी सहित भारी संख्या में दर्शक मंचन का आनंद लेते हुए मौजूद रहे।

राम को मिला 14 वर्ष का वनवास, पूरी अयोध्या नगरी में शोक छा गया

कौंधियारा। जारी क्षेत्र के गड़ैया कला में चल रही 13 दिवसीय रामलीला के सातवें दिन भगवान राम के वनवास का मंचन किया गया। वन गमन के समय पुत्र वियोग महाराज दशरथ का विलाप देख कर बैठे दर्शकों की आंखे भर आई जारी बाजार में आयोजित हो रही प्रेम प्रवर्तक आदर्श राम लीला कमेटी के राम लीला के मंचन में बुधवार की रात अयोध्या नरेश महाराज दशरथ ने विचार किया कि राम को अयोध्या का राजा बनाया जाए। उन्होंने अपने मंत्री सुमंत को बुलाकर बड़े बेटे राम को राजा बनाए जाने के लिये राज्याभिषेक की तैयारी करने का आदेश दिया। यह सूचना जैसे ही महारानी कैकेयी की दासी मंथरा को प्राप्त हुई, मंथरा ने महारानी के कान भरना शुरू कर दिया। महारानी कैकेयी मंथरा की बातों को मानकर राजा दशरथ से अपने पुराने दो वरदान मांगे। राजा दशरथ ने महारानी कैकेयी को दोनों वरदान देने का निर्णय करते हुए कहा कि हम रघुवंशी हैं, हम अपने दिए गए वचन को निभाने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। कैकेयी ने अपने पुत्र भरत को राजतिलक और कौशल्या पुत्र राम को चौदह वर्ष का वनवास मांगा। यह सूचना जैसे ही भगवान राम को मिली, भगवान राम तुरन्त वन गमन को तैयार हो गए। भगवान राम, सीता और लक्ष्मण के साथ वन गमन करने को प्रस्थान किया, वैसे ही राजा दशरथ फूट-फूट कर रोने लगे और पूरी अयोध्या नगरी में शोक छा गया। इस मौके पर आर्यन केशरवानी , अनुपम केसरवानी, सुधांशु जायसवाल ,अतुल केशरवानी , अजय केशरवानी, अनमोल , अग्रहरी ,निलेश केसरवानी , सूरज जायसवाल , दिलीप केसरवानी , सुधांशु गुप्ता, रवि केसरवानी, शिवम केसरवानी, सोहित जायसवाल, आशीष जायसवाल, राज कुमार श्रीवास्तव , हरिहर प्रसाद , बिरेंद केसरवानी , दीपू जायसवाल, निखिल केसरवानी, अन्य लोग उपस्थित रहे।

एसपी सिंह अध्यक्ष व सरोज सिंह निर्विरोध बने मंत्री

बारा। ब्लॉक संसाधन केंद्र जसरा में बुधवार को उत्तर प्रदेशीय शिक्षक संघ की जिला इकाई के मार्गदर्शन में ब्लाक इकाई का गठन किया गया। बीआरसी में सर्वसम्मति से डा. एसपी सिंह को अध्यक्ष और सरोज सिंह पटेल को मंत्री चुना गया। बीआरसी जसरा में जिला इकाई द्वारा घोषित चार सदस्यीय समिति ने निर्वाचन प्रक्रिया संपन्न कराई। सुबह दस बजे से ग्यारह बजे तक प्रत्येक पदों के लिए नामांकन आमंत्रित किए गए। समय रहते प्रत्येक पदों के लिए अन्य कोई नामांकन प्राप्त न होने की दशा में सभी पदों पर निर्विरोध निर्वाचन घोषित किया गया। जिलाध्यक्ष देवेंद्र श्रीवास्तव व मंत्री शिवबहादुर सिंह में निर्वाचित 25 पदाधिकारियों को शपथ दिलाई। जिलाध्यक्ष ने कहा कि ओपीएस का संघर्ष हमारी प्राथमिकता है। नवनियुक्त ब्लाक अध्यक्ष एसपी सिंह ने कहा कि शिक्षकों के हित व मान-सम्मान सदैव सर्वोपरि होगा। इस मौके पर शिक्षामित्र संघ जिलाध्यक्ष वसीम अहमद, राम विजय विश्वकर्मा, तन्मयानंद पांडेय, सलाहुद्दीन, सुलेखा सिंह, रामकुमार साहू, सुधीर श्रीवास्तव, दिनेश सिंह, शिवभान सिंह, बृजेश पाल, श्यामा यादव, सरोज सिंह यादव, दीपिका गुप्ता, पूजा अग्रवाल, त्रिभुवन नाथ, सीएल सोनकर, राकेश सिंह, सुमित, शाहिद मौजूद रहे।

विद्यालय प्रांगण में बच्चों ने रामलीला का अभिनय कर दिया बुराई पर अच्छाई की जीत का संदेश

सहसों। छत्रपति शिवाजी ऋषि कुल विद्यालय सहसों के प्रांगण में गुरुवार को नवरात्रि पर्व के चलते रामलीला का मंचन किया गया। पहली कक्षा से लेकर पांचवी कक्षा तक के बच्चों ने भिन्न-भिन्न पात्रों जैसे राम, लक्ष्मण, सीता माता, दुर्गा, हनुमान, रावण व वानर आदि का अभिनय कर मानवीय मूल्यों को उजागर किया। इन बच्चों ने अभिनय के माध्यम से मयार्दा पुरुषोत्तम श्री राम जैसा आज्ञाकारी पुत्र, लक्ष्मण जैसा त्याग, सीता जैसा प्रेम और हनुमान जैसा आज्ञाकारी कर्तव्य निष्ठ और मां दुर्गा जैसी शक्ति होने का संदेश दिया। राम के जीवन विचार से ओतप्रोत बच्चों ने अभिमानी रावण का पुतला दहन किया। इस अवसर पर विद्यालय की प्रधानाचार्या अनुराधा वर्मा, समाज सेवी चंद्रप्रकाश केसरवानी, कला टीचर मिताली त्यागी, कविता कुशवाहा, संजू दुबे, रजनी शेखर, उमा देवी, विजय मौर्य, माला देवी सहित विद्यालय के सभी कर्मचारी व नन्हे मुन्ने छात्र छात्राएं मौजूद रहे।

किन्नर अखाड़े में दो फाड़, महामंडलेश्वर भवानीनंद गिरि ने दिया इस्तीफा, बनाया किन्नर धाम

प्रयागराज। जूना अखाड़े से संबद्ध किन्नर अखाड़ा दो फाड़ हो गया है। अंदरूनी कलह की वजह से महामंडलेश्वर भवानीनंद गिरि ने सभी पदों से इस्तीफा दे दिया है। उन्होंने किन्नर अखाड़े अलग किन्नर धाम बना लिया है ।उन्होंने किन्नर अखाड़े के नाम पर भूमि सुविधाएं लेने और शिविर लगाने से भी इन्कार कर दिया है। माघ मेले के दौरान शिविर में आग लगने को लेकर छिड़े विवाद की लपटें किन्नर अखाड़े में टूट-फूट का सबब बन गई हैं ।किन्नर अखाड़े के आचार्य महामंडलेश्वर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी ने विवाद सुलझाने की कोशिश की लेकिन, मान-मनौव्वल बेकार चली गई। अखाड़े में घमासान तब तेज हो गया जब लक्ष्मीनारायण ने भवानीनंद गिरि के निष्कासन की घोषणा कर दी। निष्कासन के बाद भवानीनंद गिरि ने इस्तीफा दे दिया ।इससे नाराज होकर भवानीनंद ने अलग राह बना ली। हरिद्वार में भवानीनंद गिरि उर्फ भवानी मां ने किन्नर अखाड़े से अलग किन्नर धाम बना लिया है। वह वहीं से ही सनातन धर्म के प्रचार के लिए काम कर रही हैं। उन्होंने किन्नर घाट का भी निर्माण कराया है। इसके अलावा किन्नरों के हितों की रक्षा के लिए अलग आश्रम भी बना लिया है।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में किसान यूनियन के पदाधिकारियो, कृषि विभाग व इफको के अधिकारियों के साथ बैठक संपन्न

जिलाधिकारी ने खाद, बीज व उर्वरक की पर्याप्त मात्रा में उपलब्धता बनाए रखने के लिए निर्देश

अखंड भारत संदेश

प्रयागराज। जिलाधिकारी रविन्द्र कुमार माँदड की अध्यक्षता में गुरुवार को कैंप कार्यालय में किसान यूनियन के पदाधिकारियो , कृषि विभाग के अधिकारिओ व इफ्को के एरिया मैनेजर के साथ आलू व अन्य फसलों की बुआई हेतु खाद, बीज व उर्वरक की पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध कराये जाने हेतु बैठक आयोजित की गयी। बैठक में जिलाधिकारी ने किसान यूनियन के पदाधिकारिओ से कृषि व किसानो की समस्याओ की जानकारी लेते हुए उनके निराकरण हेतु सम्बंधित अधिकारिओ को आवश्यक दिशा निर्देश दिए। उन्होंने आलू की फसल के बुआई का समय होने के दृष्टिगत पर्याप्त मात्रा में डीएपी खाद की आपूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश संबंधित को दिए हैं।जिलाधिकारी ने खाद की निर्धारित मूल्य से अधिक दाम पर बिक्री करने वालों, जमाखोरी व कालाबाजारी करने वाले लोंगो को चिन्हित कर उनके विरुद्ध कड़े कदम उठाने एवं कठोर कार्यवाई करने के लिए निर्देश दिए है। उन्होंने जिला कृषि अधिकारी से जनपद में इस समय खाद की कितनी मात्रा की आवश्यकता हैं तथा उसके सापेक्ष कितनी मात्रा की उपलब्धता है की जानकारी ली जिस पर उन्होंने बताया कि पर्याप्त मात्रा में डीएपी उपलब्ध है तथा किसानों को आलू की बुआई में खाद की कमी नहीं होंगी। डीएम ने प्रति दिन पीसीएफ गोडाउन से कितनी मात्रा में आपूर्ति की गयी एवं कितनी मात्रा में वितरण किया गया तथा अगले दिन वितरण हेतु कितनी मात्रा में उपलब्ध रहेगी का रिकॉर्ड बनाते हुए क्रय समितियों से पैसा इफको को दिलाकर समय से पर्याप्त मात्रा में आपूर्ति सुनिश्चित कराने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने गंगापार क्षेत्र में अधिक आलू बुआई होने के दृष्टिगत इस क्षेत्र में एक नवंबर तक डीएपी आपूर्ति में प्राथमिकता दिए जाने के लिए कहा है। जिलाधिकारी ने किसानों की समस्याओ के निराकरण व खाद आपूर्ति सुनिश्चित करने हेतु एक कण्ट्रोल रूम बनाये जाने के लिए कहा है। जिलाधिकारी ने जनपद में लघु एवं सीमांत किसानों की संख्या लगभग 70 प्रतिशत होने के दृष्टिगत सभी किसानों को सहकारी समिति से एक बार में अधिकतम चार बोरी ही खाद दिए जाने और बड़े काश्तकारो को उसके ज्यादा हेतु प्राइवेट दुकानों से क्रय करने के लिए प्रेरित करने के लिए कहा है। इस अवसर पर किसान यूनियन से श्री पंकज प्रताप सिंह, प्रभाकर दुबे, पंकज प्रताप सिंह, अवधराज, लाल सिंह एवं इफको फील्ड मैनेजर श्री बृजेश कुमार, जिला कृषि अधिकारी के0के0 सिंह, एआर कॉपरेटिव विवेक यादव, पीसीएफ आरओ अक्षय पाण्डेय, अपर जिला कृषि अधिकारी विकास मिश्रा सहित अन्य सम्बंधित अधिकारी गण रहे।

डांडिया नृत्य में जम कर झूमी महिलाएं

अखंड भारत संदेश

झूंसी। सेंट्रल एकेडमी स्कूल द्वारा सरायइनायत परिसर में बुधवार की शाम डांडिया नृत्य का आयोजन किया गया जिसमें महिलाओं के साथ बच्चे भी झूम कर नाचे। डांडिया कार्यक्रम में स्कूल के डायरेक्टर एसके तिवारी ने माँ दुर्गा की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए कहा कि नवरात्र देवी के उपासना का पर्व है हमारे देश मे नारियों की पूजा होती है। नवरात्र में डांडिया का अपना महत्व है। डांडिया से बीमारियां दूर होती है साथ मे आस्था से भी जुड़ाव महशूस होता है। जिसके बाद महिलाओं ने जम कर डांडिया खेला। देवी गीत पर भी लोग खूब नाचे आरती के बाद कार्यक्रम का समापन हुआ। इस दौरान प्रधानाचार्य आनंद पांडेय, दीप्ती मिश्रा, शंकर देव त्रिपाठी, ऋचा त्रिपाठी सहित छात्र-छात्राएं व अभिवावक गड़ मौजूद रहे।

न्यूज झरोखा

छात्रसंघ भवन पर मुलायम सिंह यादव की पुण्य तिथि पर सपा छात्रसभा ने दी श्रद्धांजलि

प्रयागराज। इविवि छात्रसंघ भवन पर समाजवादी पार्टी के संस्थापक, पूर्व रक्षामंत्री एवं उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव की पुण्यतिथि मनाई गई। छात्र सभा के पदाधिकारियों ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। छात्र सभा के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष मुलायम सिंह यादव मुख्यमंत्री पद की शपथ लेते ही इलाहाबाद विश्वविद्यालय छात्रसंघ भवन पर आकर छात्रसंघ बहाली का आदेश दिया था।कहा कि नेताजी हमेशा हम जैसे नवजवानों के दिलों में जिंदा हैं और जिंदा रहेंगे। उनके दिखाएं दिखाएं मार्ग पर सतत चलने का काम करेंगे।गुरुवार को हुए इस कार्यक्रम में समाजवादी लोहिया वाहिनी के राष्ट्रीय महासचिव अखिलेश गुप्ता गुड्डू, गौरव गोंड, प्रियांशु विद्रोही, आशुतोष मौर्य, इष्टदेव, विकास यादव, अनूप यादव, विकास कोरी, शिवबली यादव, सुधीर क्रान्तिकारी, अभिषेक यादव, हरिओम, शैलेंद्र यादव, उज्ज्वल, अमित, विनय, आयुष, अनिल, आदर्श आदि रहे।

प्रयागराज में क्रिप्टो करेंसी के नाम पर लाखों की ठगी

प्रयागराज। प्रयागराज में क्रिप्टो करेंसी के नाम पर ठगी का मामला सामने आया है। आरोप है कि इन्वेस्टमेंट कंपनी के पास लाइसेंस नहीं था। इसके बाद उसने लालच देकर क्रिप्टो करेंसी में इन्वेस्ट कराने के नाम पर लाखों रुपए ठगे। पुलिस ने मामला दर्ज कर जांच शुरू की है। पुलिस को दी गई तहरीर में बताया गया है कि कंपनी एजेंटों रेल, हवाई यात्रा, विदेशी टूर आदि का लालच देकर ग्राहकों को फंसाती है। इस मामले में शहर के धूनमगंज थाना क्षेत्र के टीपी नगर के रहने वाले विजय प्रकाश श्रीवास्तव ने पूरा मामला खोलते हुए रिपोर्ट दर्ज कराई है। विजय प्रकाश ने पुलिस अधिकारियों को पूरा मामला बताया। तहरीर देकर कहा कि लखनऊ, वाराणसी समेत प्रदेश के कई जिलों के रहने वाले लोगों ने कंपनी बनाई और ठगी शुरू कर दी। पुलिस को दी गई तहरीर के मुताबिक, समीर केसरी निवासी लखनऊ, एमके श्रीवास्तव निवासी लखनऊ और मयंक श्रीवास्तव निवासी बनारस समेत कुछ अन्य लोग मिलकर रुबी कॉइन डिजिटल क्रिप्टो करेंसी अन्तर्राष्ट्रीय कॉइन के नाम से एक फर्जी कम्पनी व वेबसाइट बनाए हैं।

छात्रा से रेप करने वाले युवक को जेल

हनुमानगंज। सरायइनायत थाना क्षेत्र में एक छात्रा से रेप का मामला प्रकाश में आया है। छात्रा की मां की शिकायत पर पुलिस ने आरोपी युवक को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। पुलिस की माने तो छात्रा के गर्भवती होने पर युवक छात्रा का अबॉर्शन करना चाहता था तब परिजनों को जानकारी हुई। हनुमानगंज की एक किशोरी क्षेत्र के ही विद्यायल में हाईस्कूल की छात्रा है। पीड़िता की मां ने पुलिस से लिखित शिकायत करते हुए बताया कि पड़ोस का ही एक युवक लड़की के साथ छेड़खानी करता था। आरोप है कि तीन माह पूर्व वह लड़की को जबरन उठा लेगया और होटल में लेजाकर रेप किया। डर वश लड़की ने किसी को कुछ नही बताया बुधवार लड़की स्कूल गई थी आने में देर हुई तब परिजन लड़की की खोजबीन करने लगे और मामले की शिकायत पुलिस से जिसके बाद पता चला कि युवती को आरोपी ले गया है। पुलिस ने आरोपी नियाज अहमद के खिलाफ रेफ, पॉक्सो का मामला दर्ज कर गुरुवार को उसे गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। थाना प्रभारी सरायइनायत संजय कुमार गुप्ता ने बताया कि लड़की गर्भवती है आरोपी सैदाबाद पीड़िता को लेकर गर्भपात कराने गया था जहाँ डॉक्टर ने मना कर दिया।

सार्वजनिक रामलीला में लंका दहन का मंचन किया गया

नैनी। नैनी सार्वजनिक रामलीला ट्रस्ट स्वदेशी काटन मिल में चल रहा रामलीला का मंचन किया गया। जिसमें सीता जी का खोज किया गया। हनुमान जी के द्वारा लंका का दहन किया गया। फिर उसके बाद मंचन हुआ। प्रभु श्री राम चंद्र जी व्याकुल होकर वानर राज सुग्रीव के साथ जटायु के द्वारा सीता जी की खोज के लिए जंगल में निकल पड़े। वहीं हनुमान जी सीता जी की खोज करते - करते लंका पहुंच गए तो उन्हें अशोक वाटिका में हनुमान जी माता सीता दिख गई। उसी दौरान रावण ने सैनिकों को हनुमान जी को बंदी बनाकर महल में ले गए। वहीं हनुमान जी ने रावण को श्रीराम से माफी मांगने को कहा जिसपर क्रोधित रावण ने हनुमान जी की पूंछ में आग लगाने का आदेश दे दिया। सैनिकों ने हनुमान जी के पूंछ में आग लगा दिया। जिसके बाद ही हनुमान जी ने पूरी लंका में आग लगा दिए। मुख्य अतिथि में पूर्व सांसद रीता बहुगुणा जोशी, ब्लाक प्रमुख मेजा गंगा प्रसाद मिश्रा, शशांक त्रिपाठी, जितेंद्र दीक्षित, सदा शिव दीक्षित अतिथियों ने प्रभु श्रीराम की आरती उतार कर आशीर्वाद लिए। रामलीला समिति के अध्यक्ष व पार्षद राकेश जायसवाल, डायरेक्टर प्रिया मिश्रा, जूही जायसवाल, शालू चड्ढा, रुचि तिवारी, आकांक्षा जायसवाल, प्रमोद सिंह, लक्ष्मीकांत तिवारी, बबलू तिवारी, योगेश सिंह, अजय यादव, दिलीप केसरवानी, आलोक सिंह, धनंजय सिंह, बृजेश सिंह, सुरेश पटेल, संदीप द्विवेदी, आनंद शर्मा, रवीन्द्र त्रिपाठी, राजीव वर्मा, जय कृष्ण तिवारी, शिव तिवारी, रजत दूबे, विनोद यादव, समर सिंह राजा सिंह, रितेश शुक्ला, धर्मराज पटेल आदि लोग उपस्थित रहे।

दुर्गा पूजा पंडाल में शामिल हुए समाजसेवी सुधीर शर्मा

नैनी। नैनी क्षेत्र के आनन्द नगर मोड़ के पास दुर्गा पूजा पंडाल में समाजसेवी सुधीर शर्मा जिला पंचायत अध्यक्ष अरवल बिहार ने अपने मित्रों के साथ मां दुर्गा की पूजा अर्चना कर जन कल्याण का मंगा आशीर्वाद। पूजा के दौरान समाजसेवी सुधीर शर्मा ने जनकल्याण के लिए माता रानी से सभी श्रद्धालू भक्तों पर अपनी कृपा बनाए रखने का आशीर्वाद मांगा शुभ अवसर पर रामकृष्ण पांडे मुन्ना, दिलीप शुक्ला, समाजसेवी मंटू सिंह, विनय सिंह, मोनू सिंह, राजेश साहू, संजय मिश्रा, डॉ संदीप पाल, टुनटुन पांडे, पवन शर्मा भक्तगण मौजूद थे।

मानस रामलीला में हनुमान जी द्वारा लंका दहन का मंचन हुआ

नैनी। नैनी मानस रामलीला समिति द्वारा अभिमन्यु शाखा मैदाह में आदर्श रामलीला कला मन्दिर महंत छठीलाल सिंह चंदेल के कलाकारों द्वारा श्री राम, हनुमान भेंट से बाली बध, लंका दहन प्रसंग का भव्य प्रदर्शन मंच से किया गया। रामलीला मैदान में उपस्थित रामभक्तों ने बार बार कलाकारों का उत्साह वर्धन भी किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि महापौर गणेश केसरवानी, कुमार नारायण रहें। मंचन के दौरान मुख्य संरक्षक समर बहादुर सिंह, संरक्षक राकेश श्रीवास्तव, संयोजक वरिष्ठ पार्षद मयंक यादव, अध्यक्ष धीरेंद्र यादव धीरू, महामंत्री नयन कुमार कुशवाहा, उपाध्यक्ष वीरेंद्र शर्मा, राज सिंह, कोषाध्यक्ष प्रदीप तिवारी, मंत्री राजकुमार कुशवाहा, कार्यवाहक अध्यक्ष संजय जयसवाल, इंजीनियर विजय कुशवाहा, सुरेश अग्रवाल, राहुल जयसवाल, सत्य गोपाल यादव, नितिन केसरवानी, शिव शंकर दीक्षित, राजेश सिंह, नंदू भाई आजाद शंकर मिश्रा दीपु गिरि, सुशील शुक्ला, संजय श्रीवास्तव आदि रहें।

एसआरकेडी पब्लिक स्कूल में दशहरा उत्सव मनाया गया

नैनी। नैनी क्षेत्र के दांडी बाजार में एसआरकेडी पब्लिक स्कूल में दशहरा धूम धाम से मनाया गया स्कूल में पढ़ने वाली कन्याओं का चरण धुल कर तिलक वा मिष्ठान से पूजन किया गया मैनेजर द्वार तथा बच्चों को राम लक्ष्मण वा हनुमान बाना कर रावण को जलाया गया और बच्चों को दशहरा उत्सव क्यों मनाते हैं। रावण को क्यों जलाते हैं और कैसे बुराई पर हमेंशा अच्छाई की जीत होती है ये भी बच्चों को बताया गया दशहरा सेलिब्रेशन में मैनेजर अश्वनी कुमार, टीचर शिल्पा, दिव्या, प्रिया, आभा, पूर्णिमा, नाज, आशा, गुलिस्ता वगैरह सभी अभिभावक गण मौजूद थे।

सेतु बंध रामेश्वरम स्थापना लीला का सुंदर मंचन किया गया

नैनी। नैनी गुरुवार को श्री अवंतिका रामलीला में विभीषण शरणागति एवं सेतु बंध रामेश्वरम स्थापना की लीला का अत्यंत सुंदर मंचन हुआ। विभीषण भक्त है किंतु माया में फंसा हुआ है। जब रावण के माध्यम से माया की लात पड़ती है तो वह राम की शरण में पहुंच जाता है और राम उसे अपना लेते हैं। विभीषण जब तक माया की शरण में था, वह लंका का सेवक था। जैसे ही वह राम की शरण में आया, राम ने उसे लंका पति बना दिया। सिंधु की सलाह के अनुरूप सेतु बंध स्थापना से पूर्व राम सिंधु तट पर अपने इष्ट भगवान भूत भावन शंकर की स्थापना कर पूर्ण भक्ति भाव से भगवान शिव की आराधना करते हैं। भगवान शिव उन्हें लंका विजय का आशीर्वाद प्रदान करते हैं। रामलीला में प्रमुख रूप से बी बी दुबे, अवधेश पांडेय, बी बी सिह, यजुर्वेद जन्मेजय, धीरज मिश्रा, गोविंद दुबे, ओ पी मिश्रा, उदय प्रताप सिंह, राजेंद्र शुक्ला, आर के शुक्ला, अनंत झा, राधे श्याम तिवारी राकेश त्रिपाठी, अरुण त्रिपाठी आदि उपस्थित रहे।

विक्षिप्त युवक ने बड़े बाप को लाठियों से पीट दिया उपचार के दौरान मौत

मऊआइमा। दिमागी रूप से बीमार चल रहे युवक ने गुस्से में आकर अपने बड़े पिता विजय बहादुर 65 वर्ष पुत्र बुधई पर दो दिन पूर्व लाठियों से पीट कर लहुलुहान कर दिया। जिन्हें गंभीर हालत में निजि अस्पताल में भर्ती कराया गया था। जहां उपचार के दौरान गुरुवार को शाम के समय मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। मऊआइमा थाना क्षेत्र के ग्राम सिसई सिपाही निवासी विजय बहादुर 65 वर्ष पुत्र बुधई दो दिन पूर्व घर के बाहर बैठे थे। बताया गया है कि उनका भतीजा संजय कुमार पुत्र तुलसीराम जो काफी दिनों से दिमागी रूप से बीमार चल रहा है। उसने लाठी से अचानक अपने बडे पिता पर हमला बोल कर जख्मी कर दिया था।जिससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए थे। घर वाले उन्हें इलाज के लिए निजि अस्पताल में भर्ती कराया ।जहां इलाज के दौरान गुरुवार को विजय बहादुर की मौत हो गई । घटना की सूचना पर देर शाम मऊआइमा पुलिस मौके पर पहुंची और शव का पंचनामा भरकर पोस्ट मार्टम के लिए भेजा। इंस्पेक्टर मऊआइमा वीरेंद्र कुमार मिश्रा ने बताया कि इत्तेफाकिया तजकरा दर्ज किया गया है यदि कोई तहरीर आती है तो मुकदमा दर्ज कर जांच की जाएगी।

महाकुंभ के लिए रेलवे पहली बार जारी करेगा टोल फ्री नंबर, ट्रेनों व मेले से संबंधित मिलेगी जानकारी

प्रयागराज। अगले वर्ष की शुरूआत में लगने वाले महाकुंभ की तैयारियों को रेलवे ने अंतिम रूप दे दिया है। कुंभ के मौके पर उत्तर मध्य रेलवे का प्रयागराज मंडल पहली बार टोल फ्री नंबर जारी करने जा रहा है। यह नंबर 18004199139 रहेगा। एक नवंबर 2024 से यह नंबर एक्टिवेट हो जाएगा। बृहस्पतिवार को मंडल रेल प्रबंधक (डीआरएम) कार्यालय में डीआरएम हिमांशु बडोनी ने बताया कि इस टोल फ्री नंबर के माध्यम से देश के विभिन्न राज्यों के श्रद्धालुओं को महाकुंभ से जुड़ीं तमाम सुविधाएं, स्पेशल ट्रेनों की जानकारी, प्रयागराज और आसपास जनपदों के दर्शनीय स्थल आदि के बारे में जानकारी मिल जाएगी।डीआरएम ने बताया कि यह टोल फ्री नंबर 24 घंटे काम करेगा। इसके लिए एक टीम का गठन किया गया है। टोल फ्री नंबर पर हिंदी और अंग्रेजी समेत कुल 10 भाषाओं में संवाद किया जाएगा। इसके अलावा महाकुंभ को लेकर प्रयागराज जंक्शन के बाद अब प्रयागराज छिवकी पर भी मे आई हेल्प यू, काउंटर खोला जा रहा है। इसके माध्यम से यात्री प्रयागराज के होटल, अतिथि गृह, कैब की बुकिंग आदि सुविधाओं का लाभ ले सकेंगे।

महाकुंभ के पहले प्रयागराज को मिलेगा 21 पुल : डीआरएम ने बताया कि चौफटका से सूबेदारगंज रेलवे स्टेशन के ऊपर से निकलने वाला रेल ओवरब्रिज का निर्माण 15 दिसंबर तक हो जाएगा। यह पहला मौका है जब कुंभ के पहले प्रयागराज को 21 रेलवे ओवर ब्रिज, रेल अंडर ब्रिज की सौगात मिलने जा रही है। कुछ पुल इस माह तो अगले माह शुरू हो जाएंगे। महाकुंभ के दौरान प्रमुख स्नान पर्व के मौके पर यात्रियों का क्रॉस मूवमेंट न हो इसके लिए आने और जाने का रास्ता अलग-अलग रखा जा रहा है। स्नान पर्व के मौके पर सभी स्टेशनों की वाहन पार्किंग बंद रहेगी। इसके अलावा पार्सल सेवा भी स्नान पर्वों पर बंद रहेगा। प्रयागराज जंक्शन, प्रयागराज छिवकी आदि स्टेशनों पर लगे एस्केलेटर भी स्नान पर्वों पर बंद रहेंगे।

नाजरेथ अस्पताल द्वारा वर्ल्ड साइट डे पर ब्लाइंड वॉक का आयोजन

प्रयागराज। गुरुवार को नाजरेथ अस्पताल, प्रयागराज ने वर्ल्ड साइट डे के अवसर पर 'ब्लाइंड वॉक' का आयोजन कर एक अनूठी पहल की। इस कार्यक्रम का उद्देश्य लोगों को दृष्टिहीन व्यक्तियों की चुनौतियों से परिचित कराना और नेत्रदान के महत्व पर जागरूकता फैलाना था।कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण 'दृष्टिहीन बनकर चलें, एक अनोखा अनुभव पायें था, जिसमें प्रतिभागियों ने आंखों पर पट्टी बांधकर एक कतार में चलकर दृष्टिहीन होने का अनुभव किया। दिव्य ज्योति निकेतन की दृष्टिबाधित छात्राएँ कुमारी रंजना और मुस्कान ने कतारों की अगुवाई की। यह वॉक शाम 4.30 बजे हॉटस्टफ चौराहा से शुरू होकर सुभाष चौराहा पर समाप्त हुआ। प्रतिभागियों में अस्पताल के परिचारिकाएँ, डाक्टर्स, स्थानीय लोग और स्वयंसेवक शामिल थे, जिन्होंने नेत्रहीनों के जीवन की कठिनाइयों को महसूस किया और उनके प्रति संवेदनशीलता बढ़ाई।इस कार्यक्रम के दौरान नाजरेथ अस्पताल निदेशक फादर विपिन डिसोजा ने नेत्रदान के महत्व को भी उजागर किया गया, जिसमें 'नेत्र दान, पुण्य महान' का संदेश दिया गया। नाजरेथ अस्पताल व दिव्य ज्योति निकेतन, प्रयागराज तत्वधान में आयोजित इस कार्यक्रम ने स्थानीय समुदाय में विशेष आकर्षण पैदा किया। समस्त प्रतिभागियों ने नेत्रदान करने का संकल्प किया। नाजरेथ अस्पताल के निदेशक फादर इसिडोर डिसोजा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।नाजरेथ अस्पताल के इस प्रयास का उद्देश्य दृष्टिहीनता के प्रति जागरूकता फैलाना और लोगों को नेत्रदान के लिए प्रेरित करना था, ताकि अधिक से अधिक लोग नेत्रदान कर दृष्टिहीन व्यक्तियों की जिंदगी को रोशन कर सकें।कार्यक्रम में नाजरेथ अस्पताल के निदेशक फादर विपिन डिसोजा, प्रशासक फादर इसिडोर, सहायक निदेशक फादर मेल्विन, मेट्रन सिस्टर मोन्सी, डा. राजेश कुमार, सिस्टर शीबा, सिस्टर बेसी व अन्य गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया।

मंत्री नंद गोपाल गुप्ता ने मां आलोप शंकरी देवी मंदिर में आयोजित कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर किया शुभारम्भ

मंत्री जी ने नारी उत्थान एवं महिला सशक्तिकरण विषयक अभिलेख प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुए प्रदर्शनी की सराहना की

प्रयागराज। मिशन शक्ति शारदीय नवरात्रि के अवसर पर गुरूवार को नारी उत्थान एवं महिला सशक्तिकरण विषयक अभिलेख प्रदर्शनी के साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन शक्तिपीठ माँ आलोप शंकरी देवी मंदिर परिसर, अलोपीबाग प्रयागराज में क्षेत्रीय अभिलेखागार (संस्कृति विभाग), प्रयागराज की ओर से किया गया। कार्यक्रमों का शुभारंभ मन्त्री नन्द गोपाल गुप्ता नंदी जी एवं श्रीमती गीता विश्वकर्मा सदस्य महिला आयोग, उत्तर प्रदेश ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया। उन्होंने यहां लगाई गयी ह्यनारी उत्थान एवं महिला सशक्तिकरणह्व विषयक अभिलेख प्रदर्शनी का भी अवलोकन किया। प्रदर्शनी और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के आयोजन के लिए उन्होंने संस्कृति विभाग की सराहना की। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत देवी गायन सुप्रसिद्ध गायिका श्रीमती प्रियंका चौहान और मोहिनी श्रीवास्तव द्वारा कार्यक्रमों की प्रस्तुतियां दी गई। उन्होंने गणेश वंदना के साथ गायन प्रारम्भ किया तथा माँ अलोपीन झूले झूला...., मैया घर में दियना बार अइनी..., प्यारा सजा है तेरा द्वारा भवानी.....,निमिया के डाढ़ी मैया झूलेली झूलनवा....,ऐसा प्यार बहा दें मैया चरणों से लग जायूं...आदि भाव पूर्ण भजन प्रस्तुत किये। उपस्थित अतिथि और श्रद्धालु गण भजन सुनकर आनंदित हुए। सभी अतिथियों का स्वागत एवं कार्यक्रम का संयोजन राकेश कुमार वर्मा प्राविधिक सहायक द्वारा किया गया। गुलाम सरवर पाण्डुलिपि अधिकारी/प्रभारी क्षेत्रीय अभिलेखागार, प्रयागराज द्वारा उपस्थित सभी अतिथियों को धन्यवाद ज्ञापित किया गया। इस अवसर पर अनिल गुप्ता उर्फ अन्नू भैया-कमांडेंट नागरिक सुरक्षा विभाग, शशिकान्त मिश्रा, डॉ कुलभूषण पटेल, डा0 अंगद पटेल सदस्य भाजपा, उमेश चन्द्र कनोजिया, बृजमोहन, राजेन्द्र तिवारी ह्यदुकानजीह्य, हरिश्चन्द्र दुबे, अजय कुमार मौर्य, मो. शफीक, शुभम कुमार आदि सहित मंदिर में आये हुए भक्तगणों की उपस्थिति रही।

दौड़ में रिया, प्रिया और शिवम आदिवासी को दोहरी सफलता

कोरांव। कोरांव संभाग स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता में केबी सिंह उच्चतर माध्यमिक विद्यालय मानपुर के बच्चों ने बेहतरीन प्रदर्शन किया। विद्यालय की छात्रा रिया सिंह ने दोहरी सफलता अर्जित करते हुए प्रथम स्थान प्राप्त किया। प्रतियोगिता में हाईस्कूल के छात्र-छात्राओं ने पूरे जोश के साथ सहभागिता की। खेल शिक्षक गौरव सिंह ने बताया कि प्रतियोगिता में बच्चों ने पूरे जोश के साथ प्रदर्शन किया। 100 मीटर और 200 मीटर दौड़ में रिया सिंह ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। रिया सिंह कक्षा नौ की छात्रा हैं। इसी क्रम में 200 मीटर और 400 मीटर दौड़ में हाईस्कूल की छात्रा प्रिया सिंह ने द्वितीय स्थान प्राप्त कर दोहरी सफलता अर्जित की। जबकि 400 मीटर और 1500 मीटर दौड़ में शिवम कुमार आदिवासी ने क्रमशः द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त किया। भाला फेंक में कक्षा नौ की छात्रा खुशबू विश्वकर्मा ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसी तरह अंशिका सिंह ने डिस्कस थ्रो में तृतीय स्थान व कला रतियोगिता में तृतीय स्थान प्राप्त किया। अंशिका कक्षा नौ की छात्रा हैं। कक्षा नौ की ही छात्रा तान्या सिंह ने कला प्रतियोगिता में तृतीय स्थान हासिल किया।

स्कूली खेलकूद प्रतियोगिता से होता है छात्रों का सर्वांगीण विकास : पी एन सिंह

करछना। गुरुवार को क्षेत्र के शकुन विद्या निकेतन इण्टर कॉलेज नैनी में 68वीं माध्यमिक स्तरीय दो दिवसीय एथलेटिक्स प्रतियोगिता सुमन विद्या निकेतन इण्टर कॉलेज के संयोजक प्रधानाचार्य अशोक मिश्रा और सहसंयोजक प्रधानाचार्य केदार नाथ जायसवाल इण्टर कॉलेज संजीव तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न हुई। बुधवार को एथलेटिक्स प्रतियोगिता का उद्घाटन करछना विधायक पीयूष रंजन निषाद ने सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण तथा दीप प्रज्वलन करके किया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि जिला विद्यालय निरीक्षक प्रयागराज पी एन सिंह रहे ।कार्यक्रम का शुभारंभ जिला विद्यालय निरीक्षक प्रयागराज द्वारा गुब्बारे उड़ाकर किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता लोक सेवा आयोग के पूर्व अध्यक्ष प्रो केबी पाण्डेय ने किया। एथलेटिक्स प्रतियोगिता के 100 मीटर दौड़ में मदन मोहन मालवीय इण्टर कॉलेज करछना की सुमेरी ने प्रथम व रोशनी पटेल राजकीय बालिका इण्टर कॉलेज ने दूसरा स्थान प्राप्त किया। 400 मीटर दौड़ में मीनू प्रथम व सीखा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। 800 मीटर में रानी भारतिया अकोढ़ा प्रथम व मानसी द्वितीय स्थान प्राप्त किया। 1500 मीटर में ललिता छीतुपुर प्रथम स्थान व रंजना पटेल मदन मोहन मालवीय द्वितीय स्थान प्राप्त किया। 800 मीटर बालक वर्ग में अमन पटेल करछना,शिवा भीरपर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।1500 मीटर बालक वर्ग में विपिन कुशवाहा करछना ने प्रथम व सोनू घटवा ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। 3000 मीटर में विपिन कुशवाहा करछना प्रथम व अमन पटेल ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। गोला फेंक में शिवम कुशवाहा प्रथम इंदिरा गांधी इण्टर कॉलेज अकोढ़ा की इतु यादव श्रीमती इंदिरा गांधी इण्टर कॉलेज अकोढ़ा ने 200 मीटर दौड़,600 मीटर और लंबी कूद में प्रथम स्थान प्राप्त किया। अकोढ़ा की शालू साहू ने 1500 मीटर व 800 मीटर दौड़ में प्रथम व 3000 मीटर में दूसरा स्थान प्राप्त किया। समापन कार्यक्रम में मुख्य अतिथि डॉ के बी पाण्डेय ने विजेता खिलाड़ियों को बैज और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। सुमन विद्या निकेतन के प्रधानाचार्य अशोक मिश्र और केदार नाथ जायसवाल के प्रधानाचार्य संजीव तिवारी ने आए हुए अतिथियों के प्रति आभार व्यक्त किया।खेल प्रतियोगिता करछना संभाग के क्रीड़ा सचिव बुलंद प्रताप राय की देखरेख में सम्पन्न हुआ। करछना संभाग के क्रीड़ा संयोजक मदन मोहन शंखधर ने अपने संबोधन में खेल के महत्व को समझाते हुए बच्चों को खेल भावना से आगे बढ़ते हुए खेलने को प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में प्रतिभाग करने वाले विद्यालयों में संतोष कुमार सिंह, महेंद्र कुमार तिवारी, अमित पाण्डेय,डॉ सूर्यकांत तिवारी, मनीष तिवारी, ओम प्रकाश मिश्र, डॉ संतोष शुक्ल,ज्योत्सना सिंह,स्वामी नाथ तिवारी सहित कई प्रधानाचार्य उपस्थित रहे। तहसील के अन्तगर्त 25 विद्यालयों ने प्रतिभाग किया।

शिवानी, मानसी, अनामिका रही प्रथम

हनुमानगंज। मोतीलाल नेहरू इंटर कॉलेज में आयोजित तीन दिवसीय माद्यमिक विद्यालयों की खेल कूद प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। समापन पर गुरुवार को बालिकाओं के लिए एथलेटिक्स प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दौड़ में लाला मनमोहन दास इंटर कॉलेज झूंसी की शिवांशी, मानसी, अनामिका प्रथम रही। हाई जम्प तिलक इंटर कालेज कोटवा की अनिता यादव प्रथम रही। शर्ट रेस मोतीलाल इंटर कालेज की रिया सोनी, रागिनी यादव विजेता रही। विजेता छात्र-छात्राओं को मोती लाल नेहरू इंटर कालेज के प्रबंधक जयंत श्रीवास्तव व प्रधानाचार्य विमल कुमार उत्तम ने पुरस्कृत किया। इस प्रतियोगिता में फूलपुर सम्भाग के 10 विद्यालयो ने हिस्सा लिया। कार्यक्रम का संचालन प्रकाश नारायण मिश्र ने किया खेल व्यवस्था खेल शिक्षक संजय कुमार एवं राम सागर के साथ कार्यक्रम में मुख्य रूप से मनोज सिंह, लवकुश सिंह ,वशिष्ठ मिश्रा, उमेश प्रताप सिंह, विनय कुमार शुक्ला, विवेक श्रीवास्तव, दीपक वर्मा, अनसूया सिंह, किरन श्रीवास्तव, अनिता सिंह, अरुण कुमार दुबे, समरेन्द्र प्रताप सिंह, राजीव शुक्ला, अमर पाल सिंह प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

सरिता ने हासिल किया पीएचडी की उपाधि

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। विकास खंड कुंडा के ढिकुही ताजपुर निवासी स्वर्गीय इंद्र नारायण त्रिपाठी की पुत्री सरिता देवी सैम हिगिनबॉटम कृषि, प्रौद्योगिकी और विज्ञान विश्वविद्यालय नैनी प्रयागराज से पीएचडी की उपाधि हासिल कर अपने समाज व जिले का नाम रोशन किया है। सरिता के बड़े भाई रोहिणी कुमार त्रिपाठी जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी कार्यालय में प्रधान लिपिक के पद पर कार्यरत हैं। सरिता देवी के माता जी आंगनबाड़ी कार्यकत्री है, छोटे भाई पंकज तिवारी अधिवक्ता है उन्होंने बताया कि सरिता देवी की प्रारंभिक शिक्षा कृपालु बालिका इंटर कॉलेज एवं महाविद्यालय कुंडा से किया है। वर्तमान में सरिता देवी बेसिक शिक्षा विभाग में सहायक अध्यापक के पद पर कार्यरत हैं। सरिता देवी के माता पिता शिक्षा के प्रति हमेशा अग्रसर रहे हैं।

श्री रामलीला समिति द्वारा निकाली गई कुंभकरण वध की झांकी

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। श्री रामलीला समिति द्वारा गुरुवार को श्री रामलीला के आठवें दिन कुंभकरण वध की झांकी निकाली गई। झांकी गोपाल मंदिर से चलकर भरत चैक होते हुए सदर बाजार से वापस रामलीला मैदान में प्रभु श्री राम और कुंभकरण का भीषण संग्राम हुआ, जिसे देखने के लिए राम भक्तों की अपार भीड़ उमड़ पड़ी थी।

कुंभकरण वध की झांकी निकालते कलाकार।

प्रभु ने कुंभकरण का वध कर दिया और कुंभकरण का वध होने पर मौजूद राम भक्तों ने जय श्री राम के जयकारे लगाए। भक्तों ने प्रभु श्री राम की आरती उतारी। श्रीराम के जयकारे से पूरा रामलीला मैदान गूंज उठा। रामलीला मैदान से प्रभु श्रीराम का रथ सिप्टैन रोड से वाचनालय होते हुए पंजाबी मार्केट से होकर गोपाल मंदिर जाकर विश्राम दिया गया। आज की लीला झांकी के साथ चल रहे संरक्षक रोशनलाल उमरवैश्य, श्याम शंकर सिंह, अध्यक्ष संजय खंडेलवाल, संयोजक दिनेश सिंह दिन्नू, मंत्री विपिन गुप्ता, कोषाध्यक्ष मनीष गुप्ता, धर्मेंद्र चैरसिया, विष्णु सोनी, विवेक कुमार, शिवम खंडेलवाल, बंटी नेता, राहुल सोनी आदि उपस्थित रहे।

धरती से संघर्ष करके नेताजी बने धरती पुत्रः सांसद

सपाईयों ने मनाई मुलायम सिंह यादव की पुण्यतिथि

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। समाजवादी पार्टी कार्यालय मीरा भवन पर समाजवादी पार्टी के सांसद डॉ शिवपाल सिंह पटेल ने नेताजी मुलायम सिंह यादव की पुण्यतिथि पर उनके चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित कर नमन किया। उन्होंने कहा कि इसी धरती से संघर्ष करके नेताजी मुलायम सिंह यादव धरती पुत्र के नाम से जाने जाते हैं।

रानीगंज विधायक डॉक्टर आरके वर्मा ने कहा कि जहां हम लोग नेताजी को याद कर रहे हैं वहीं आज खबर मिली कि देश के बड़े उद्योगपति रतन टाटा भी हमारे बीच नहीं रहे। इस मौके पर पट्टी विधायक राम सिंह पटेल ने कहा कि नेताजी समाजवादी पार्टी गरीबों और मजलूमों और किसानों के लिए बनाया है। मौजूदा सरकार इस समय गरीबों के ऊपर अत्याचार कर रही है इस मौके पर जिला महासचिव अब्दुल कादिर जिलानी, राजकुमार यादव, जावेद खान, निसार अहमद, जगदीश यादव, अश्वनी सोनी, पंडित करोड़ीमल शर्मा, मनीष पाल, शबनमबानो, सफात खान, उमंग यादव, तकदीर खान, असलम खान, मीडिया प्रभारी वकार अहमद आदि लोग मौजूद रहे।

कार्यालय पर आयोजित बैठक में बोलते सांसद एसपी पटेल।

रतन टाटा के निधन को प्रमोद तिवारी व मोना ने बताया अपूर्णनीय क्षति

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। राज्यसभा में विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी तथा कांग्रेस विधान मण्डल दल की नेता आराधना मिश्रा मोना ने देश के जाने माने उद्योगपति रतन टाटा के आकस्मिक निधन को भारत की अर्थव्यवस्था एवं राष्ट्रीय उद्योग के क्षेत्र में बड़ी क्षति कहा है।

उन्होंने कहा कि विश्वसनीयता तथा भारतीयता से रतन टाटा का आजीवन गहरा जुड़ाव रहा। विधायक मोना एवं राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी ने कहा कि देश की उद्योग जगत की उन्नति में रतन टाटा ने अपना बहुमूल्य एवं अविस्मरणीय योगदान दिया है। वहीं प्रमोद तिवारी तथा आराधना मिश्रा मोना ने कहा कि देश जब आजाद हुआ तब बड़े उद्योग के क्षेत्र में देश को आत्मनिर्भर बनाने के लिए स्वर्गीय रतन टाटा ने सबसे आगे आये। विधायक मोना तथा सांसद प्रमोद तिवारी ने कहा कि पद्मभूषण रतन टाटा ने आजाद भारत के निर्माण में अपना योगदान देते हुए राष्ट्र की सच्ची सेवा की। सांसद प्रमोद तिवारी एवं विधायक आराधना मिश्रा ने कहा कि स्वर्गीय रतन टाटा ने भारतीय उद्योग जगत को मजबूती प्रदान करने के लिए टाटा स्टील्स समेत अनेक संयंत्र स्थापित किए। इधर यूपी में कांग्रेस सपा गठबंधन को लेकर हो रही बातचीत को लेकर विपक्ष के उपनेता प्रमोद तिवारी ने कहा कि मतों का बिखराव रोकने के लिए शीर्षस्तर पर दोनों दलों के बीच बातचीत जारी है। उन्होंने कहा कि कांग्रेस संविधान बचाओ संकल्प अभियान के तहत प्रदेश में पार्टी की मजबूती के प्रयास को तेजी से जारी रखेगी। राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी का यह बयान गुरूवारको मीडिया प्रभारी ज्ञान प्रकाश शुक्ल के हलवाले से निर्गत हुआ।

किशोरी प्रेमी संग भागी, प्रेमी पुलिस के हवाले

पट्टी, प्रतापगढ़। नाबालिग किशोरी को भगाकर ले जा रहे युवक को ग्रामीणों के सहयोग से परिजनों ने दबोच कर पुलिस के हवाले कर दिया। पुलिस आरोपी युवक को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है। कोतवाली क्षेत्र के उड़ैयाडीह इलाके की एक नाबालिग किशोरी को उसका प्रेमी दूसरी बार भगाकर ले जा रहा था। जब इसकी जानकारी परिजनों को हुई तो परिजनों ने ग्रामीणों के सहयोग से घेराबंदी कर आरोपी प्रेमी को किशोरी संग दबोच लिया और मामले की सूचना कोतवाली पुलिस को दी। सूचना मिलने पर मौके पर पहुंची पुलिस आरोपी युवक को हिरासत में लेकर थाने आई जहां पर उससे सख्ती से पूछताछ की जा रही है।

मानसिक विकार वैश्विक समस्या का ले चुका रुपः एडीजे

अखंड भारत संदेश

जीजीआईसी में विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पर हुई चर्चा

प्रतापगढ़। जनपद न्यायाधीश अब्दुल शाहिद के मार्गदर्शन में विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के अवसर पर राजकीय बालिका इंटर कॉलेज में जिला विद्यालय निरीक्षक ओमकार राणा के निर्देश के क्रम में, प्रधानाचार्य गीता के कुशल नेतृत्व में और डॉ मोहम्मद अनीस उप प्रधानाचार्य के कुशल संयोजन में एक विशेष संवाद कार्यक्रम छात्राओं और स्टाफ के मध्य संपन्न हुआ।

मुख्य अतिथि अपर जिला जज एवं सचिव विधिक सेवा प्राधिकरण सुमित पवार रहे। मुख्य अतिथि ने कहा कि विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस प्रत्येक वर्ष 10 अक्टूबर को मनाया जाता है जिसका उद्देश्य मानसिक स्वास्थ्य से जुड़े मुद्दों के प्रति जागरूकता को बढ़ाना और मानसिक विकारों से पीड़ित लोगों की मदद करना है। इसका प्रारंभ सन 1992 से हुआ है। इस वर्ष विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस की थीम है कार्यस्थल पर मानसिक स्वास्थ्य को प्राथमिकता देने का समय।

उन्होंने कहा कि शारीरिक बीमारी तो व्यक्ति पहचान लेता है, लेकिन मानसिक बीमारी को व्यक्ति नहीं पहचान पाता। जो व्यक्ति मानसिक रूप से रोगी है उसे अपने रोग का पता ही नहीं चल पाता। केवल उसके लक्षणों को देखकर ही पता चल सकता है कि वह मानसिक रोगी है। आज मानसिक विकार वैश्विक समस्या का रूप ले चुका है। आए दिन आत्महत्या के प्रकरण सामने आ रहे हैं। विशेष अतिथियों में डॉक्टर विंध्याचल सिंह, प्रधानाचार्य राजकीय इंटर कॉलेज रामपुर कांपा तथा आरपी पांडे, इंचार्ज, लीगल सर्विस सेंटर एवम काउंसलर रहे। विशेष काउंसलर और मनोचिकित्सक के रूप में जिला अस्पताल से डॉक्टर श्याम भार्गव, डिप्टी सीएमओ एवं कुल श्रेष्ठ तिवारी प्रधानाचार्य राजकीय इंटर कॉलेज रहे।

जीजीआईसी में आयोजित कार्यक्रम में बोलते एडीजे सुमित पवार।

खो खो में यूपीएस चांदपुर व क्रिकेट में गौरा रही विजेता

स्पोर्ट्स स्टेडियम में हुई जिला स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। बेसिक शिक्षा के निदेशक के आदेशानुसार तथा बेसिक शिक्षा अधिकारी भूपेन्द्र सिंह के कुशल नेतृत्व और जिला व्यायाम शिक्षक राम कुमार सिंह, जिला व्यायाम शिक्षिका मंजू सिंह, जिला स्काउट मास्टर सुशील सिंह की अगुवाई में न्याय पंचायत स्तर से ब्लॉक स्तर व जिला स्तर तक चयनित हुए खिलाड़ियों का जिला स्पोर्ट्स स्टेडियम में आयोजित जिला स्तरीय खो खो कबड्डी, क्रिकेट, योगा, ताइक्वांडो, बास्केटबॉल, जिम्नास्टिक की प्रतियोगिता संपन्न हुई।

बीएसए भूपेन्द्र सिंह को सम्मानित करते आयोजकगण।

इसमें जिले के सभी ब्लॉक की बालक बालिकाओं ने प्रतिभाग किया, जिसमें उच्च प्राथमिक बालिका खो खो में यूपीएस चांदपुर गौरा विजेता, मांधाता उपविजेता, प्राथमिक बालक खो खो में आसपुर देवसरा विजेता,सडवा चंद्रिका उप विजेता, कबड्डी यू पी एस बालिका में यू पी एस बझान सडवा चंडिका विजेता लक्ष्मणपुर उपविजेता, प्राथमिक बालक कबड्डी में बाबा बेलखरनाथ उपविजेता लक्ष्मणपर। क्रिकेट बालक बालिका ने गौरा विजेता नगर क्षेत्र उप विजेता, बास्केट बाल मे गौरा विजेता रही, जिसमें निर्णायक की भूमिका में विमल कुमार, कपिल देव, पवन सिंह, राम बहादुर पाल, राजेंद्र पांडे, शैलेश सिंह, कौशलेंद्र सिंह, आशुतोष सिंह, राम सुख प्रजापति, मनोज भारती थे। अभिलेख में भोलेंद्र, विक्रम सिंह, डा आशुतोष सिंह, राजेश सिंह, सुरुचि सिंह एवं सोनी ओझा रहे। सभी अच्छे बालक-बालिकाओं का मंडलीय प्रतियोगिता के लिए चयन किया गया।

वृद्धजनों की सेवा से बड़ा कोई पुनीत कार्य नहीं: नरेन्द्र बहादुर

अखंड भारत संदेश

प्रतापगढ़। अखिल भारतीय क्षत्रिय कल्याण परिषद द्वारा गुरुवार को वृद्धाश्रम चिलबिला में वरिष्ठ समाजसेवी रोशन लाल उमरबैश्य के निर्देशन में जिला संरक्षक नरेन्द्र बहादुर प्रबंधक बड़ौदा यूपी जिला अध्यक्ष राम लखन सिंह संयोजिकत्व में वृद्धजनों को फल वितरण किया गया।

इस अवसर वरिष्ठ समाजसेवी रोशन लाल उमरबैश्य ने कहा कि जनपद की स्वयं सेवी संस्थाएं अखिल भारतीय क्षत्रिय कल्याण परिषद के कार्यों का अनुकरण करें। उन्होंने कहा कि अ0भा0क्ष0कल्याण परिषद समय-समय पर समाज सेवा का पुनीत कार्य करती रहती है, आज उसका उदाहरण है। कार्यक्रम के मुख्य संयोजक अखिल भारतीय क्षत्रिय कल्याण परिषद के जिला संरक्षक तथा बड़ौदा यूपी बैंक के पूर्व प्रबंधक नरेंद्र बहादुर सिंह ने कहा कि वृद्धजनों की सेवा से बड़ा कोई पुनीत कार्य नहीं है। जिला अध्यक्ष कार्यक्रम के संयोजक राम-लखन सिंह ने कहा कि प्रसिद्ध समाजसेवी स्व बाबू जयकरन सिंह हण्डौर की स्मृति में आज अखिल भारतीय क्षत्रिय कल्याण परिषद द्वारा वृद्धाश्रम में वृद्धजनों को फल वितरण का पुनीत कार्य किया गया कल्याण परिषद इसी प्रकार ठंडक से बचाव हेतु जरुरत मंदों को कम्बल का वितरण किया जाता है। इस अवसर पर अखिल भारतीय क्षत्रिय कल्याण परिषद के नगर अध्यक्ष पूर्व सहायक निदेशक सूचना आर0बी0सिंह, नगर महासचिव पूर्व प्रबंधक बड़ौदा यूपी बैंक डीपी सिंह जिला उपाध्यक्ष धनंजय सिंह व विश्राम सिंह तथा बड़ौदा यूपी बैंक के प्रबंधक अजय कुमार सिंह समाजसेवी शैलेश प्रताप सिंह मौजूद रहे।

वांछित अभियुक्त गिरफ्तार

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। मानिकपुर पुलिस ने विभिन्न मामलो में वांछित चल रहे अभियुक्त रंजीत यादव पुत्र चंद्रपाल यादव निवासी मदापुर मजरे कहूंआ पोस्ट मनका थाना सलवन जनपद रायबरेली को थाना क्षेत्र के ग्राम चैरही पाल ढाबा से गिरफ्तार कर लिखा पढ़ी करके न्यायालय भेज दिया। इस प्रकरण में वादिनी के साथ वादिनी के पति के दोस्त द्वारा दुष्कर्म, मारपीट, दहेज मांगने के प्रकरण में मानिकपुर थाना में गंभीर धाराओं में अभियोग पंजीकृत किया गया है।

मिशन शक्ति के प्रति गांव में चौपाल लगाकर किया जागरूक

बच्चों के साथ चौपाल में मौजूद उप निरीक्षक।

अखंड भारत संदेश

परियावां, प्रतापगढ़। पुलिस अधीक्षक डा अनिल कुमार के दिशा निर्देशन पर नवाबगंज थाना प्रभारी धीरेंद्र ठाकुर के निर्देश पर थाना नवाबगंज उप निरीक्षक शिवम् त्रिपाठी प्रभारी एन्टि रोमियो व महिला कांस्टेबल नीलम कुशवाहा, टीनू कुमारी, लवली, शिवांगी गुप्ता, प्रियंका पटेल, थाना नवाबगंज के ग्राम आलापुर व संग्रामपुर में चैपाल लगाकर महिलाओ एवं बालिकाओं को सुरक्षा एवं साइबर अपराध संबंधी जानकारियां दी और शासन द्वारा चलाई जा रही योजनाएं जैसे विमेन पावर लाइन 1090, महिला हेल्पलाइन 181, मुख्यमंत्री हेल्पलाइन 1076, पुलिस आपातकालीन सेवा 112, चाइल्ड हेल्पलाइन 1098, स्वास्थ्य सेवा 102, एम्बुलेंस सेवा 108, साइबर हेल्प लाइन 1930, कन्या सुमंगला योजना, वृद्धापेंशन योजना, विधवा पेंशन योजना आदि के बारे में विस्तृत जानकारी दी। इस अवसर पर ग्राम प्रधान सियाराम मौर्य व ग्राम प्रधान जोखू यादव, ग्राम वासियों के साथ चैपाल में मौजूद रहे।

भगवान का अवतार लोक मंगल का पुण्य-सम्पूर्णानंद

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। लालगंज क्षेत्र के डगरारा गांव में हो रही भगवान वामन की कथा में गुरूवार को श्रद्धालुओं की भीड़ जुटी दिखी। कथाव्यास प्रयागराज से पधारे संत सम्पूर्णानन्द जी महराज ने कहा कि लोक मंगल के लिए भगवान ने विविध अवतार लिए। उन्होंने कहा कि वामन भगवान के अवतार में संसार को सद्मार्ग पर आगे बढ़ने का बोध हुआ। सम्पूर्णानन्द जी महराज ने कहा कि भगवान के हर स्वरूप में आराधना का फल कल्याणकारी हुआ करता है। उन्होंने कहा कि लोभ तथा मोह का त्याग कर हमें जीवन में अच्छे कर्म करना चाहिए। उन्होंने कहा कि कथा सुनने का सही फल जीवन में कथा के सार को समझते हुए अपने मार्ग पर आगे बढ़ने का मिला करता है। संयोजक समाज सेवी धर्मेन्द्र प्रताप सिंह ने व्यास पीठ का पूजन किया। इस मौके पर केडी मिश्रा, पवन सिंह, राजू पाण्डेय, सालिक तिवारी, पप्पू तिवारी, सूर्यबली सिंह, आलोक सिंह, अमरपाल सिंह, अतुल शुक्ल आदि रहे।

मजिस्ट्रेटी जांच की मांग पूरी न होने पर नाराज वकीलों ने किया धरना प्रदर्शन

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। साथी अधिवक्ताओं की गिरफ्तारी में पुलिस द्वारा स्थान व समय बदलने से नाराज वकीलों ने गुरूवार को तहसील पार्क में धरना प्रदर्शन किया। संयुक्त अधिवक्ता संघ के महामंत्री सूर्यकान्त निराला एवं उपाध्यक्ष बालेन्द्र त्रिपाठी के संयुक्त नेतृत्व में वकीलों ने मजिस्टेट्रटी जांच की मांग को लेकर जमकर नारेबाजी की। वकीलों ने परिसर में भी पुलिस प्रशासन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन को लेकर हुंकार भरी। धरना स्थल पर हुई सभा को संबोधित करते हुए पूर्व अध्यक्ष ज्ञान प्रकाश शुक्ल ने कहा कि जिला प्रशासन यदि मजिस्ट्रेटी जांच की घोषणा नहीं करता तो अब अधिवक्ता हाईकोर्ट के प्रशासनिक जज से मिलकर फरियाद करेंगें। सभा को सम्बोधित करते हुए पूर्व अध्यक्ष अनिल महेश ने कहा कि पुलिस मनमानी के खिलाफ लालगंज के वकीलो के इस आन्दोलन को प्रदेश अधिवक्ता संघर्ष समिति से समर्थन के लिए भी बातचीत की जायेगी। सभा की अध्यक्षता पूर्व अध्यक्ष लाल राजेन्द्र सिंह व संचालन वरिष्ठ उपाध्यक्ष विभाकरनाथ शुक्ल ने किया। अधिवक्ताओं के धरना प्रदर्शन के चलते गुरूवार को भी तहसील में न्यायिक कामकाज ठप दिखा। इस मौके पर संजय सिंह, सुशील शुक्ला, बीडी पटेल, शिवेन्द्र तिवारी, प्रमोद सिंह, सोमनाथ मिश्र, रमाशंकर मिश्र, संतोष सिंह, हरिश्चन्द्र पाण्डेय, इरफान, अमरनाथ यादव, सत्येन्द्र श्रीवास्तव, प्रवीण यादव, सुधाकर मिश्र, मनीष क्रान्तिकारी, सिंटू मिश्रा, अखिलेश द्विवेदी आदि अधिवक्ता रहे।

ट्रक और बाइक में हुई जोरदार भिड़ंत, तीन घायल एक रेफर

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। बाइक से आ रहे पट्टी तहसील मुख्यालय रिश्तेदारी युवक को सामने से आ रही तेज रफ्तार ट्रक ने जोरदार टक्कर मार दी। बाइक पर बैठी पत्नी व उसका भतीजा सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गया। लोगों की सूचना पर मौके पर पहुंची 108 एंबुलेंस से घायलों को लेकर सीएचसी आई जहां पर बाइक चालक युवक की हालत गंभीर होने के चलते चिकित्सकों ने जिला मेडिकल कॉलेज के लिए रेफर कर दिया है। जनपद जौनपुर बदलापुर तहसील बदलापुर गांव ठेमा के रहने वाले शमशाद अहमद बृहस्पतिवार की सुबह अपने घर से पट्टी तहसील मुख्यालय रिश्तेदारी आ रहा था। इस दौरान कोतवाली क्षेत्र के ढकवा रोड कलियानापुर नहर के पास सामने से आ रही तेज रफ्तार ट्रक चालक ने बाइक में जोरदार टक्कर मार दी। जिसमे बाइक चालक शमशाद अहमद 32 वर्ष, समीर 10 वर्ष शबाना 30 वर्ष, सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गई। आस-पास लोगों की मदद से घायलों को 108 एंबुलेंस से सीएचसी लेकर आए जहां पर शमशाद की हालत नाजुक देख चिकित्सकों ने जिला मुख्यालय भेज दिया है। जबकि शमशाद का भांजा समीर व उसकी पत्नी शबाना को हल्की फुल्की छोटे आई जिनका इलाज सीएचसी में चल रहा है।

अजगर को लेकर मचा हड़कम्प

लालगंज, प्रतापगढ़। कोतवाली के पंड़ित का पुरवा में गुरूवार को दोपहर अजगर को खेत में देखकर हड़कम्प मच गया। विशालकाय अजगर द्वारा नील गाय के बच्चे को आधा निगल लिया गया देख लोग भयभीत हो उठे। आधे घण्टे बाद अजगर ने नील गाय के बच्चे को बाहर फेंका तो वह मृत पाया गया। अजगर को लेकर खेत के आस पास भारी भीड़ जुट गयी दिखी। ग्रामीणों ने वन विभाग को सूचना दी तब वन विभाग की टीम ने मौके पर पहुंचकर अजगर को एक बोरी में किसी तरह कैद किया। वन विभाग की टीम अजगर को गांव से जंगल लेकर पहुंची।

सड़क हादसे में घायल महिला का स्वरूप रानी में चल रहा है इलाज

अखंड भारत संदेश

पट्टी, प्रतापगढ़। बीते छह अक्टूबर की रात में रेडीगारापुर बाजार से पत्नी संग आ रहे बाइक सवार को पीछे से ट्रक ने जोरदार टक्कर मार दी जिससे पति-पत्नी सड़क हादसे में गंभीर रूप से घायल हो गए। घायलों को इलाज के लिए सीएचसी लाया गया जहां से गंभीर हालत के चलते जिला चिकित्सालय रेफर कर दिया गया था। महिला की हालत गंभीर होने के चलते स्वरूप रानी के लिए रेफर कर दिया गया जहां पर उसका इलाज चल रहा है। कोतवाली इलाके के रुर गांव के रहने वाले शिवकुमार सिंह अपनी पत्नी कुसुम सिंह को रेडीगारापुर बाजार से घर लेकर जा रहे थे। रुर गांव के समीप पीछे से आ रहे थे तेज रफ्तार ट्रक में बाइक में जोरदार टक्कर मार दी जिससे पति-पत्नी सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। कुसुम सिंह की हालत गंभीर होने के चलते स्वरूप रानी अस्पताल रेफर किया गया है जहां पर उसका इलाज चल रहा है। मामले में पीड़ित ने बुधवार को प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है। कोतवाल आलोक कुमार ने बताया कि ट्रक व चालक को हिरासत में लिया गया है। प्रार्थना पत्र के आधार पर कार्रवाई की जा रही है।

राम वन गमन को देख श्रद्धालुओं के छलके आँसूं, लगा जयकारा

अखंड भारत संदेश

लालगंज, प्रतापगढ़। लक्ष्मणपुर ब्लाक के सगरासुंदरपुर बाजार मे लक्ष्मणपुर रोड पर हो रही रामलीला का मंचन देखने श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ी दिखी। श्रीराम लीला मंचन में राम गमन का दृश्य दर्शको की आंखें भर आयी। प्रभु राम केवट संवाद पर दर्शक प्रभु श्रीराम का जयकारा लगाते नजर आये. तो वही भरत कैकेयी संवाद को सुन सभी का हृदय भाव विहवल हो उठा. नाव उतराई के समय जब माता सीता ने अपनी अगूँठी उतार कर केवट को देने लगी तो केवट द्वारा उतराई न लेने पर दर्शको ने तालियो की गडगडाहट से कार्यक्रम को सराहा।

वहीं जब भरत प्रभु राम को मनाने के लिये अयोध्या से चित्रकूट के लिए निकले तो उनके साथ तीनो माताये कौशल्या, कैकेयी और सुमित्रा को सफेद वस्त्रो मे देख मौजूद महिलाओ की आँखो मे आँसू आ गये। मंच का संचालन रत्नाकर तिवारी ने किया। स्वागत रामलीला कमेटी के अध्यक्ष समाजसेवी संजय शुक्ल ने किया। इस मौके पर दुर्गा पूजा समिति के अध्यक्ष शिवशंकर शुक्ल, व्यापार मंडल अध्यक्ष जाकिर अली, राम नरायण वर्मा, सुरेश मिश्र मदन, अनूप त्रिपाठी, संजीव तिवारी, लालजी यादव, अतुल दुबे, पिंटू तिवारी, राम सूरत तिवारी, शिवकरन, अजय तिवारी, राहुल, आदर्श अभिषेक, प्रद्युम्न, अनूप, खुशबू सिंह,गरीब उल्ला, अनिल जायसवाल, अनीता, सुनीता, कमला, वर्षा, सोनम, अंकिता, गुंजन, राधा, विमला आदि रहे।

आईजीआरएस पोर्टल के माध्यम से प्राप्त शिकायतों के निस्तारण का डीएम ने खुद मौके पर जाकर किया भौतिक सत्यापन

अखंड भारत संदेश

कौशाम्बी। जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी ने गुरुवार को आनलाइन पोर्टल के माध्यम से प्राप्त शिकायतों का भौतिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान आई0जी0आर0एस0 सन्दर्भ संख्या-20017424009888 आवेदक साहेबदीन पुत्र देवनाथ निवासी,ग्राम टेवा,परगना,अथरवन तहसील मंझनपुर जनपद कौशाम्बी द्वारा दिये गये शिकायती प्रार्थना पत्र पट्टे की भूमि पर विपक्षी द्वारा जबरन कब्जा करने के सन्दर्भ में प्राप्त आख्या का जिलधिकारी द्वारा खुद मौके पर जाकर भौतिक सत्यापन किया। जो कि सही पाया गया। जिलाधिकारी शिकायत के निस्तारण से सतुष्ट हुए। इसी तरह आई0जी0आर0एस0 सन्दर्भ संख्या-40017424018257 आवेदक दशरथलाल चौरसिया पुत्र छोटे लाल निवासी ग्राम भरसवॉ परगना अथरवन तहसील मंझनपुर जनपद कौशाम्बी द्वारा दिए गये शिकायती प्रार्थना पत्र पर मकान निर्माण के सम्बन्ध में प्राप्त आख्या रिपोर्ट का सन्दर्भ संख्या-20017424012143 पर आवेदिका सुशीला देवी पत्नी स्व0 फकीरे लाल निवासी ग्राम कोतारी पश्चिम परगना व तहसील मंझनपुर जनपद कौशाम्बी द्वारा आराजी संख्या 53 भूमिधरी भूमि से सम्बन्धित शिकायत का भौतिक सत्यापन किया। जो कि सही पाया गया। डीएम शिकायत के निस्तारण से सतुष्ट हुए। जिलाधिकारी ने इस शिकायत के निस्तारण में लेखपाल राजन सिंह के रिपोर्ट की तारीफ की। डीएम ने आईजीआरएस प्राप्त शिकायतों का निस्तारण में लेखपालों इन दोनों लेखपालों की तारीफ करते हुए और लेखपाल इनसे प्रेरणा लेकर ऐसे ही उचित ढ़ग से शिकायतों का निस्तारण करें। इस मौके पर उप जिलाधिकारी मंझनपुर मौजूद रहें।

अलग-अलग सड़क हादसे में आधा दर्जन घायल

कौशांबी। सैनी कोतवाली क्षेत्र के गुलामी पुर गनपा आरकेबीके पेट्रोल पंप के आसपास अलग-अलग तीन हादसे में आधा दर्जन लोग घायल हो गए हैं घायलों को इलाज के लिए सरकारी एंबुलेंस से अस्पताल पहुंचाया गया है। जानकारी के मुताबिक दिल्ली के रहने वाले कुंदन सिंह पुत्र देशराज सिंह चार पहिया वाहन लोडर से अपने एक साथी के साथ सामान लेकर प्रयागराज की ओर जा रहे थे जैसे ही वह सैनी कोतवाली के गुलामीपुर आरकेबीके पेट्रोल पंप के पास पहुंचे गाड़ी खड़ी करके वह कुछ अपनी गाड़ी में बनाने लगे इसी बीच तेजगति बाइक ने कुंदन सिंह को टक्कर मार दिया जिससे कुंदन सिंह गंभीर रूप से घायल हो गए हैं मौके पर लोगों की भीड़ लग गई है मामले की सूचना पुलिस और एंबुलेंस को दी गयी है मौके पर पहुँची एंबुलेंस ने घायल कुंदन सिंह को इलाज के लिए जिला अस्पताल पहुंचाया है

दूसरी घटना गुलामी पुर के आरकेबीके पेट्रोल पंप के पास की है मोहब्बत पुर पइसा थाना क्षेत्र के रहने वाले कैलाश नाथ अपने साथी के साथ बाइक से कहीं जा रहे थे जैसे ही वह आरकेबीके पेट्रोल पंप के पास पहुंचे तेज गति ऑटो ने कैलाश नाथ की बाइक में टक्कर मार दिया जिससे कैलाश नाथ और उनका साथी गंभीर रूप से घायल होकर सड़क पर गिर पड़े हैं आसपास के लोगों ने मामले की सूचना एंबुलेंस और पुलिस को दिया मौके पर पहुंची पुलिस ने गम्भीर घायल कैलाश नाथ को इलाज के लिए अस्पताल पहुंचाया है

तीसरी घटना भी आरके बीके पेट्रोल पंप के पास की है जहां चकिया गनपा गांव के रहने वाले सुरेश पाल पुत्र राम भजन साइकिल से मेडिकल स्टोर से दवा लेकर वापस अपने घर जा रहे थे जैसे ही वह आरकेबीके पेट्रोल पंप के पास पहुंचे सुरेश की साइकिल में तेजगति बाइक सवार ने टक्कर मार दिया है जिससे बाइक सवार और सुरेश दोनों लोग सड़क पर गिर पड़े हैं बताया जाता है की बाइक सवार मोचरा गांव का रहने वाला है सूचना पर मौके पर लोगों की भीड़ लग गई मामले की जानकारी मिलते ही मौके एम्बुलेंस और पुलिस पहुँची और और घायल सुरेश सहित अन्य लोगों को इलाज के लिए एम्बुलेंस ने सीएचसी सिराथू में भर्ती कराया है।

न्यूज झरोखा

डीएम ने किया इफको बाजार का निरीक्षण नही पाया गया डीएपी का स्टाक

कौशाम्बी जिलाधिकारी द्वारा भरसवां गावं में स्थित सहकारी समितिओसा मण्डी में स्थित इफको बाजार एवं प्राथमिक विद्यालय गौरा डेरा विकास खण्ड मंझनपुर का औचक निरीक्षण किया। जिलाधिकारी द्वारा भरसवां गावं में स्थित सहकारी समिति के निरीक्षण के दौरान वह बन्द पाया गया। जिस पर कड़ी नाराजी दिखाते हुए कार्यवाही करने के निर्देश दिये। इफको बाजार के निरीक्षण में डी.ए.पी. का स्टाक नही पाया गया। सम्बन्धित को डी.ए.पी. के स्टाक को पर्याप्त मात्रा में रखने के निर्देश दिये। जिससे किसानो को असुविधा न हो। प्राथमिक विद्यालय के निरीक्षण के दौरान अध्यापको की उपस्थिति पढ़ाई की गुणवत्ता व बच्चों की उपस्थिति ठीक पायी गयी

नेहरू नगर दुर्गा पूजा पंडाल में कुमारी कन्या भोज का हुआ आयोजन

कौशाम्बी जनपद मुख्यालय मंझनपुर के नेहरू नगर दुर्गा पूजा पंडाल में बुधवार को कुमारी कन्या के भोज का आयोजन करवाया गया नवरात्र के पावन पर्व पर दुर्गा पूजा पंडाल में प्रतिदिन सुबह से महिला पुरुष भक्तों की भारी भीड़ लग रही है आरती कीर्तन भजन प्रवचन के साथ पंडाल में माता का जगराता प्रतिदिन भक्त गणों द्वारा किया जा रहा है बुधवार को विशाल कन्या भोज का आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ो कन्याओं को भोजन कराया गया है और उन्हें उपहार दिया गया है

शिव मंदिर में कन्या भोज और कन्या पूजन का हुआ आयोजन

कौशांबी जनपद मुख्यालय मंझनपुर के नेहरू नगर गली के अंदर शिव मंदिर में नवरात्रि के पावन पर्व पर महिलाओं द्वारा मां दुर्गा की प्रतिमा स्थापित कर प्रतिदिन आरती पूजन भजन किया जा रहा है प्रतिदिन सुबह शाम मोहल्ले की महिलाओं द्वारा माता की आरती कीर्तन भजन जगराता किया जा रहा है बुधवार को महिलाओं द्वारा कन्या पूजन और कन्या भोज का आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ो कन्याओं को भोजन कराया गया है और कन्याओं को उपहार दिया गया है नवरात्रि के पवन परिवार महिलाओं द्वारा आयोजित कार्यक्रम में सुबह से शाम तक मां का जयकारा भक्तों द्वारा लगाया जा रहा है पूरा वातावरण मां की भक्ति से गुंजायमान हो रहा है

मूर्ति विसर्जन स्थल पर व्यवस्था करने का ईओ ने दिया निर्देश

भरवारी कौशाम्बी नगर पालिका परिषद भरवारी में अधिशासी अधिकारी राम सिंह ने जोनल प्रभारी चौकी इंचार्ज विक्रम टेंपो टैक्सी चालक के साथ बैठक करके नवरात्रि की मूर्ति विसर्जन के संबंध में निर्देशित किया है कि मूरतगंज में पक्का तालाब भरवारी में बड़ी कुटी और रसूलपुर गिरसा के तालाब में मूर्ति विसर्जन की जाएगी मूर्ति विसर्जन के तालाब में साफ सफाई वा अन्य व्यवस्थाएं करने के लिए जोनल प्रभारी को उन्होंने निर्देशित किया है इसके साथ उन्होंने टेंपो टैक्सी के चालकों को निर्धारित स्थान पर टेंपो टैक्सी खड़े करने का निर्देश दिया है जिस पर टेंपो टैक्सी के चालकों ने दशहरा के बाद निर्धारित स्थान पर वाहन खड़े करने के लिए कहा है

अषाढ़ा ग्रामसभा के फैजीपुर गांव में नवरात्रि पर कन्याभोज का हुआ आयोजन

अषाढ़ा कौशाम्बी ब्लॉक मंझनपुर के अषाढ़ा ग्रामसभा के फैजीपुर गांव में बृहस्पतिवार को कन्याकुमारी के भोज का आयोजन करवाया गया नवरात्रि के पावन पर्व पर दुर्गा पूजा पंडाल में सुबह से महिला पुरुष भक्तों की भारी भीड़ लगी रही आरती कीर्तन भजन प्रवचन के साथ पांडाल में माता का जगराता प्रतिदिन भक्तगणों द्वारा किया जाता है बृहस्पतिवार को विशाल भंडारा में सैकड़ों कन्याओं को भोजन कराया गया और उन्हें उपहार भी दिया गया कमेटी के अध्यक्ष दुर्गा सिंह पटेल द्वारा कन्याओं को भोजन खिलाया गया और उन्हें उपहार भी दिया गया आचार्य के रूप में सुशील कुमार मिश्रा और पदाधिकारी शारदा सिंह पटेल गुड्डू यादव सहित अनेक भक्त उपस्थित रहे

सड़क पर मिली युवक की रक्तरंजित लाश

कौशाम्बी महेवा घाट थाना क्षेत्र के टिकरा गांव के पास बृहस्पतिवार की सुबह साढ़े चार बजे एक युवक उम्र लगभग 35 वर्ष की रक्तरंजित लाश पड़ी मिली है सूचना उप निरीक्षक अक्षय सिंह द्वारा थाने में दी गयी है सूचना मिलने के बाद मौके पर तमाम ग्रामीणों की भीड़ लग गई मामले की सूचना पुलिस को दी गई है मौके पर पहुँची पुलिस का कहना है कि युवक की मौत अज्ञात वाहन की टक्कर से सड़क दुर्घटना में हुई है लेकिन सड़क दुर्घटना को किसी ग्रामीण ने देखा नहीं है तमाम प्रयास के बाद युवक की पहचान नहीं हुई है यदि मृतक युवक स्थानीय होता तो उसकी पहचान हो जाती मृतक युवक यहां तक कैसे पहुंचा है यह बड़ी जांच का विषय है मौके पर कोई वाहन भी नहीं मिला है पुलिस ने मृतक के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम हाउस भेज दिया है इसके पहले भी कई थाना क्षेत्र में अज्ञात शव मिल चुके हैं

दशहरा पर्व को सकुशल शांतिपूर्वक संपन्न कराने के लिए डीएम एसपी ने किया पैदल गस्त

कौशाम्बी जिलाधिकारी मधुसूदन हुल्गी एवं पुलिस अधीक्षक बृजेश कुमार श्रीवास्तव ने गुरुवार को मंझनपुर कस्बा रोड पर पैदल मार्च करते हुए आगामी दशहरा पर्व को सकुशल, शांतिपूर्वक संपन्न कराए जाने के संबंध में आवश्यक दिशा निर्देश दिए।

भारतीय किसान मजदूर यूनियन ने कौशांबी में राम सिंह पटेल को मनोनीत किया जिला अध्यक्ष

अनुशासन हीनता में पूर्व जिला अध्यक्ष नरेंद्र पांडेय को जिला अध्यक्ष पद से हटा दिया

कोखराज कौशांबी लगभग तीन माह से भारतीय किसान मजदूर यूनियन जिला अध्यक्ष पद को लेकर उहापोह की स्थिति बनी रही गुरुवार को राष्ट्रीय उपाध्यक्ष हृदय नारायण वर्मा अपने राष्ट्रीय नेतृत्व से बातचीत कर जनपद की कमेटी भंग कर पूर्व जिला अध्यक्ष नरेंद्र पांडेय की अनुशासन हीनता से इस्तीफा लेकर चरवा के पूर्व जिला प्रवक्ता रामसिंह पटेल को भारतीय किसान मजदूर यूनियन का जिला अध्यक्ष मनोनीत किया है वा पवन यादव को जनपद का युवा जिला अध्यक्ष नियुक्त किया नागेन्द्र श्रीवास्तव को जिला सचिव चरन यादव को जिला उपाध्यक्ष मंझनपुर तहसील अध्यक्ष राज भवन मौर्या अनूप कुमार युवा जिला सचिव राजू पासी युवा जिला उपाध्यक्ष महिला सशक्तिकरण में महिला प्रकोष्ठ जिला अध्यक्ष रमा पांडेय, सिराथू तहसील अध्यक्ष नीलम पांडेय, जागृति पांडेय जिला उपाध्यक्ष ,तहसील महासचिव सुशीला देवी मनोनीत किया गया है

रामपुर बढ़नावा उपरहार में ग्राम चौपाल का हुआ आयोजन

कौशाम्बी अपर जिलाधिकारी न्यायिक प्रबुद्ध सिंह के नेतृत्व में ग्राम रामपुर बढ़नावा उपरहार परगना कड़ा तहसील सिराथू में ग्राम चौपाल का आयोजन हुआ। ग्राम में चकबन्दी अधिकारी सहायक चकबन्दी अधिकारी चकबन्दीकर्ता व चकबन्दी लेखपाल उपस्थित रहें। इसके अतिरिक्त ग्राम प्रधान व चकबन्दी समिति के सदस्यगण एवं बड़ी संख्या में ग्रामवासियों द्वारा सहभागिता की गयी। ग्राम चौपाल में सभी ग्रामवासियों से चकबन्दी की समस्याओं पर चर्चा की गयी। ग्राम रामपुर बढ़नावा उपरहार में प्रथम चक्र की चकबन्दी प्रचलित है तथा ग्राम में चक निर्माण का कार्य हो रहा है। कृषकों को अपनी-अपनी चकों हेतु सहमति पर्याप्त संख्या में देने हेतु समझाया गया तथा जनसमस्याओं को सुना गया। जिसके नियमानुसार निस्तारण हेतु अधीनस्थ अधिकारियों एवं कर्मचारियों को निर्देशित किया गया। लोगो ने बताया कि चकबन्दी न्यायालय काफी दूर है इसलिये दिक्कत होती है। इस हेतु चकबन्दी अधिकारी को निर्देशित किया गया कि इसी माह में ग्राम अदालत ग्राम में लगायी जाये तथा सूचना पक्षकारों अधिवक्ताओं को कम से कम एक सप्ताह पूर्व दी जाये। चकबन्दी अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि शीघ्र लक्ष्य के अनुसार कार्यवाही कर चकबन्दी प्रक्रियाये विधि पूर्वक सम्पन्न कराया जाए

भवन्स मेहता महाविद्यालय में सड़क सुरक्षा जागरूकता पखवाड़ा का आयोजन

भरवारी कौशाम्बी भवन्स मेहता महाविद्यालय भरवारी में 9 अक्टूबर को राष्ट्रीय सेवा योजना के तत्वावधान में सड़क सुरक्षा जागरूकता पखवाड़ा 2024 के अंतर्गत कार्यक्रम का अयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो.प्रबोध श्रीवास्तव ने किया। उन्होंने सरकार के इस अभियान के बारे में कहा कि आज की दुनिया में सड़क और परिवहन प्रत्येक मानवीय जीवन का एक अभिन्न अंग बन गया है। हर व्यक्ति किसी न किसी रूप में सड़क उपयोगकर्ता है। वर्तमान परिवहन प्रणाली ने दूरियों को कम कर दिया है लेकिन इसने दूसरी ओर जीवन के जोखिम को बढ़ा दिया है। हर साल सड़क दुर्घटनाओं में लाखों लोगों की जान चली जाती है और करोड़ों लोग गंभीर रूप से घायल हो जाते हैं।भारत में ही हर साल लगभग एक लाख सत्तर हजार लोग सड़क दुर्घटनाओं में मारे जाते हैं जो पूरी दुनिया में होने वाली कुल मृत्यु का लगभग तेरह प्रतिशत है। अधिकांश दुर्घटनाओं में चालक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ज्यादातर मामलों में दुर्घटनाएं या तो लापरवाही के कारण होती हैं या सड़क उपयोगकर्ता की सड़क सुरक्षा जागरूकता की कमी के कारण होती हैं। इसलिए सड़क सुरक्षा शिक्षा मनुष्य जीवन के लिए किसी भी अन्य बुनियादी कौशल की तरह ही आवश्यक है। उन्होंने स्वयंसेवकों को आगे संबोधित करते हुए कहा कि हमारा उद्देश्य वर्तमान और भावी सड़क उपयोगकताओं के बीच सुरक्षित सड़क उपयोगकर्ता व्यवहार को प्रोत्साहित करने के लिए सड़क उपयोगकताओं के लिए सड़क सुरक्षा जानकारी प्रदान करना है और हर साल हमारी सड़कों पर दुर्घटना के शिकार मृतकों और घायलों की संख्या को कम करना है।इस कार्यक्रम को राष्ट्रीय सेवा योजना के पूर्व कार्यक्रम अधिकारी प्रो विमलेश कुमार सिंह यादव ने संबोधित करते हुए कहा कि हमको सड़क सुरक्षा अभियान को जन जन तक पहुचाना है अतः हमारा प्रयास होना चाहिए कि इस संदेश हम लोग अपने समाज के हर तबके तक पहुचाएं।कार्यक्रम को डॉ०मोहम्मद आदिल ने संबोधित करते हुए बताया कि सड़क सुरक्षा अभियान के अन्तर्गत महाविद्यालय में विविध प्रकार की प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी।इसके उपरांत कार्यक्रम में उपस्थित समस्त स्वयंसेवको ने सड़क सुरक्षा शपथ की ली।

सिराथू नगर पंचायत में प्रशासनिक व्यवस्था,हटाए गए वैभव चौधरी

अझुवा कौशांबी सिराथू नगर पंचायत में संबद्ध किए गए कड़ा धाम के अधिशाषी अधिकारी वैभव चौधरी से शासन ने चार्ज छीनकर प्रशासनिक व्यवस्था लागू कर दी है।वैभव चौधरी को कड़ा धाम के अलावा नगर पंचायत सिराथू की भी जिम्मेदारी देकर संबद्ध किए गए थे।कड़ा धाम नगर पंचायत एक धार्मिक और पूज्य स्थल है अधिशासी अधिकारी वैभव चौधरी नगर पंचायत कड़ा धाम में पूर्ण समय नहीं दे पाते थे जिससे धार्मिक नगर पंचायत में विकास सहित विभिन्न कार्ययोजनाओं का सही से क्रियान्वयन नहीं हो पाता था ।शासन ने सिराथू नगर पंचायत में प्रशासनिक ब्यावस्था करते हुए एसडीएम सिराथू को प्रभार सौंपा है। उच्च पदस्थ सूत्र ने बताया शीघ्र ही कड़ा धाम नगर पंचायत से हटाए जाएंगे वैभव चौधरी।

नगर पालिका अध्यक्ष ने गरीब परिवार के बेटी की शादी का उठाया बीड़ा

मंझनपुर मुख्यालय के गेस्ट हाउस में विधि विधान के साथ वैवाहिक कार्यक्रम संपन्न कराया

कौशांबी नगर पालिका अध्यक्ष से बेटी की शादी के लिए मदद मांगने आए परिवार की बेटी के विवाह का बीड़ा ही अध्यक्ष ने उठा लिया उन्होंने मंझनपुर मुख्यालय के मदनलाल गेस्ट हाउस में पूरे विधि विधान के साथ बेटी का विवाह संपन्न कराया साथ ही साथ विवाह की पूरी जिम्मेदारी भी उन्होंने उठाई है नगर पालिका अध्यक्ष के इस पहल की जिले भर में सराहना हो रही है नगर पालिका मंझनपुर के एक बेहद गरीब परिवार की बालिका का गुरुवार को विवाह होना था विवाह के लिए आर्थिक मदद की उम्मीद समेटे परिवार बुधवार की शाम नगर पालिका अध्यक्ष के पास जा पहुंचा गरीब परिवार की गुहार सुनकर नगर पालिका अध्यक्ष वीरेंद्र कुमार फौजी ने उन्हें आश्वासन दिया कि वह मदद करने के बजाय बेटी की शादी का पूरा जिम्मा उठाएंगे यह सुनकर पूरा परिवार उनकी भूरी भूरी प्रशंसा करने लगा गुरुवार की सुबह ही नगर पालिका अध्यक्ष अपने सहयोगियों के साथ मंझनपुर मुख्यालय स्थित मदन लाल गेस्ट हाउस जा पहुंचे और पूरे विधि विधान के साथ गरीब परिवार के बेटी की शादी संपन्न कराया उन्होंने मौजूद लोगों से मुखातिब होते हुए कहा कि किसी भी बहन बेटी के विवाह में पैसे की अड़चन नहीं आने पाएगी इसके लिए नगर पालिका परिषद पूरी तरह से तत्पर है नगर पालिका अध्यक्ष के इस पहल की खासी सराहना हो रही है

7 वर्षों बाद बालिका के हत्यारों को आजीवन कारावास की सजा

अखंड भारत संदेश

रंजिश के चलते गोली मारकर किशोरी की हत्या करने वाले दो सगे भाइयों को कोर्ट ने सुनाई आजीवन कारावास की सजा,लगाया अर्थदंड

कौशाम्बी। करारी थाना क्षेत्र में किशोरी की हत्या के मामले की सुनवाई करते हुए बुधवार को कोर्ट ने दोषी दो सगे भाइयों को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। कोर्ट ने दोषियों पर 13-13 हजार रुपये का अर्थदंड भी लगाया है। करारी थाना क्षेत्र के गुलामीपुर गांव की सुरेखा देवी अपनी माँ के साथ खेतों की ओर गई थी। रास्ते में मां- बेटी हैंडपंप पर पानी भरने लगीं। तभी पड़ोसी विंदेश्वरी अपने भाई बचान के साथ आया और रंजिश के चलते तमंचे से फायरिंग कर दी। गोली लगने से सुरेखा की मौत हो गई थी। जबकि, उसकी मां सुनीता देवी दहशत में बेहोश हो गई थी। बाद में मृतका की मां सुनीता की तहरीर पर पुलिस ने मुकदमा दर्ज किया। मुकदमे की विवेचना के बाद पुलिस ने चार्जशीट कोर्ट में दाखिल कर दी। मुकदमा फास्ट ट्रैक कोर्ट प्रथम विष्णु देव सिंह की अदालत में चला। शासकीय अधिवक्ता अनिरुद्ध कुमार मिश्रा ने वादी समेत छह गवाह प्रस्तुत किए। दोनों पक्षों की बहस सुनने व पत्रावली में मौजूद साक्ष्यों का अवलोकन करने के बाद बुधवार को कोर्ट ने आरोपियों को हत्या का दोषी करार देते हुए अपना फैसला सुनाया,कोर्ट ने बिंदेश्वरी और बचान को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है,वही कोर्ट ने दोनो पर 13- 13 हजार रुपए का अर्थदंड भी लगाया है।

भवंस मेहता महाविद्यालय के अभाविप इकाई का हुआ गठन

कौशाम्बी अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद कौशांबी जिला द्वारा भरवारी नगर में भवंस मेहता महाविद्यालय के कार्यकारिणी का गठन किया गया इकाई गठन के दौरान जिला संगठन मंत्री अश्वनी सिंह ने बताया कि यह कार्यकारिणी परिसर में विभिन्न गतिविधियों द्वारा कार्य करने के लिए बनाई गई है विद्यार्थियों को कोई समस्या ना हो इसके लिए यह कार्यकारिणी वर्ष भर महाविद्यालय में कार्य करेगी ।जैसे पर्यावरण, कला, सेवा,खेल जैसे विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से भी विद्यार्थी परिषद कार्य करेगी अगले शनिवार से परिसर में क्लीन केंपस ग्रीन केंपस का भी कार्यक्रम शुरू होगा। जिला प्रमुख डॉ. प्रबोध श्रीवास्तव ने सभी पदाधिकारी की घोषणा की जिसमें इकाई अध्यक्ष शिव शंकर मौर्य ,उपाध्यक्ष दीपाली, सत्यम ,प्रत्यक्ष शुक्ला, श्लोक मौर्य, इकाई मंत्री शोभा पाल, इकाई सह मंत्री सचिन कुमार, अभिषेक कुमार, सुरेश कुमार अजय तिवारी स्टूडेंट फॉर डेवलपमेंट संयोजक सचिन साहू,सहसंयोजक अभिषेक कुमार,अभिषेक केशरवानी अतुल विश्वकर्मा ,खेलो भारत संयोजक अरविंद कुमार, सहसंयोजक नीरज कुमार अखिलेश कुमार,अभिषेक भारती सेवार्थ विद्यार्थी संयोजक रोहित कुमार ,सहसंयोजक विपिन कुमार, सोनू मौर्य, राष्ट्रीय कला मंच संयोजक रूषमा एवं सहसंयोजक स्नेहा, सोशल मीडिया संयोजक विपिन कुमार एवं विज्ञान संकाय अध्यक्ष दयाशंकर ,कला संकाय अध्यक्ष पंकज कुमार एवं कला शंकर उपाध्यक्ष नीरज मौर्य एवं अनुराग केसरवानी, राकेश कुमार, शिवकुमार ,रोहन कुमार को महाविद्यालय कार्यकारिणी का सदस्य निर्वाचित किया गया

न्यायालय के स्थगन के बाद हिस्ट्री शीटर कर रहा जमीन पर कब्जा

पुलिस चौकी में सुनवाई ना होने पर एसपी से किया फरियाद

कौशाम्बी। चरवा थाना क्षेत्र के चौराडीह गांव में श्रीकांत पांडेय पुत्र राजेंद्र कुमार पांडेय की आराजी संख्या 1223 पर क्षेत्र का बड़ा अपराधी हिस्ट्रीशीटर बांकेलाल पुत्र भिखारी निवासी चौराडीह जबरिया कब्जा कर रहा था जिस पर ग्राम न्यायालय चायल ने स्थगन आदेश पारित किया कि वादी के कब्जा दखल में हस्तक्षेप ना करें लेकिन इसके बावजूद न्यायालय के आदेश की अवहेलना करते हुए हिस्ट्री सीटर बांकेलाल ने स्थानीय चौकी पुलिस बरियावा से साठगांठ करके न्यायालय के स्थगन आदेश के विपरीत जमीन पर सीमेंट का पिलर उठाकर टीन सेट डाल करके जमीन कब्जा कर लिया है मामले की शिकायत चरवा थाना पुलिस से हुई जिस पर चौकी इंचार्ज बरियावा को निर्देशित दिया कि न्यायालय ने कोई आदेश दिया है तो उसका अनुपालन कराए लेकिन थानेदार का आदेश भी चौकी इंचार्ज मानने को तैयार नहीं है चौकी इंचार्ज जमीन में कब्जा कराने के लिए हिस्ट्री सीटर को बल दे रहे हैं जमीन कब्जा करने से रोकने पर हिस्ट्री सीटर बांकेलाल गाली गलौज कर रहा है लड़ाई झगड़ा कर रहा है और हत्या करने का प्रयास कर रहा है पीड़ित का कहना है कि हम दहशत खाकर के पूरे परिवार उससे दूर रहना चाहते हैं लेकिन उसके बाद वह जमीन पर कब्जा कर रहा है पीड़ित ने अपनी जमीन में पहले से दो ट्रैक्टर बालू और 5 हजार ईट रक्खे हुए थे जिसकी 55 हजार कीमत है बालू और ईंट हिस्ट्रीशीटर बांकेलाल चोरी कर के उठा ले गया हैपीड़ित ने कहा कि अदालत के आदेश का पालन कराया जाए चौकी इंचार्ज बरियावा कुछ दबाव वा लालच में विवाद उत्पन्न करा करके जमीन कब्जा कराने पर उतावले हैं हिस्ट्रीशीटर की निगरानी कर उस पर कठोर कार्रवाई करने के बजाय चौकी इंचार्ज उसको नजर अंदाज कर रहे हैं वह खुलेआम क्षेत्र में घूम रहा है और अपराध कर रहा है और एससी एसटी सहित विभिन्न तरीके के फर्जी मुकदमे में फसाने की लगातार धमकी दे रहा है पीड़ित ने कहा कि जमीन में कब्जा दखल में हस्तक्षेप करने से हिस्ट्रीशीटर बांकेलाल को रोका जाए और जो उसने पिलर खड़ा करके टीन सेट डाल लिया है उसको ध्वस्त कराया जाए ईट और बालू चोरी कर ली है उसे वापस दिलाया जाए और हिस्ट्री सीटर बांकेलाल को बल देने वाले पुलिस चौकी बरियावा के इंचार्ज के कारनामे की जांच करते हुए इन्हें भी दंडित किया जाए

आत्मनिर्भर निधि ऋण का 03 दिवस के अन्दर शत-प्रतिशत लक्ष्य की करे पूर्ति : एडीएम

कौशाम्बी कलेक्ट्रेट के सम्राट उदयन सभागार में जिलाधिकारी (वि0/रा0) कौशाम्बी द्वारा प्रधानमंत्री स्ट्रीट वेन्डर्स आत्मनिर्भर निधि (पीएम स्वनिधि) योजनान्तर्गत शासन द्वारा आवंटित लक्ष्य के सापेक्ष नगर निकायो व जिला नगरीय विकास अभिकरण (डूडा) द्वारा गयी प्रगति की समीक्षा बैठक की गयी। योजनान्तर्गत प्रथम ऋण रू०10,000/-) हेतु शासन द्वारा 8013 का लक्ष्य निर्धारित के सापेक्ष 7420 ही लाभार्थियों को ऋण उपलब्ध कराया गया है, नगर निकाय मंझनपुर, अझुवा, चरवा व दारानगर कड़ाधाम द्वारा लक्ष्य की पूर्ति शत-प्रतिशत न किये जाने, इस प्रकार योजनान्तर्गत द्वितीय ऋण (रू0 20,000/-) हेतु आवंटित लक्ष्य 3881 के सापेक्ष 1996 एवं तृतीय ऋण (रू0 50,000/-) हेतु आवंटित लक्ष्य 365 के सापेक्ष 248 लाभार्थियों को ऋण दिलाया गया है, जिस अपर जिलाधिकारी (वि0/रा0) द्वारा नाराजगी व्यक्ति करते हुयें 03 दिवस के अन्दर शत-प्रतिशत लक्ष्य की पूर्ति कियें जाने हेतु समस्त नगर निकायो के अधिशासी अधिकारियों व जिला अग्रणी बैंक प्रबंधक कौशाम्बी को आदेशित किया गया।

सम्पादकीय

जम्मू-कश्मीर में उम्मीदों की सरकार

हिंसा और राज्य समर्थित दमन के 10 वर्षों के बाद जम्मू-कश्मीर में कांग्रेस व नेशनल कांफ्रेंस की गठबन्धन वाली सरकार बनी है तो स्वाभाविकतः लोगों के मन में उसे लेकर बड़ी उम्मीदें हैं। ये आशाएं केवल उस राज्य में रहने वालों को ही नहीं वरन देश-विदेश में रहने वाले हर उस व्यक्ति की हैं जो उस राज्य की स्थिति को लेकर दुखी हैं। 5 अगस्त, 2019 को भारतीय जनता पार्टी की केन्द्र सरकार ने संविधान के अनुच्छेद 370 को समाप्त कर जम्मू-कश्मीर का विशेष राज्य का दर्जा छीन लिया था। वहां आतंकवाद के सफाये के नाम पर नागरिकों पर जुल्म ढाये गये। पिछले एक दशक तक प्रदेश प्रतिनिधित्व विहीन रहा। भाजपा का एक नुमाइंदा प्रशासक बनकर राज्य को हांकता रहा। इसे लेकर जो बड़े-बड़े दावे भाजपा और केन्द्र सरकार ने किये थे, वे कुछ भी पूरे नहीं हुए। उल्टे जम्मू-कश्मीर विकास की दौड़ में पिछड़ता चला गया। नयी सरकार से लोगों को उम्मीद है कि वह लोगों के जख्मों पर मरहम लगाये और सूबे को विकसित करे। हिंसा और नफरत को खत्म कर यहां कश्मीरियत की वह इबारत फिर से लिखे जाने की जरूरत है, जिसे पिछले बरसों में पूर्णतः मिटाने की कोशिश की गयी। इस प्रांत में रहने वालों के प्रति भाजपा की घृणा जगजाहिर है। इसी नफरती भावना के चलते 370 समाप्त तो कर दी गयी लेकिन केन्द्र सरकार को उसके बाद यह नहीं पता चल सका कि अब क्या करना है। बताया गया था कि अनुच्छेद 370 ही सारी समस्याओं की जड़ है और इसके हटते ही कश्मीर में शांति और विकास की गंगा बहने लगेगी। वैसे साफ था कि केन्द्र सरकार की दिलचस्पी जम्मू-कश्मीर के लोगों में नहीं बल्कि यहां के व्यवसाय और यहां की जमीनों को हड़पने में है। आरोप लगे कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी यहां के प्रमुख कारोबार अपने व्यवसायी मित्रों को सौंपना चाहते हैं।

सम्भवतः बाद में उन्हें और उनके दोस्तों को एहसास हुआ होगा कि इस प्रांत को सम्हालना वैसा आसान नहीं है. जैसा वे सोच रहे थे। हकीकत यह है कि धारा 370 के खत्म करने से यहां कुछ भी हासिल नहीं हुआ। नागरिकों का जो नुकसान हुआ वह अपनी जगह पर है। जम्मू-कश्मीर की जो नयी सरकार बनने जा रही है, उसे कुछ बातों का ख्याल रखना होगा। पहली तो यह कि सरकार को गिराने की हरसम्भव कोशिश होगी क्योंकि यह भाजपा की नाक का सवाल है और ध्रुवीकरण का उपकरण भी। प्रचारित यह किया गया था कि अनुच्छेद 370 हटने से यहां के नागरिक खुश हैं और खुशहाली बहाल हुई है। सत्ता पाने के लिये जम्मू में 5 सीटें बढ़ाई भी गईं। फिर, एक अशांत सीमा से लगे होने के कारण केन्द्र के माध्यम से भाजपा द्वारा प्रदेश सरकार को अस्थिर करने की भरपूर कोशिशें होंगी। जम्मू-कश्मीर के जो हालात हैं, ऐसे अवसर मिल सकते हैं। न हों तो बनाये जा सकते हैं। भाजपा का कुख्यात 'ऑपरेशन लोटस' फिर से सक्रिय करने के भी प्रयास होंगे। हालांकि नयी विधानसभा में जो दलीय स्थिति है, उसके चलते फिलहाल उसकी गुंजाइश नहीं है परन्तु भाजपा इस सरकार को गिराने के रास्ते तैयार करती ही रहेगी।

संघर्षों के बीच सफलता की कहानी लिखती बालिकाएं

- ललित गर्ग-

दुनियाभर में बालिकाओं को सम्मान एवं समानतापूर्ण जीवन में हिस्सेदारी बढ़ाने, उसके सेहतमंद जीवन से लेकर शिक्षा और करियर के लिए मार्ग बनाने के उद्देश्य से हर साल 11 अक्तूबर को अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया जाता है। इस दिन बालिकाओं को उनके अधिकारों और बालिका सशक्तिकरण के प्रति जागरूक किया जाता है। भारत समेत कई देशों में बालिकाओं को कई तरह की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। एक बच्ची के जन्म से लेकर परिवार में उसकी स्थिति, शिक्षा के अधिकार और करियर में महिलाओं के विकास में आने वाला बाधाओं को दूर करने के लिए जागरूकता फैलाना ही इस दिवस का उद्देश्य है। इस दिवस का उद्देश्य है कि दुनियाभर की बालिकाओं की आवाज को सशक्त करना और आने वाली चुनौतियों और उनके अधिकारों के संरक्षण के बारे में जागरूकता पैदा करना। वर्ष 2024 के इस दिवस की थीम है भविष्य के लिए बालिकाओं का दृष्टिकोण, जो बालिकाओं की आवाज की शक्ति और भविष्य के लिए दृष्टि से प्रेरित, तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता और सतत आशा, दोनों को व्यक्त करता है।

आज की बालिकाओं की एक सम्पूर्ण पीढ़ी जलवायु, संघर्ष, युद्ध, गरीबी, मानव अधिकारों और लैंगिक असमानता जैसे वैश्विक संकटों से जूझ रही है। बहुत सी लड़कियों को अभी भी उनके अधिकारों से वंचित रखा जाता है, जिससे उनके विकल्पों पर प्रतिबंध लगता है और उनका भविष्य सीमित हो जाता है। फिर भी हाल ही में किए गए विश्लेषण से पता चलता है कि लड़कियाँ न केवल संकट का सामना करने में साहसी हैं, बल्कि भविष्य के लिए आशावान भी हैं। हर दिन, वे एक ऐसी दुनिया की कल्पना को साकार करने के लिए कदम उठा रही हैं जिसमें सभी लड़कियों को सुरक्षा, सम्मान और अधिकार प्राप्त हों। इस खास दिन मनाने का मुख्य उद्देश्य बालिकाओं यानी नारी शक्ति को आत्मनिर्भर बनाना है, ताकि वे भी देश और समाज के विकास में योगदान दे सकें। देश एवं दुनिया में लड़कियों के लिये ज्यादा समर्थन और नये मौके देने के लिये इस उत्सव की विशेष प्रासंगिकता है। बालिका शिशु के साथ भेद-भाव एक बड़ी समस्या है जो कई क्षेत्रों में फैला है जैसे शिक्षा में असमानता, पोषण, कानूनी अधिकार, चिकित्सीय देख-रेख, सुरक्षा, सम्मान, बाल विवाह आदि। ये बहुत जरूरी है कि विभिन्न प्रकार के सामाजिक भेदभाव और शोषण को समाज से पूरी तरह से हटाया जाये जिसका हर रोज लड़कियाँ अपने जीवन में सामना करती हैं।

एक गैर सरकारी संगठन ने प्लान इंटरनेशनल प्रोजेक्ट के रूप में अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस मनाने की शुरूआत की। इस एनजीओ ने एक अभियान चलाया, जिसका नाम ह्यक्योंकि मैं एक लड़की हूंह्ल रखा गया। इस अभियान को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर फैलाने के लिए कनाडा सरकार ने एक आम सभा में अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस मनाने का प्रस्ताव रखा। 19 दिसंबर 2011 के दिन संयुक्त राष्ट्र ने इस प्रस्ताव को पारित किया और 11 अक्तूबर 2012 को पहली बार अंतरराष्ट्रीय बालिका दिवस मनाया गया और उस समय इसकी थीम ह्लबाल विवाह को समाप्त करनाह्व था। आज दुनिया में कन्याओं एवं बालिकाओं के समग्र विकास के साथ उनके जीवन को सुरक्षित करना ज्यादा जरूरी है, क्योंकि छोटी बालिकाओं पर हो रहे अन्याय, अत्याचारों की एक लंबी सूची रोज बन सकती है। न मालूम कितनी अबोध बालिकाएं, कब तक ऐसे जुल्मों का शिकार होती रहेंगी। कब तक अपनी मजबूरी का फायदा उठाने देती रहेंगी। सख्त कानूनों के बावजूद, देश में हर 15 मिनट पर एक बालिका यौन अपराध का शिकार होती है। निर्भया मामले में जनांदोलन के बाद सख्त कानून बनने के बावजूद देश में बलात्कार एवं बाल-दुष्कर्म मामलों में भारी बढ़ोतरी हुई है।

समाज में व्याप्त अत्यधिक गरीबी ने

बालिकाओं के खिलाफ सामाजिक बुराई जैसे दहेज प्रथा को जन्म दिया है जिसने बालिकाओं की स्थिति को बद से बदतर बना दिया है। आमतौर पर माता-पिता सोचते हैं की लड़कियां केवल रुपये खर्च कराती है जिसके कारण वो लड़कियों को बहुत से तरीकों (कन्या भ्रूण हत्या, दहेज के लिये हत्या) जन्म से पहले या बाद में मार देते हैं, कन्याओं या महिलाओं को बचाने के लिये ये मुद्दे समाज से बहुत शीघ्र खत्म करने की आवश्यकता है। हम तालिबान-अफगानिस्तान आदि देशों में बच्चियों एवं महिलाओं पर हो रही क्रूरता, बर्बरता, शोषण की चचाओं में मशगूल दिखाई देते हैं लेकिन भारत में आए दिन नाबालिग बच्चियों से लेकर वृद्ध महिलाओं तक से होने वाली छेड़छाड़, बलात्कार, हिंसा की घटनाएं पर क्यों मौन साध लेते हैं? इस देश में जहां नवरात्र में कन्या पूजन किया जाता है, लोग कन्याओं को घर बुलाकर उनके पैर धोते हैं और उन्हें यथासंभव उपहार देकर देवी मां को प्रसन्न करने का प्रयास करते हैं वहीं इसी देश में बेटियों को गर्भ में ही मार दिये जाने एवं नारी अस्मिता एवं अस्तित्व को नौंचने की त्रासदी भी है। इन दोनों कृत्यों में कोई भी तो समानता नहीं बल्कि गजब का विरोधाभास दिखाई देता है।

दुनियाभर में बालिकाओं के अस्तित्व एवं अस्मिता के लिये जागरूकता एवं आन्दोलनों के बावजूद बालिकाओं पर अत्याचार बढ़ते जा रहे हैं। हमारे देश में भी बालिकाओं की स्थिति, कन्या भ्रूण हत्या की बढ़ती घटनाएं, लड़कियों की तुलना में लड़कों की बढ़ती संख्या, तलाक के बढ़ते मामले, गांवों में बालिका की अशिक्षा, कुपोषण एवं शोषण, बालिकाओं की सुरक्षा, बालिकाओं के साथ होने वाली बलात्कार की घटनाएं, अश्लील हरकतें और विशेष रूप से उनके खिलाफ होने वाले अपराधों पर प्रभावी चर्चा एवं कठोर निर्णयों से एक सार्थक वातावरण का निर्माण किये जाने की अपेक्षा है। क्योंकि एक टीस-सी मन में उठती है कि आखिर बालिकाओं कब तक भोग की वस्तु बनी रहेगी? उसका जीवन कब तक खतरों से घिरा रहेगा? बलात्कार, छेड़खानी, भ्रूण हत्या और दहेज की धधकती आग में वह कब तक भस्म होती रहेगी? कब तक उसके अस्तित्व एवं अस्मिता को नौचा जाता रहेगा? दरअसल छोटी लड़कियों या महिलाओं की स्थिति अनेक मुस्लिम और अफ्रीकी देशों में दयनीय है। जबकि अनेक मुस्लिम देशों में महिलाओं पर अत्याचार करने वालों के लिये सख्त सजा का प्रावधान है, अफगानिस्तान-तालिबान का अपवाद है। वहां के तालिबानी शासकों ने महिलाओं को लेकर जो फरमान जारी किए हैं वो महिला-विरोधी होने के साथ दिल को दहलाने वाले हैं। दुनिया की बड़ी शक्तियों को इन बालिकाओं के स्वतंत्र अस्तित्व को बचाने के लिये आगे आना चाहिए। तमाम जागरूकता एवं सरकारी प्रयासों के भारत में भी बालिकाओं की स्थिति में यथोचित बदलाव नहीं आया है। भारत में भी जब कुछ धर्म के ठेकेदार हिंसात्मक और आक्रामक तरीकों से बालिकाओं को सार्वजनिक जगहों पर नैतिकता का पाठ पढ़ाते हैं तो वे भी तालिबानी ही नजर आते हैं। विरोधाभासी बात यह है कि जो लोग बालिकाओं को संस्कारों की सीख देते हैं, उनमें से बहुत से लोग, धर्मगुरु, राजनेता एवं समाजसुधारक महिलाओं एवं बालिकाओं के प्रति कितनी कुत्सित मानसिकता का परिचय देते आए हैं, यह तथ्य किसी से छिपा नहीं है। इनके चरित्र का दोहरापन जगजाहिर हो चुका है। कोई क्या पहने, क्या खाए, किससे प्रेम करे और किससे शादी करें, सह-शिक्षा का विरोधी नजरिया- इस तरह की पुरुषवादी सोच के तहत बालिकाओं को उनके हकों से वंचित किया जा रहा है, उन पर तरह-तरह की बंदिशें एवं पहरे लगाये जा रहे हैं। ह्ययत्र पूज्यंते नार्यस्तु तत्र रमन्ते देवताह्ल- जहां नारी की पूजा होती है, वहां देवता निवास करते हैं। किंतु आज हम देखते हैं कि नारी का हर जगह अपमान होता चला जा रहा है। उसे ह्यभोग की वस्तुह्ल समझकर आदमी ह्यअपने तरीकेह्ल से ह्यइस्तेमालह्ल कर रहा है, यह बेहद चिंताजनक बात है। आज अनेक शक्लों में नारी के वजूद को धुंधलाने की घटनाएं शक्ल बदल-बदल कर काले अध्याय रच रही है। बावजूद इसके सही समर्थन, संसाधन और अवसरों के साथ, दुनिया की 1.1 बिलियन से ज्यादा लड़कियों की क्षमता असीम है और जब लड़कियां नेतृत्व करती हैं, तो इसका प्रभाव तत्काल और व्यापक होता है। परिवार, समुदाय और अर्थव्यवस्थाएं सभी मजबूत होती हैं, हमारा भविष्य उज्जवल होता है। अब समय आ गया है कि लड़कियों की बात सुनी जाए, ऐसे सिद्ध समाधानों में निवेश किया जाए जो भविष्य की ओर प्रगति को गति देंगे, जिसमें हर लड़की अपनी क्षमता का पूरा उपयोग कर सकेगी।

जम्मू-कश्मीर में नेशनल कान्फ्रेंस-कांग्रेस की जीत के साथ बदलाव की जमीन तैयार

- सुशील कुट्टी

जम्मू-कश्मीर विधानसभा की 90 सीटों के लिए 873 उम्मीदवारों ने चुनाव मैदान में अपना भाग्य आजमाया। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी ने हार मान ली। महत्वपूर्ण बात यह है कि एनसी-कांग्रेस गठबंधन की जीत के साथ जम्मू-कश्मीर में बहुत कुछ बदलने वाला है। एक तो यह कि भाजपा के पंख कट गये हैं। न उपराज्यपाल अब 'राजा' की तरह होंगे और न ही केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह 'सम्राट' की तरह।

भारतीय जनता पार्टी जम्मू-कश्मीर विधानसभा चुनाव हार गयी। नेशनल कॉन्फ्रेंस-कांग्रेस गठबंधन ने जीत दर्ज की। नेशनल कॉन्फ्रेंसके अध्यक्ष फारूक अब्दुल्ला ने घोषणा की कि उमर अब्दुल्ला अगले मुख्यमंत्री होंगे। घाटी ने नेशनल कॉन्फ्रेंस-कांग्रेस गठबंधन के लिए भारी मतदान किया था। जम्मू के हिंदुओं ने भाजपा को अपना चेहरा बचाने वाला एक मौका दिया, लेकिन उस हद तक नहीं, जिसकी भाजपा को उम्मीद थी। कांग्रेस जम्मू क्षेत्र में एनसी-कांग्रेस उम्मीदवारों की जीत अधिक संख्या में दर्ज कर सकती थी परन्तु इसमें उनसे चूक हो गयी।

जम्मू-कश्मीर विधानसभा की 90 सीटों के लिए 873 उम्मीदवारों ने चुनाव मैदान में अपना भाग्य आजमाया। पीपुल्स डेमोक्रेटिक पार्टी ने हार मान ली। महत्वपूर्ण बात यह है कि एनसी-कांग्रेस गठबंधन की जीत के साथ जम्मू-कश्मीर में बहुत कुछ बदलने वाला है। एक तो यह कि भाजपा के पंख कट गये हैं। न उपराज्यपाल अब 'राजा' की तरह होंगे और न ही केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह 'सम्राट' की तरह।

महत्वपूर्ण बात यह है कि नेशनल कॉन्फ्रेंसके पक्ष में किस्मत नहीं थी। नेशनल कॉन्फ्रेंस-कांग्रेस की सीटें लोगों के जनादेश के दम पर भारी बहुमत से आगे निकल गयीं, जो ज्यादातर नेशनल कान्फ्रेंस के पक्ष में था। वास्तव में, कांग्रेस एनसी के पाले में लटकी रही। इतना ही नहीं, यहां तक कि इंजीनियर रशीद, जिन्होंने लोकसभा चुनाव में उमर अब्दुल्ला को बारामुल्ला निर्वाचन क्षेत्र से हराया था, भी एनसी के शानदार प्रदर्शन में कोई बदलाव नहीं कर पाये।

नेशनल कॉन्फ्रेंस की तुलना में पीडीपी को करारी हार का सामना करना पड़ा। ऐसा लग रहा था कि कश्मीर के मतदाता कश्मीर क्षेत्र से स्पष्ट विजेता चाहते थे, न कि विभाजित जनादेश, जिससे किसी भी क्षेत्रीय विजेता को अनुच्छेद 370 के निरस्तीकरण से उत्पन्न समस्याओं को हल करने का मौका न मिले। कश्मीरी मुसलमान भारत के बाकी हिस्सों के मुसलमानों से अलग नहीं हैं। वे भी केंद्र के प्रति बहुत आभारी नहीं हैं क्योंकि आतंकवादियों द्वारा मारे जाने और बच जाने के बाद भी आज उनका जीवन कम नारकीय नहीं हो गया है। उस समय भी नहीं जब पत्थरबाजी एक दैनिक घटना थी।

स्वतंत्र उम्मीदवार, जिन पर भाजपा ने भरोसा किया था, भी हार गये। नेशनल कॉन्फ्रेंस/कांग्रेस के उम्मीदवारों ने कई निर्वाचन क्षेत्रों में पीडीपी उम्मीदवारों को हराया, लेकिन इसने अब्दुल्ला परिवार को महबूबा की ओर दोस्ताना हाथ बढ़ाने से नहीं रोका। जीत में उदारता! परिणाम लगभग ऐसे थे जैसे पीडीपी ने चुनाव ही नहीं लड़ा था। इल्तिजा मुफ्ती तो मुफ्ती परिवार के गढ़ बिजबेहरा में भी हार गयीं।

यह कहा गया किये विधानसभा चुनाव 2014 के बाद से जम्मू और कश्मीर के पहले चुनाव थे। साथ ही, जम्मू और कश्मीर को केंद्र शासित प्रदेश घोषित किये जाने के बाद भी ये पहले चुनाव थे। खास बात यह है कि भारत के संविधान के अनुच्छेद 370 के निरस्त होने के बाद यह पहला चुनाव था। एग्जिट पोल ने त्रिशंकु सदन की भविष्यवाणी की थी, लेकिन यह पता चला कि जम्मू-कश्मीर के मतदाताओं की धारणा बिल्कुल अलग थी। सुबह 8 बजे से ही वोटों की गिनती शुरू हो गयी थी और तभी से यह स्पष्ट था।

हिंसा की कोई घटना नहीं हुई, मानो तथाकथित 'उग्रवादी' भी यह देखने के लिए इंतजार कर रहे थे कि नतीजे किसके पक्ष में आते हैं। छह साल के अंतराल के बाद एक नयी सरकार चुनी जानी थी। 20 जून, 2018 को पीडीपी-भाजपा शासन का पतन हो गया था। इसके बाद अनुच्छेद 370 को निरस्त कर दिया गया। जम्मू-कश्मीर के लाखों लोग इन चुनावों का इंतजार कर रहे थे। चुनाव परिणाम से पता चला कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 'विकास कार्यों' से जम्मू-कश्मीर के अधिसंख्य लोग प्रभावित नहीं हुए।

जम्मू-कश्मीर को उसके 'राज्य-दर्जा' में वापस लाने के लिए सर्वोच्च न्यायालय की समय सीमा भी है। समय सीमा का पालन करना होगा। बहाने बर्दाश्त नहीं किये जायेंगे। जम्मू-कश्मीर दो केंद्र शासित प्रदेशों- जम्मू-कश्मीर और लद्दाख के रूप में बना हुआ है। ऐसी दबी हुई खबरें हैं कि लद्दाख को जम्मू-कश्मीर में वापस लौटने में कोई आपत्ति नहीं होगी।

कांग्रेस-नेशनल कॉन्फ्रेंस गठबंधन यह सुनिश्चित करेगा कि सर्वोच्च न्यायालय की समय-सीमा का पालन किया जाये। इंडिया गठबंधन, जिसमें नेशनल कॉन्फ्रेंसएक घटक है, भी इस पर विचार करेगा।

नेशनल कॉन्फ्रेंस के अध्यक्ष फारूक अब्दुल्ला ने सोमवार को कहा था कि नेशनल कॉन्फ्रेंस महबूबा मुफ्ती की पीडीपी के साथ सहयोग करने के लिए तैयार है, जिसकी अब आवश्यकता नहीं है। अब्दुल्ला ने कहा कि उपराज्यपाल को पांच आरक्षित सीटों पर यादच्छिक लोगों को नामित करने का कोई अधिकार नहीं है। एनसी-कांग्रेस गठबंधन ने इस फैसले को सर्वोच्च न्यायालय में चुनौती देने की योजना बनाई है। पांच नामित सदस्यों के आने से विधानसभा की संख्या 95 हो जायेगी और बहुमत का आंकड़ा 48 हो जायेगा।

विधानसभा चुनाव तीन चरणों में हुए थे। 18 सितंबर, 25 सितंबर और 1 अक्टूबर को। अब सभी को राहत मिली कि चुनाव शांतिपूर्ण तरीके से संपन्न हो गये। वास्तव में, यह केंद्र की उपलब्धि थी। सभी मतगणना केंद्रों पर तीन-स्तरीय सुरक्षा व्यवस्था के साथ मतगणना की गयी। कोई नहीं कह सकता कि कश्मीर में कब विस्फोट हो जाये।

जम्मू-कश्मीर चुनाव में पाकिस्तान की भी दिलचस्पी है। आतंकवाद, उग्रवाद और सीमा पार से घुसपैठ सभी इस 'मित्रवत पड़ोसी' की बदौलत हैं। सवाल यह है कि जम्मू-कश्मीर में नागरिक सरकार की वापसी से पाकिस्तान के साथ आधिकारिक या अन्यथा संबंधों पर क्या असर पड़ेगा? नेशनल कॉन्फ्रेंस और कांग्रेस दोनों ही चाहते हैं कि भारत-पाक वार्ता फिर से शुरू हो। मोदी के नेतृत्व वाली एनडीए सरकार कम से कम फिलहाल पाकिस्तान के साथ किसी भी तरह के संबंध रखने के खिलाफ है। केंद्र और जम्मू-कश्मीर सरकार के बीच टकराव होना तय है। राज्य के लोग और घाटी के लोग विरोध करेंगे। अलगाववादी अपनी मांगों और विरोध के अपने तरीके के साथ प्रतिशोधात्मक तरीके से फिर उभर सकते हैं

अनुच्छेद 370 एनसी-कांग्रेस गठबंधन सरकार के लिए परेशानी का सबब बन सकता है। बेशक, जब तक इंडिया गठबंधन सत्ता में नहीं आता, तब तक कुछ नहीं किया जा सकता। अनुच्छेद 370 की वापसी के लिए तो बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री एन. चंद्रबाबू नायडू को भारत में मोदी शासन के खिलाफ विद्रोह करने के लिए राजी करना होगा!

लद्दाख से उठी हिमालय की आवाज

- कुलभूषण उपमन्यु

मनुष्य समाज और प्रकृति-तन्त्र का संतुलित रिश्ता ही पारिस्थितिकीय संतुलन का आधार है। हमारा आज का विकास का मॉडल इस तत्व की अनदेखी कर रहा है। हम सोचने लगे हैं कि सभी समस्याओं के समाधान इंजीनियरिंग और तकनीकी से मिल सकते हैं, किन्तु ऐसा है नहीं। हम पानी का एक कतरा, हवा का एक श्वास, मिट्टी का एक ढेला, प्रकृति के तत्वों का प्रयोग किए बिना बना नहीं सकते। लद्दाख से एक सितंबर को शुरू हुई 1000 किमी. की पैदल और यदा-कदा वाहन यात्रा करके दिल्ली की सीमा पर पहुंचे एक्टिविस्ट सोनम वांगचुक को उनके 150 साथियों के साथ हिरासत में ले लिया गया है। लद्दाख को 'छठी अनुसूची' में शामिल करने की मांग के साथ सोनम वांगचुक ने लद्दाख से यह यात्रा शुरू की थी। उन्हें एक अक्टूबर को राजधानी के सिंघु बार्डर से हिरासत में लिया गया। पुलिस का कहना है कि शहर में निषेधाज्ञा लागू होने के कारण सोनम और उनके साथियों को रोका गया, लेकिन जब वे नहीं रुके तो उन्हें हिरासत में ले लिया गया। सोनम जी के नेतृत्व में यह टोली हिमालय के दर्द बांटते हुए उसके संरक्षण का संदेश लेकर 2 अक्टूबर, 'गांधी जयन्ती' के दिन दिल्ली के राजघाट (गांधी समाधि) पंहुचने की उम्मीद रखते थे।

बरसों से पदयात्रा भारत में जनहित, आध्यात्मिक संदेश पंहुचाने और समाज को जगाने का सशक्त माध्यम रहा है। सोनम जी की यात्रा को मार्ग में जगह-जगह मिला समर्थन साबित कर रहा है कि पदयात्रा आज भी शुद्ध जनहित और आध्यात्मिक संदेश फैलाने का सशक्त माध्यम है, जिसकी प्रासंगिकता असंदिग्ध है, बशर्ते यात्रा का लक्ष्य स्वार्थ-जनित न हो। हिमाचल और गढ़वाल की 'हिमालय बचाओ संपर्क वाहन यात्रा' के दौरान भी सवाल उठे थे कि 'जब हिमालय तुम्हें बचा रहा है तो तुम हिमालय को बचाने वाले कौन होते हो,' तो जवाब होता था कि हिमालय की हमें बचाने की शक्ति हमारी गलत विकास की गतिविधियों और हमारे लालच के कारण अति-दोहन के चलते नष्ट हो रही है।

हिमालय को बचाने का अर्थ है, हिमालय की वायु को शुद्ध करने की शक्ति, जल-संरक्षण की शक्ति, जलवायु नियंत्रण की शक्ति, जैव-विविधता द्वारा देश की सेवा करने की शक्ति, थके-हारे मानस को शांति प्रदान करने की शक्ति, सदानीरा नदी-तन्त्र द्वारा सेवा करने की शक्ति को लालच के लिए नुकसान पहुंचाने से बचाना और नुकसान पहुंचाने वालों को रोकना ही हिमालय को बचाना है।

हिमालय के जो प्राकृतिक और सांस्कृतिक अवदान हैं उनको बचाना सोनम वांगचुक और उनके साथियों की इस यात्रा का मूल उद्देश्य है। हिमालय सांस्कृतिक विविधता का भी भंडार है। किसी भी समाज के दीर्घकालिक हित के लिए सांस्कृतिक विविधता बहुत आवश्यक तत्व है। हिमालय में यदि बर्फ न रहे तो हिमालय का क्या अर्थ रह जाएगा। किसी भी पारिस्थितिकी तंत्र में वहां के समाजों का होना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

मनुष्य समाज और प्रकृति-तन्त्र का संतुलित रिश्ता ही पारिस्थितिकीय संतुलन का आधार है। हमारा आज का विकास का मॉडल इस तत्व की अनदेखी कर रहा है। हम सोचने लगे हैं कि सभी समस्याओं के समाधान इंजीनियरिंग और तकनीकी से मिल सकते हैं, किन्तु ऐसा है नहीं। हम पानी का एक कतरा, हवा का एक श्वास, मिट्टी का एक ढेला, प्रकृति के तत्वों का प्रयोग किए बिना बना नहीं सकते। जिन्दा रहने के लिए हवा, पानी और भोजन ही सबसे बुनियादी जरूरतें हैं। हमारा विकास इन्हीं पर आघात कर रहा है। ग्लेशियर पिघल रहे हैं, जिससे नदियों के अस्तित्व पर खतरा आ गया है। वे मौसमी होकर रह जाएंगी। मिट्टी हमारी रासायनिक खेती की पद्धति द्वारा जहरीली होती जा रही है, वही जहर हमारे खाद्य पदार्थों में पहुंच रहे हैं। हवा को सभ्यता का धुआं जहरीला कर रहा है तो संकट जिन्दा रहने पर आने वाला है। सबसे संवेदनशील परिस्थिति-तन्त्र होने के नाते हिमालय पर होने वाले दुष्प्रभाव अधिक घातक होंगे और पूरे देश को प्रभावित करेंगे।

लोग अब इन मुद्दों को समझने लगे हैं इसीलिए लद्दाख की आवाज को हिमाचल और उत्तराखंड में इतना समर्थन मिल रहा है। असल में यह आवाज पूरे हिमालय की है। मुख्यधारा के विकास मॉडल से यहां जो परिस्थिति-तंत्र को नुक्सान हो रहा है उसकी और अधिक अनदेखी पूरे देश के लिए घातक सिद्ध होगी। हिमालय बचा रहेगा तो पूरा देश बचा रहेगा। हिमालय के लोगों की विकास की जरूरतों को पूरा करने के लिए हमें वैकल्पिक विकास के मॉडल पर काम करना पड़ेगा। इसके लिए स्थानीय समाजों की समझ का उपयोग करना जरूरी है। इसके लिए लद्दाख के लोगों की चुनी हुई सरकार की मांग तर्क-सम्मत है, इसे माना जाना चाहिए। इसी दृष्टि से लद्दाख को संविधान की 'छठी अनुसूची' में डालने की मांग है। इस अनुसूची में डाले जाने से प्राकृतिक संसाधनों को संरक्षित करने में स्थानीय समाजों की भूमिका सशक्त होगी और सरकार को भी संसाधनों के तर्कपूर्ण दोहन के लिए व्यवस्था बनाने में आसानी होगी। कई दशकों से हिमालय में वैकल्पिक विकास का मॉडल अपनाने की मांग हो रही है। 'योजना आयोग' के समय से ही यह मुद्दा उठता रहा है, किन्तु कोई परिणाम नहीं निकला है। लोगों को छिटपुट संघर्षों के कारण कहीं अपनी बात मनवाने में सफलता मिली भी है, किन्तु असली समाधान तो वैज्ञानिक समझ से हिमालय की संवेदनशील पारिस्थितिकी के अनुरूप विकास मॉडल लागू करने से ही होगा।

इसके लिए 'पांचवीं' और 'छठी अनुसूची' कुछ संरक्षण तो दे ही सकेंगी। तो क्यों न ट्रांस-हिमालय को 'छठी अनुसूची' और शेष हिमालय को 'पांचवीं अनुसूची' में डालकर हिमालय को मुख्यधारा के विकास की विनाशकारी दौड़ से बचाया जाए।

जिला अस्पताल में विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन ने जिला अस्पताल में विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस का शुभारंभ मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण व दीप जलाकर किया। गुरुवार को डीएम ने कहा कि मानसिक रोग बीमारी सभी आयु वर्ग के लोगों को होता है।

मानसिक तनाव होना कोई बड़ी बात नहीं है। मोबाइल के प्रयोग से स्वास्थ्य को हानि पहुंचती है। चित्रकूट भगवान श्रीराम की तपोस्थली है। संत-महात्माओं से अच्छे संस्कार सीखें। बच्चों में बहुत कम्पटीशन हो गया है। बच्चे कोटा आदि जगहों पर पढ़ने जाते हैं। जो मानसिक रूप से हैंडल नहीं कर पाते हैं।

ग्रामीणों को अंधविश्वास से उठना होगा ऊपरः डीएम

कार्यक्रम का शुभारम्भ करते डीएम।

ग्रामीण क्षेत्रों में महिला-पुरुषों को अंधविश्वास से ऊपर उठाना होगा। जो लोग भूत-प्रेत मानते हैं, उन्हें जागरूक करने की जरूरत है। कहा कि मानसिक स्वास्थ्य जागरूकता कार्यक्रम कालेजों में कराये जायें, ताकि छात्र जागरुक हों। ग्रामीणों को नुक्कड़ नाटक से जागरूक करने की जरूरी है। मुख्य चिकित्साधिकारी डॉ भूपेश द्विवेदी ने कहा कि मानसिक रोग से काफी लोग ग्रसित हैं। मानसिक रोग का इलाज करें। मनोचिकित्सक डॉ नरेंद्र पटेल ने कहा कि विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस पूरे विश्व में मनाया जा रहा है। मानसिक स्वास्थ्य को जो सेवायें दी जा रही हैं, उसका सभी लोग लाभ लें। मरीजों को अपनी बीमारी को छुपाना नहीं चाहिए। वहीं डीएम व मुख्य चिकित्साधिकारी ने बचपन डे केयर सेंटर के बच्चों को गिफ्ट तथा बुजुर्गों को मिठाई- फल बांटे। बच्चों ने सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किये। इसके पहले डीएम ने जिला अस्पताल का निरीक्षण किया। इस मौके पर डॉ वंदना श्रीवास्तव समेत अन्य डॉटर व स्वास्थ्य कर्मचारी तथा आम जनता मौजूद रहे।

विवाहिता ने फांसी लगाकर की आत्महत्या

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। भरतकूप थाने के अकबरपुर गांव में एक महिला का संदिग्ध दशा में शव फंदे से लटका मिला। घटना की सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम को मर्चरी भेजकर मामले की जांच पड़ताल में जुट गई। शुक्रवार को अकबरपुर गांव में पूजा (26) पत्नी नंद किशोर संदिग्ध दशा में फांसी लगाकर आत्महत्या कर दी। उसका पति नंदकिशोर पेशे से ट्रक ड्राइवर है। पति ने बताया कि वह सवेरे काम पर निकलते समय पूजा को खाना बनाने के लिए कहकर गया था। जब वह शाम को लौटा तो घर के अंदर पूजा फांसी पर लटकी थी। सूचना पर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमॉर्टम को मर्चरी भेजा। पुलिस आत्महत्या के कारणों की जांच कर रही है। विवाहिता की मौत से परिवार व इलाके में शोक की लहर है।

सड़क किनारे खड़े ट्रक में टकराई बाइक, तीन की मौत

देवी दर्शन को घर से निकले थे युवक

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। बीती रात बाइक सवार तीन लोगों की मौत हो गई। तीनों एक ही बाइक पर सवार होकर दुर्गा पूजा देखकर घर लौट रहे थे। रास्ते में सड़क किनारे खड़े ट्रक से बाइक सवार तीनों दोस्त टकरा गए।

इससे दो की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि तीसरे की अस्पताल ले जाते समय मौत हो गई। पुलिस ने तीनों शवों को कब्जे ने लेकर पोस्टमार्टम को मर्चरी भेजा है। ये हादसा बुधवार की देर रात हुई। बताया गया कि राजू, संजय व अभिलाष देवी दर्शन को मोटरबाइक से निकले थे। बिंदीराम होटल के पास सड़क किनारे खड़े एक ट्रक में उनकी बाइक भिड गई। इससे उनकी मृत्यु हो गई। मौके पर पहुंचे स्थानीय लोगों ने तीनों को अस्पताल ले गये। डॉक्टरों ने दो युवकों को मृत घोषित कर दिया। तीसरे युवक को गंभीर हालत में प्रयागराज रेफर किया। रास्ते में उसने भी दम तोड़ दिया। घटना के बाद ट्रक चालक मौके से फरार हो गया। पुलिस ने शवों को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम को मर्चरी भेजा है। मृतकों के परिजनों में कोहराम मचा है। तीनों युवक कपसेठी मोहल्ले के रहने वाले थे। पुलिस मामले की जांच में जुटी है। आरोपी ट्रक चालक की तलाश जारी है।

मर्चरी में मौजूद परिजन।

तीन दिवसीय स्काउट गाइड का हुआ समापन

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। भारत स्काउट गाइड उत्तर प्रदेश चित्रकूट के तत्वाधान में कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय शिवरामपुर में तीन दिवसीय कैंप प्रवेश, प्रथम सोपान, द्वितीय सोपान का गुरूवार को तीसरा दिन रहा। कस्तूरबा बालिका विद्यालय शिवरामपुर में वार्डेन ने कार्य का शुभारम्भ किया।

गुरुवार को प्रथम दिवस स्काउट गाइड का इतिहास पॉवेल का जीवन परिचय, गाइड नियम, प्रतिज्ञा, वर्दी, सिद्धांत, प्रार्थना, टोली चिह्न पर कार्य किया गया। द्वितीय दिवस बीपी सिक्स, सिंहनाद, प्राथमिक सहायता, सीटी संकेत, गांठे, खोज चिह्न, अनुमान लगाना इत्यादि पर कार्य किया गया। तृतीय दिवस बीपी सिक्स, ध्वज शिष्टाचार, सर्वधर्म प्रार्थना, स्काउट गाइड्स को हाईक पर ले जाया गया, बिना बर्तन का भोजन, तम्बू निर्माण, मीनार बनाना इत्यादि कार्य किया गया। इसके बाद डायट प्राचार्य आदर्श कुमार त्रिपाठी ने बच्चों के प्रवेश, सोपान के तहत स्काउट गाइड परिवार में सम्मिलित होने के लिये दीक्षा ग्रहण करवाई गयी। साथ ही जिला सचिव सुरेश ने गाइड नियम, प्रतिज्ञा, सिद्धांतों पर चलने का संकल्प दिलवाया।

इस मौके पर शिविर प्रभारी सुधा रानी, काउन्सलर अर्चना यादव, आरती देवी, दुर्गावती बौद्ध, वन्दना चतुर्वेदी आदि मौजूद रहे।

सादगी-संघर्ष के मिसाल थे मुलायम सिंह यादवः शिवशंकर

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। सपा कार्यालय में मुलायम सिंह यादव की पुण्य तिथि के मौके पर सांसद कृष्णा शिव शंकर पटेल, जिलाध्यक्ष शिव शंकर सिंह यादव, पूर्व विधायक वीर सिंह पटेल, लोहिया वाहनी के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष निर्भय सिंह पटेल, जिला उपाध्यक्ष नरेंद्र यादव, महासचिव सत्यनारायण पटेल ने नेताजी के चित्र पर पुष्प अर्पित कर श्रद्धांजलि अर्पित की। इसके बाद विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया।

गुरुवार को जिला उपाध्यक्ष नरेंद्र यादव ने पद्म विभूषण उद्योगपति रतन टाटा ने निधन पर शोक व्यक्त करते हुए बताया कि नेताजी ने दबे कुचले समाज को मुख्य धारा में लाने का काम किया। उन्होंने बताया कि फूलन देवी को बीहड से निकाल कर संसद तक पहुंचाने का काम किया। लोहिया वाहिनी पूर्व प्रदेश अध्यक्ष निर्भय पटेल ने बताया कि नेताजी ने संघर्ष के नए आयाम स्थापित किए। मंडल आंदोलन से पिछडों, दलितों, अल्पसंख्यकों को उनका हक और सम्मान दिलाने का काम किया। पंचायती राज एक्ट में पिछडों को आरक्षण देने का काम किया। साथ ही तमाम लोगों को प्रधान से लेकर बीडीसी, डीडीसी बनाने का काम किया। जिलाध्यक्ष शिव शंकर यादव ने बताया कि नेताजी ने संघर्ष के दम पर ग्रामीण अंचल से उठकर राजनीति के शिखर तक का सफर तय किया, उनकी कथनी और करनी में कोई भेद नहीं था। उन्होंने जिले में नेताजी द्वारा कराए गए विकास कार्यों गिनते हुए बताया कि राजापुर में यमुना नदी पर पुल सहित पुलों का जाल, देवांगना हवाई पट्टी का शिलान्यास, जनपद को बिजली करौली मुक्त कर 24 घंटे बिजली देने ,परिक्रमा मार्ग के सौंदर्यीकरण तीन शेड,मानिकपुर में आईटीआई कालेज सहित अनगिनत काम कराकर जनपद को विकास की सौगात देने का काम किया था। सांसद कृष्णा पटेल ने बताया कि मुलायम सिंह यादव जैसा दूसरा नेता नामुमकिन है। इस मौके पर पूर्व मंत्री शिवशंकर पटेल, कोआपरेटिव के पूर्व चेयरमैन लवलेश यादव, महासचिव सत्यनारायण पटेल, जिला सचिव सुरेंद्र खंगार, जिला कोषाध्यक्ष राजा यादव, उमाकांत यादव, किसान नेता हरि प्रसाद यादव, हरिमोहन यादव, गया प्रसाद यादव, महिला सभा की जिलाध्यक्ष रमा यादव, उपाध्यक्ष शचि गुप्ता, शीलू यादव, सुभाष पटेल, बबूलेश यादव, राघवेंद्र यादव, सरनाम यादव, राजकिशोर विश्वकर्मा, बाबा रामशरण दास, चंदन सिंह कोरी, सीताराम कश्यप, रमेश चंद्र कुशवाहा, रामसनेही खंगार, पिंटू यादव, जागेश्वर यादव, संदीप प्रजापति आदि मौजूद रहे।

पुण्यतिथि मनाते सपाई।

सर्पदंश से युवक की मौत

चित्रकूट। बीती रात वीर धुमाई सुर्की गांव में मिथिलेश यादव (35) की सर्पदंश से मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव का पंचनामा कर पोस्टमार्टम को मर्चरी भेजा। सर्पदंश की ये घटना बुधवार की रात नौ बजे हुई। बताया गया कि मिथिलेश घर में बिजली बोर्ड में मोबाइल चार्जर लगाने गया था। तभी उन्हें अचानक सर्प ने डस लिया। परिजन उसे 108 एंबुलेंस से मिथिलेश को सोनेपुर जिला अस्पताल लाये। डॉक्टरों ने मिथलेश को मृत घोषित कर दिया। मौके पर पहुंची पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम को मर्चरी भेजा। पुलिस अधिकारी ने बताया कि मिथिलेश को सर्प काटने की जानकारी मिली है। अस्पताल में उसकी जान नहीं बचाई जा सकी। घटना से गांव में शोक का माहौल है। परिजनों का हाल बहुत बुरा है। प्रशासन ने परिवार को हर संभव मदद का भरोसा दिया है।

सदर विधायक ने की मुख्यमंत्री राहत कोष से मदद की मांग

हाईटेंशन तार टूटकर गिरने का मामला

अखंड भारत संदेश

सदर विधायक अनिल प्रधान।

चित्रकूट। सपा सदर विधायक अनिल प्रधान ने द्वारिकापुरी मोहल्ले में विद्युत हाईटेंशन तार टूटकर गिरने से दो लोगों की मृत्यु बाबत परिजनों को मुख्यमंत्री राहत कोष से आर्थिक मदद व दोनों परिवारों को नौकरी दिलाने को मुख्यमंत्री सम्बोधित पत्र जिलाधिकारी को सौंपा। गुरुवार को सदर विधायक अनिल प्रधान ने सौंपे पत्र में कहा कि द्वारिकापुरी मोहल्ले में 11 हजार विद्युत हाईटेंशन तार गिरने से धर्मराज श्रीवास व मनीष प्रजापति की मृत्यु हो गयी थी। इससे मृतकों के परिजनों में मातम है। मजदूरी कर परिवार का भरण-पोषण करते थे। विद्युत पोल से जर्जर हाईटेंशन तार टूटकर गिरने से मनीष की मौके पर मौत हो गयी थी। धर्मराज की इलाज दौरान जिला अस्पताल में मृत्यु हो गयी थी। कई बार विद्युत विभाग को जर्जर तार को बदलवाने के बारे में कहा गया, लेकिन कोई कार्यवाही नहीं हुई। विद्युत विभाग की लापरवाही से हादसा हुआ है। मृतक मनीष प्रजापति अपनी विधवा मां व विधवा बहन की मजदूरी कर पालन-पोषण करता था। दूसरे मृतक धर्मराज श्रीवास कर्वी में किराये के घर में रहकर चाट-फुल्की का ठेला लगाकर परिवार का भरण-पोषण करता था। सदर विधायक ने मृतकों के परिजनों की स्थिति को देखते हुये मुख्यमंत्री राहत कोष से आर्थिक मदद व दोनों परिवारों में एक-एक व्यक्ति को नौकरी दिलाने की मांग की है।

देवी मंदिरों में धार्मिक कार्यक्रमों के हो रहे आयोजन

आयोजन में प्रस्तुति देते कलाकार।

स्थानीय कलाकार कर रहे रामायण-दुर्गा सप्तसती का पाठ

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। भगवान श्रीराम की तपोस्थली में देवी मंदिरों में धार्मिक कार्यक्रमों की धूम मची है।

प्रमुख मंदिरों में दुर्गा सप्तसती भजन व अखंड रामायण हो रहे हैं। यहां स्थानीय कलाकारों को विशेष रूप से आमंत्रित किया गया है। गुरुवार को जिला पर्यटन अधिकारी अनुपम श्रीवास्तव ने बताया कि असावर माता, कालिका देवी व काली देवी मंदिर समेत अन्य प्रमुख धार्मिक स्थलों पर ये कार्यक्रम कराये जा रहे हैं। इस बार बाहरी कलाकारों को नहीं बुलाया गया है। स्थानीय पुजारियों व मंदिर प्रबंधकों के सहयोग से कार्यक्रम रहे हैं। धार्मिक आयोजन कहीं सुबह तो कहीं शाम को हो रहा है। जिससे अधिक से अधिक श्रद्धालु शामिल हो सकें। अनुपम श्रीवास्तव ने बताया कि आयोजन को प्रस्ताव पहले ही भेजा गया था। उप्र सरकार के पर्यटन मंत्री की अनुमति के बाद इसे शुरू किया गया है। कहा कि चित्रकूट एक धर्मनगरी है। इसलिए यहां ऐसे धार्मिक कार्यक्रम पर्यटन विभाग समय-समय पर कराता है।

शिक्षा के प्रति समर्पित रहकर अधिकारों के प्रति सजग रहें बालिकायें

चित्रकूट। शारदीय नवरात्र (अष्टमी) को मिशन शक्ति विशेष अभियान फेज-5 कार्यक्रम के तहत जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन के निर्देश के कम में जिला प्रोबेशन अधिकारी पंकज कुमार मिश्र की देखरेख में छत्रपति साहू जी महिला महाविद्यालय में बालिकाओं के साथ अनंता मेगा ईवेन्ट अनन्ता कार्यक्रम का आयोजन कर बालिकाओं को जिसका अन्त न हो वहां तक पहुंचने के प्रति जागरूकता कार्यक्रम किया गया। गुरुवार को मिशन शक्ति फेज-5 कार्यकम में मुख्यमंत्री का उद्देश्य प्रदेश के बच्चों, बालिकाओं व महिलाओं के प्रति सम्मान बढाना है। साथ ही बालिकाओं को साहसी, निडर, स्वावलम्बी और देश हित में नये मुकाम हासिल कराना उद्देश्य है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्या डॉ आरती गुप्ता ने बालिकाओं को शिक्षा के प्रति समर्पित रहने, अपने अधिकारों के प्रति सजग रहने की बात कही। महिलाओं के प्रेरक कहानियां पढने और सुनने और समझने की बात कही गई। इस अवसर पर छात्रा रिचा, शान्ति, सबली, पूजा सिंह, श्वेता, और आरती द्वारा सुनाई गई उच्च प्रेरक कहानियों पर बाल संरक्षण अधिकारी डॉ सौरभ सिंह द्वारा शील्ड देकर पुरस्कृत किया गया। इस मौके पर अध्यापिका डॉ सुमन शुक्ला, डॉ मंजू गौतम, विनीता श्रीवास्तव, तनुषा श्रीवास्वत, साधना गुप्ता, प्रीती जायसवाल, वन स्टाप सेन्टर के अर्थना साहू, पुष्पा देवी, रंजीता द्विवेदी आदि मौजूद रहे।

मऊ में तहसीलदार ने संभाला कार्यभार लेखपालों को दिए निर्देश

अखंड भारत संदेश

मऊ/चित्रकूट। मऊ ब्लाक में तहसीलदार रामसुधार राम ने कार्यभार ग्रहण किया। राजापुर में बतौर तहसीलदार काम करने के बाद स्थानान्तरित होकर आये तहसीलदार रामसुधार राम ने कहा कि शासन की मंशानुसार जन समस्याओं का निस्तारण किया जाएगा।गुरुवार को तहसीलदार रामसुधार राम ने कहा कि निष्पक्षता से मामले का निस्तारण कर राजस्व वसूली पर विशेष ध्यान दिया जाएगा। क्षेत्रीय किसान तहसील सम्बन्धी कार्यों को लेकर किसी भी समय तहसील आकर उनसे मुलाकात कर सकते हैं। प्राथमिकता के साथ जन समस्याओं का निराकरण होगा। राजस्व सम्बन्धी समस्याओं को दूरभाष से भी जानकारी दी जा सकती है। तहसीलदार ने लेखपालों के साथ बैठक कर निर्देश दिया कि अवैध कब्जा खाली करायें। जो रास्ते पेंडिंग पड़े हैं, उनको डिस्पोज करें। बारिश प्रभावित गांवों की तत्काल रिपोर्ट बनाकर दें, इससे किसानों को लाभ मिल सके। किसानों को गुमराह न करें। शिकायत मिलने नी कार्रवाई की जाएगी।

तहसीलदार रामसुधार राम।

रतन टाटा के निधन पर डीआरआई ने दी श्रद्धांजलि

चित्रकूट। उद्योग जगत के शीर्ष पुरुष रतन टाटा के निधन पर दीनदयाल शोध संस्थान के प्रकल्प में शोक सभा आयोजन हुई। संस्थान के कार्यकर्ताओं ने दिवंगत आत्मा को श्रद्धा सुमन अर्पित किये। गुरुवार को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए दीनदयाल शोध संस्थान के राष्ट्रीय संगठन सचिव अभय महाजन ने कहा कि देश के शीर्ष उद्योगपति/समाजसेवी रतन टाटा के निधन से दीनदयाल शोध संस्थान परिवार ने अपना एक अभिभावक खो दिया है। उनकी मृत्यु से एक ऐसे युग का अंत हुआ है, जिसने भारत में उद्यमिता के साथ समाजसेवा में देश की परम्पराओं को निभाया। रतन टाटा भारत के अनमोल रत्न के रूप में भारतीय क्षितिज में चमकते रहेंगे। डीआरआई कोषाध्यक्ष बसंत पंडित ने कहा कि नानाजी देशमुख से उनके गहरे रिश्ते थे। नानाजी की कर्मस्थली चित्रकूट में रतन टाटा ने अपने दादाजी जेआरडी टाटा की स्मृति में एक यादगार सेवा प्रकल्प खड़ा किया। जिसे आज हम लोग आरोग्यधाम के नाम से जानते हैं। ग्रामीण क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाओं के क्षेत्र में इसका नाम प्रमुखता से लिया जाता है। दीनदयाल शोध संस्थान में स्वावलम्बन अभियान के लोकार्पण व आरोग्यधाम के स्थापना काल में दो बार रतन टाटा का चित्रकूट आगमन हुआ था। इस दौरान दीनदयाल शोध संस्थान के आरोग्यधाम परिसर, दीनदयाल परिसर, तुलसी दास परिसर गनीवां, महर्षि बाल्मीकि परिसर मझगवां में संचालित सभी प्रकल्पों में स्व रतन टाटा को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए शोकसभा आयोजित की गई।

सीता-राम की वेशभूषा में छात्र।

धूमधाम से मनाया नवरात्रि व दशहरे का पर्व

अखंड भारत संदेश

चित्रकूट। जिला मुख्यालय स्थित एकेडमिक हाइट किंग्सन इंग्लिश हाईस्कूल में नवरात्रि एवं दशहरा का त्योहार बडे ही पारम्परिक एवं हर्षोल्लास से मनाया गया। जिसमें विद्यालय के सभी छात्राओं नवरात्रि के नौ देवियों के विभिन्न रूपों एवं उनकी महत्याला बताई गई। साथ ही विद्यालय के छात्राओं द्वारा नौ देवियों की वेशभूषा पहनकर उनके प्रतीकात्मक स्वरूप में विद्यालय आई थी। साथ ही एक-एक करके नौ देवियों ने अपने बारे में सभी छात्रों को बताया जिसको सभी छात्रों की बड़ी उत्सुकता से सुना। इसके बाद विद्यालय प्रांगण में नवरात्रि के पारम्परिक नृत्य डाडिया का आयोजन किया गया। जिसमें विद्यालय के सभी छात्रों एवं अध्यापिकाओं ने डांस किया। कक्षा 1 का छात्र सम्राट सोनी जो राम की वेशभूषा एवं छात्रा वृद्धि बाहरी सीता बनकर आई थी। दोनो ही नौनिहालों को राम सीता बने देखकर सभी ने प्रशंसा की। विद्यालय के प्रबन्धक मिनहाज आलम खान ने रामायण के तथ्यों के बारे में सभी छात्रों को बताया। उप कोडिनेटर शाहीन खान ने नौ देवियों के स्वरूपों को बताया। विद्यालय में लगभग 10 फीट उंचा आतंकवाद, प्रदूषण आदि बुराईयों के नाम का रावण बनाया। जिसको विद्यालय के छात्रों द्वारा प्ररण लेते हुये जलाया कि हम जीवन पर्यान्त इन बुराईयों से दूर रहेंगे।इस मौके पर अध्यापक ज्योति, साक्षी सेन, मंयक, अजय राम, दुलारे, ज्योति, सुष्मिता शर्मा आदि मौजूद रहे।

सुषमा स्वरूप स्कूल में यातायात जागरूकता कार्यक्रम सम्पन्न

अखंड भारत संदेश

छात्रों को यातायात नियमों की दिलाई शपथ

चित्रकूट। शासन की मंशानुसार डीएम शिवशरणप्पा जीएन के निर्देश व एसपी अरुण सिंह की देखरेख में परिवहन विभाग व यातायात विभाग ने सड़क सुरक्षा पखवाड़ा के तहत सड़क यातायात जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन सुषमा स्वरूप इण्टरनेशनल स्कूल अशोह में किया।

गुरुवार को बतौर मुख्य अतिथि सहायक सम्भागीय परिवहन अधिकारी वीके शुक्ला ने छात्र-छात्राओं से कहा कि वाहन में बैठते समय विशेष सावधानी बरतें। स्कूल प्रबंधन से कहा कि वाहन में बच्चों के आवागमन के समय चालक-परिचालक वर्दी में हों। वाहन चलाते समय मोबाइल का प्रयोग न करें। वाहनों का फिटनेस, बीमा, परमिट, प्रदूषण नियत्रंण प्रमाण पत्र दुरूस्त रखें। वाहन चालकों के पास वैध ड्राइविंग लाइसेंस हो। छात्रों से कहा कि सड़क पार करते समय ध्यान दें कि वितरीत दिशा से तेज वाहन तो नहीं आ रहा। पहले वाहन को निकल जाने दें, बाद में सड़क पार करें।

पीटीओ सुश्री दीप्ती त्रिपाठी ने कहा कि आप लोगों के सामने कोई हादसा होता है तो घबरायें नहीं, पुलिस को 112 व 108 एम्बुलेंस को सूचित करें। सभी बच्चे एक जिम्मेदार नागरिक का दायित्व निभायें। कहा कि दोपाहिया वाहन चालक हेलमेट व चारपहिया वाहन चालक सीट बेल्ट अवश्य लगायें। नाबालिग बच्चे वाहन न चलायें। स्कूल कोआर्डिनेटर केशव शिवहरे ने कहा कि सर्वाधिक मौतें सड़क हादसे से हो रही हैं। इसका कारण यातयात नियमों का पालन न करना है। कहा कि उच्चतम न्यायालय के आदेश पर हादसे की सूचना देने वाले व्यक्ति को संबंधित विभाग पुरस्कृत करेगा। सूचना देने वाले का नाम गोपनीय रखा जाएगा। सभी छात्र-छात्राओं को यातायात नियमों की शपथ दिलाई गई। उन्होंने बताया कि विश्व मानसिक स्वास्थ्य दिवस के मौके पर पर स्वास्थ्य परीक्षण कराया गया। कार्यक्रम समापन में उद्योगपति रतन टाटा के निधन पर दो मिनट का मौन रखकर उनको श्रद्धांजलि दी गई। इस मौके पर स्कूल स्टाफ व छात्र-छात्रायें मौजूद रहे।

छात्रों को शपथ दिलाते पीटीओ।

उप संचालक चकबंदी ने सुनी किसानों की समस्यायें

चित्रकूट। चकबन्दी आयुक्त उत्तर प्रदेश लखनऊ नेचकबन्दी प्रक्रियाधीन ग्रामों में कृषकों की शिकायतों के निस्तारण के लिए उप संचालक चकबन्दी की अध्यक्षता में जन चैपाल लगाये जाने तथा जन चैपाल लगाये जाने से पूर्व ग्राम, क्षेत्र में व्यापक प्रचार-प्रसार कराये जाने के निर्देश निर्गत किये गये। जिसके कम में जिलाधिकारी द्वारा जनपद के चकबन्दी प्रक्रियाधीन ग्रामों में अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) उप संचालक चकबन्दी की अध्यक्षता में 20 ग्रामों में आयोजित होने वाली जन चैपाल आयोजित किये जाने के लिए कार्यक्रम जारी किया गया। जिलाधिकारी शिवशरणप्पा जीएन द्वारा जारी किये गये कार्यक्रम के अनुपालन में गुरूवार को तहसील मानिकपुर के ग्राम सरैया व तहसील राजापुर के ग्राम खरुही राजेश प्रसाद अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) उप संचालक चकबन्दी की अध्यक्षता में जन चैपाल का आयोजन किया गया।जन चैपाल में कृषकों द्वारा चकों, चकमार्ग, नाली व चकरोड आदि की पैमाइस तथा चकबन्दी न्यायालयों द्वारा पारित आदेशों का अमलदरामद अभिलेखों में न किये जाने की शिकायती की गई। जिस पर अपर जिलाधिकारी (न्यायिक) उप संचालक चकबन्दी द्वारा मौके पर जाकर तत्काल निस्तारण के निर्देश दिये गये। उप संचालक चकबन्दी द्वारा न्यायिक प्रक्रिया से सम्बन्धित शिकायतों को परिवादी से सम्बन्धित न्यायालय में वाद योजित कर निस्तारण कराने के निर्देश निर्गत किये गये। बन्दोबस्त अधकिारी चकबन्दी द्वारा कृषकों को चकबन्दी प्रक्रिया से होने वाले लाभों के सम्बन्ध में जागरूक किया गया। आगामी दिवसों में कृषकों की समस्याओं का त्वरित निस्तारण किये जाने के लिए 16 अक्टूबर को ग्राम छेछरिहा, लदेहटा में, 18 को ग्राम बाबूपुर व हर्रा में, 21 को ग्राम पिलखिनी व ग्राम महरुछ में, 23 को ग्राम गौहानीकला व ग्राम कुचारम में, 25 को ग्राम चैरा व कलवारा बुजुर्ग में, 28 को ग्राम अरछाबरेठी व ओरा में तथा 30 अक्टूबर को ग्राम सिधौली व दरसेडा में जन चैपाल का आयोजन किया जाना है।इस मौके पर मनोहर लाल वर्धन बन्दोबस्त अधिकारी चकबन्दी, धीरेन्द्र कुमार शुक्ल चकबन्दी अधिकारी मऊ, शरद यादव चकबन्दी अधिकारी मानिकपुर, राकेश श्रीवास्तव सहायक चकबन्दी अधिकारी मानिकपुर, राजीव कुमार सहायक चकबन्दी अधिकारी अर्जुनपुर आदि मौजूद रहे।

पाकिस्तानी भी नहीं ले पा रहे सांस, भारत से करनी होगी बात...

इस्लामाबादः पाकिस्तानी पंजाब की मुख्यमंत्री मरियम नवाज ने स्मॉग की समस्या से निपटने के लिए 'क्लाइमेट डिप्लोमेसी' यानी 'जलवायु कूटनीति' की वकालत की है। उनका कहना है कि स्मॉग के लिए भारत के साथ बातचीत जरूरी है। खासकर जब दोनों देशों में सर्दियां आ रही हैं, जिस कारण प्रदूषण का स्तर बढ़ जाता है। मरियम नवाज पाकिस्तान के पूर्व पीएम नवाज शरीफ की बेटी हैं। उन्होंने कहा, 'हमें उनसे बात करनी चाहिए। इसे जलवायु कूटनीति कहा जाता है। हमें इसे भारत के साथ करना चाहिए।'

उन्होंने जहरीले धुएं को कम करने के लिए समन्वित प्रयासों की आवश्यक्ता पर जोर दिया। क्योंकि हवाओं के कारण यह सीमा पार फैल सकता है। मरियम नवाज ने हर साल ठंड के दौरान सांस से जुड़ी बीमारियों में बढ़ोतरी पर बात की। तापमान जब ठंड में गिरता है तो प्रदूषक तत्व जमीन के पास फंस सकते हैं। इससे वायु प्रदूषण के स्तर में

बढ़ोतरी हो जाती है। पाकिस्तान का लाहौर और भारत में दिल्ली समेत कई शहर प्रदूषण की चपेट में रहते हैं।

विदेश मंत्री जाएंगे पाकिस्तान

जलवायु कूटनीति के लिए मरियम शरीफ ने वकालत तब की है जब विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर पाकिस्तान जाने वाले हैं। शंघाई सहयोग शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए वह पाकिस्तान जाएंगे। डॉ. जयशंकर की यात्रा लगभग एक दशक में अपनी तरह की पहली आधिकारिक यात्रा है। हालांकि, जयशंकर ने स्पष्ट किया कि इस यात्रा के दौरान द्विपक्षीय संबंधों पर चर्चा नहीं होगी। साल 2019 से ही भारत और पाकिस्तान के बीच राजनयिक संबंधों में गिरवाट देखी गई है।

'डॉ. जयशंकर की यात्रा सकारात्मक कदम'

पाकिस्तान के पूर्व विदेश मंत्री खुर्शीद महमूद कसूरी ने भारत के विदेश मंत्री एस जयशंकर के पाकिस्तान दौरे को ह्यसकारात्मक कदमह्ल बताया है। उनका कहना है कि इससे दोनों पड़ोसी देशों के बीच तनाव कम करने में मदद मिल सकती है।

भारत ने 15 और 16 अक्टूबर को इस्लामाबाद में होने वाले शंघाई सहयोग संगठन (SCO) शिखर सम्मेलन में भाग लेने के लिए पाकिस्तान जाने वाले प्रतिनिधिमंडल की अगुवाई जयशंकर द्वारा किये जाने की शुक्रवार को घोषणा की। वह ने हालांकि पाकिस्तान के अपने दौरे के दौरान द्विपक्षीय वार्ता की संभावनाओं से इनकार किया।

डोनाल्ड ट्रम्प ने अपने 'मित्र' प्रधानमंत्री मोदी को बताया सबसे अच्छा इंसान

वॉशिंगटन/नई दिल्ली। अभिनेत्री से राजनेता बनीं कंगना रनौत ने अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के एक पॉडकास्ट को अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर शेयर किया। इस पॉडकास्ट में ट्रंप ने पीएम मोदी को सबसे अच्छा इंसान बताते हुए उन्हें 'टोटल किलर' करार दिया। सोशल मीडिया प्लेटफार्म 'एक्स' पर पॉडकास्ट को शेयर करते हुए कंगना रनौत ने कैप्शन में लिखा, "पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने फ्लैग्रेंट पॉडकास्ट में प्रधानमंत्री मोदी को सबसे अच्छा इंसान बताया, लेकिन साथ ही उन्हें 'टोटल किलर' (ऐसे शख्स जो सफल हैं, आक्रामक हैं और किसी भी स्थिति से निपटने में पारंगत) बताया। उन्होंने कहा कि पीएम मोदी ने पाकिस्तान के खिलाफ आक्रामक जवाबी कार्रवाई की धमकी देकर उन्हें आश्चर्यचकित कर दिया, जब उन्होंने कहा कि हम उनसे निपट लेंगे, भारत ने सैकड़ों

वर्षों से उन्हें हराया है। इसकी तुलना मुंबई में हुए भीषण आतंकी हमले के बाद कांग्रेस के नेतृत्व वाली यूपीए की बेरुखी से करें। भारत का जिक्र करते हुए ट्रंप ने कहा कि नरेंद्र मोदी के आने से पहले भारत में हर साल पीएम बदला जाता था। वहां बहुत ज्यादा अस्थिरता थी। इसके बाद वह आए। वह महान हैं। वह मेरे मित्र हैं। बाहर से वह ऐसे दिखते हैं, जैसे वह आपके पिता हैं। वह सबसे अच्छे हैं।

डोनाल्ड ट्रंप ने कॉमेडियन एंड्रयू शुल्ट्ज और आकाश सिंह के साथ 'फ्लैग्रेंट' नामक पॉडकास्ट में ये बातें कही।

88 मिनट लंबे साक्षात्कार के लगभग 37 मिनट तक उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी के साथ अपने संबंधों का जिक्र किया।

ट्रंप ने आगे कहा कि 'हाउडी मोदी' 2019 में टेक्सास के ह्यूस्टन में भारतीय समुदाय का एक कार्यक्रम था। एनआरजी स्टेडियम में आयोजित इस कार्यक्रम में भारी भीड़ उमड़ी और दोनों देशों के बीच संबंधों को दशार्या गया।

लेबनान को दूसरा गाजा बनने से रोकेंगे... सऊदी और ईरान के विदेश मंत्रियों की मुलाकात

तेहरानः ईरान और सऊदी अरब ने रिश्तों को बेहतर करने के संकेत दिए हैं। ईरान के विदेश मंत्री अब्बास अराघची और सऊदी अरब के विदेश मंत्री फैसल बिन फरहान अल सऊद की अहम मुलाकात होने जा रही है। सऊदी में होने वाली इस बैठक में खासतौर से लेबनान पर चर्चा की उम्मीद है। ईरान और सऊदी दो प्रमुख क्षेत्रीय खिलाड़ी हैं, ऐसे में इस बैठक पर दुनिया की नजर है। माना जा रहा है कि ईरान और सऊदी मंत्रियों की मुलाकात लेबनान को दूसरा गाजा बनने से बचा सकती है। गार्जियन की रिपोर्ट के मुतबिक, ईरानी विदेश मंत्री अराघची लेबनान और सीरिया के दौरे के बाद सऊदी पहुंच रहे हैं। ईरान और सऊदी के बीच तनाव की एक बड़ी वजह लेबनान ही रहा है, जहां फिलहाल इजरायल के हमलों से तबाही हो रही है। सऊदी अरब चाहता है कि ईरान और हिजबुल्लाह का प्रभाव लेबानान में कम हो। ईरान ने बीते वर्षों में हिजबुल्लाह को लगातार समर्थन दिया है।

इजरायल-हिजबुल्लाह की जंग के बीच लेबनान में पहुंची तुर्की की नौसेना

बेरूतः इजराइल और हिजबुल्ला के बीच जारी संघर्ष के कारण तुर्किये ने अपने नागरिक को वहां से सुरक्षित बाहर निकालने के लिए नौसेना का जहाज भेजा और बुधवार देर रात तुर्की के 2,000 से अधिक नागरिक और कुछ विदेशी लोग इस पर सवार हुए। तुर्की के दक्षिण-पूर्वी शहर मार्डिन की निवासी जेहरा सिब्बिन अन्य शरणार्थियों के साथ बस से उतरीं। उनके साथ उनके दो बच्चे थे और उनके हाथ में सामान था। वह अपने लेबनानी पति के साथ बेरूत में रहती हैं।

सिब्बिन (46) ने कहा, ह्यइसे शब्दों में बयां नहीं किया जा सकता। उन्होंने हमारे घर के नीचे वाली गली में बमबारी की। उस पल तो मुझे लगा कि सब कुछ खत्म हो गया। मैंने कहा कि मैं अब बेरूत में नहीं रहना चाहती।ह्ल ह्यएसोसिएटेड प्रेसह्ल ने बताया कि तुर्किये के नागरिकों को नौसेना की ओर से संचालित टीसीजी बेराकटार और टीसीजी सैंकटर पोतों के जरिए स्वदेश पहुंचाया जाएगा। दक्षिणी तुर्किये स्थित मेर्सिन बंदरगाह से बुधवार सुबह छह जहाज 300 टन मानवीय आपूर्ति लेकर बेरूत पहुंचे थे, जिनमें भोजन, स्वच्छता किट, बर्तन, तंबू, बिस्तर और कंबल शामिल हैं।

लेबनान में लाखों लोग विस्थापित हुए

तुर्किये के नागरिकों के अलावा बुल्गारिया, रोमानिया और कजाकिस्तान के लोग भी ने भी तुर्किये के जहाजों पर जाने के लिए आवेदन किया था। अधिकारियों ने संख्या नहीं बताई। लेबनान में तुर्किये के राजदूत अली बारिस उलूसोय ने बेराकटार के

सामने खड़े होकर कहा, ह्यइजराइल की आक्रामकता ने लेबनान और हमारे भाइयों को बुरी तरह प्रभावित किया है।ह्ल इजराइल और हिजबुल्ला के बीच मध्य सितंबर से तनाव बढ़ने के बाद से लेबनान में 1,300 से अधिक लोग मारे गए हैं और दस लाख से अधिक लोग विस्थापित हुए हैं।

क्र१ी' छ्रींल्लङ्घल्लः इजरायल के साथ जंग करने चला लेबनान की कितनी है उसके

गाजा पर इजरायल का हमला

मध्य और उत्तरी गाजा में इजराइली सेना के हमले में दर्जनों लोग मारे गए हैं। बमबारी के कारण हजारों लोग अपने घरों में फंसे हैं।

फिलिस्तीनी अधिकारियों ने बुधवार को इससे जुड़ी जानकारी दी। एक साल से जारी युद्ध में 42 हजार से अधिक लोगों की जान जा चुकी है। गाजा के स्वास्थ्य मंत्रालय ने कहा कि उसने रविवार से मंगलवार तक जबालिया से 40 शव और उत्तरी हिस्से से 14 शव बरामद किए हैं। मंत्रालय ने कहा कि मृतकों की संख्या अधिक हो सकती है क्योंकि कई शव मलबे में दबे हैं और कई शव ऐसे इलाकों में हैं, जहां पहुंचना संभव नहीं है।

जाकिर नाइक के बयान पर पाकिस्तानी लड़कियों में उबाल

इस्लामाबादः विवादित इस्लामिक उपदेशक जाकिर नाइक पाकिस्तान में अपने बयानों को लेकर घिरता जा रहा है। जाकिर नाइक के अलग-अलग शहरों में दिए जा रहे बयान उसकी आलोचना की वजह बन रहे हैं। खासतौर से महिलाओं पर जाकिर के बयान पाकिस्तान की औरतों को भड़का रहे हैं। जाकिर का एक और बयान अब पाकिस्तान में विवाद की वजह बन गया है, जिसमें उन्होंने गैरशादीशुदा लड़कियों को बाजारू कह दिया।

जाकिर नाइक से एक कार्यक्रम में दसवीं क्लास की बच्ची ने पूछा था कि इस्लाम मर्दों को चार शादी की इजाजत क्यों देता है। इस पर जाकिर ने कहा कि ये महिलाओं की हिफाजत के लिए है क्योंकि कुंवारी लड़कियों को लोग गलत निगाह से देखते हैं। जाकिर ने कह दिया किया कि बिना मर्द के बाहर घूमने वाली औरतों को पब्लिक प्रोपर्टी या बाजारू औरत की तरह देखा जाता है। जाकिर के इस बयान पर यूट्यूबर निमरा अहमद ने पाकिस्तान के आम लोगों से बात की है।

जाकिर पर भड़कीं पाकिस्तानी लड़कियां

जाकिर के बयान पर निमरा से बात करते हुए पाकिस्तानी लड़कियों ने

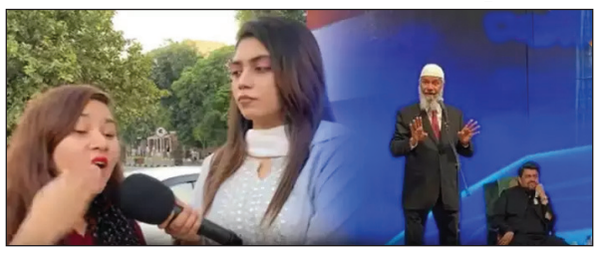

अपना गुस्सा निकाला है। निमरा से एक लड़की ने कहा कि दसवीं क्लास की बच्ची के सवाल पर जिस तरह का जवाब जाकिर नाइक ने दिया, वो दिखाता है कि उनको चीजों की समझ नहीं है। वो ये नहीं जानते हैं कि दसवीं के बच्चे से किस तरह बात की जाए और उनको कैसे समझाएं।

पाकिस्तान की एक और लड़की ने कहा कि जाकिर जिस तरह से लड़कियों को पब्लिक प्रोपर्टी कह रहे हैं, वो शर्मनाक है। उनको कम से कम अपने घर की लड़कियों, बेटी-बहनों के बारे में सोचना चाहिए कि वो किसी और के घर की लड़की को क्या कह रहे हैं। पाकिस्तानी लड़कियों ने यहां तक कह दिया कि जाकिर अमन के नाम पर नफरत फैला रहे हैं।

पाकिस्तानी लड़कियों ने कहा कि जाकिर नाइक लड़कियों के बाहर निकलने और काम करने के खिलाफ हैं। ये दिखाता है कि उनको इस्लाम का भी इतिहास नहीं पता है। पैगंबर मोहम्मद की बीवी खदीजा अपने जमाने की बिजनेसवुमेन रही हैं। जाकिर को उनका उदाहरण देना चाहिए लेकिन वो कुछ भी बोल रहे हैं। ऐसा लगता है कि जाकिर की परवरिश ठीक नहीं हुई है।

भारत की तारीफ, पाकिस्तानी एयर लाइन की आलोचना करना पड़ा भारी

इस्लामाबादः विवादित इस्लामिक उपदेशक जाकिर नाइक को पाकिस्तान में मंच से माफी मांगनी पड़ी है। जाकिर नाइक ने हाल ही में एक कार्यक्रम में पाकिस्तान एयरलाइन (पीआईए) का मजाक उड़ाया था और भारत की तारीफ कर दी थी, ये पाकिस्तानियों को नागवार गुजरा। सोशल मीडिया पर लानत मलानत के बाद डॉक्टर जाकिर नाइक ने पीआईए पर अपनी टिप्पणियों के लिए पाकिस्तानी जनता से माफी मांग ली। जाकिर ने कहा कि उनसे अनजाने में ये कमेंट हुआ और इसका मकसद किसी की भावना को चोट पहुंचाना नहीं था।

जाकिर नाइक ने सिंध के गवर्नर कामरान टेसोरी की ओर से शिकायत किए जाने के बाद माफी मांगी है। जाकिर ने कहा कि सोशल मीडिया पर प्रतिक्रिया के बाद कामराम टेसोरी ने उनसे बात की है। सोशल मीडिया पर तनाव है और मैं कहना चाहता हूं कि अगर पाकिस्तान के लोगों को मेरी बात बुरी लगी तो मैं माफी मांगता हूं।

जाकिर पर क्यों भड़के पाकिस्तानी

जाकिर नाइक के एक कराची के कार्यक्रम का वीडियो पाकिस्तानी सोशल मीडिया पर बीते कुछ दिन से वायरल है। इसमें जाकिर पाकिस्तान की राष्ट्रीय एयरलाइन पीआईए का मजाक उड़ा रहा हैं। वह पाकिस्तानियों के बर्ताव पर भी सवाल खड़ा करते हुए कह रहा है कि ऐसा उसके साथ कहीं भी नहीं होता, जैसा पाकिस्तानी अफसरों ने किया। यही बात पाकिस्तानियों को बुरी लग गई।

चीनी जन बैंक और वित्त मंत्रालय का संयुक्त कार्य दल स्थापित

बीजिंग। चीनी जन बैंक और वित्त मंत्रालय के संयुक्त कार्य दल ने हाल में पहले औपचारिक सम्मेलन का आयोजन किया। कार्य दल की स्थापना का उद्देश्य केंद्रीय वित्तीय कार्य सम्मेलन की भावना का कार्यान्वयन कर मौद्रिक नीति के टूलबॉक्स को समृद्ध बनाना है।

बताया जाता है कि सम्मेलन में केंद्रीय बैंक के राष्ट्रीय बांड की खरीद और बिक्री में दोनों पक्षों के बीच घनिष्ठ सहयोग की प्रशंसा की गयी और कार्य दल के संचालन की

व्यवस्था तय की गयी। दोनों पक्षों ने बांड बाजार के संचालन की स्थिति आदि विषयों पर विचार-विमर्श भी किया। दोनों पक्षों का समान विचार है कि केंद्रीय बैंक के राष्ट्रीय बांड की खरीद और बिक्री मौद्रिक नीति के टूलबॉक्स को समृद्ध बनाने और तरलता के प्रबंधन को मजबूत करने का महत्वपूर्ण तरीका है।

एलियन खोजने के लिए आज लॉन्च होगा मिशन, बृहस्पति के चंद्रमा यूरोपा के लिए नासा भेजेगा अंतरिक्ष यान

वॉशिंगटनः बृहस्पति ग्रह के बर्फीले चंद्रमा यूरोपा के लिए नासा 10 अक्तूबर 2024 को यूरोपा क्लिपर नाम का मिशन लॉन्च करने जा रहा है। इस मिशन का मकसद यह पता लगाना है कि क्या यूरोपा पर मौजूद अंडरग्राउंड महासागर में जीवन हो सकता है या नहीं। सन 1610 में गैलीलियो गैलीली ने यूरोपा को खोजा था। लंबे समय से यह वैज्ञानिकों को आकर्षित करता रहा है। वैज्ञानिकों को पता चला है कि इसके मोटे बर्फीले खोल के नीचे विशाल महासागर है। अंतरिक्ष यान फ्लोरिडा के कैनेडी स्पेस सेंटर से स्पेसएक्स फाल्कन हेवी रॉकेट से अपनी यात्रा शुरू करेगा।

उड़ान भरने के बाद, पहले यह मंगल ग्रह की ओर जाएगा। 27 फरवरी 2025 को

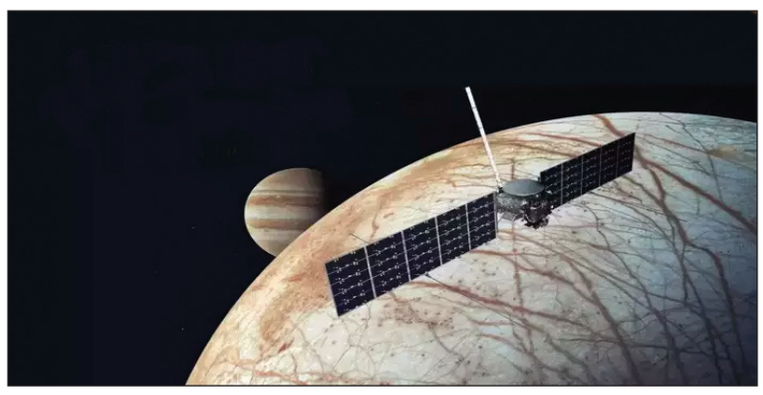

गुरुत्वाकर्षण की मदद से अपनी स्पीड बाढ़ाएगा और पृथ्वी की ओर आएगा। दिसंबर 2026 में एक बार फिर पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण की मदद से यह हाई स्पीड से बृहस्पति की ओर लॉन्च किया जाएगा। यूरोपा क्लिपर 11 अप्रैल 2030 तक बृहस्पति तक पहुंचेगा। इस अंतरिक्ष यान को बनाने में 5 बिलियन डॉलर की लागत आई है। ऑर्बिटल वैज्ञानिक इसे मार्स-अर्थ ग्रेविटी असिस्ट ट्रेजेक्टरी कहते हैं।

एक साल का लगेगा समय

वैज्ञानिकों ने जर्नल ऑफ गाइडेंस, कंट्रोल एंड डायनेमिक्स में प्रकाशित एक पेपर में बताया कि यह 11 अप्रैल 2030 को बृहस्पति के करीब पहुंचेगा। बृहस्पति एक ठोस ग्रह न होकर गैसीय ग्रह है। यह बृहस्पति की एक लंबी लूपिंग कक्षा में प्रवेश करेगा। कोलोराडो बोल्डर विश्वविद्यालय में वायुमंडलीय और अंतरिक्ष भौतिकी प्रयोगशाला के मुताबिक इसे अपनी कक्षा को अडजस्ट करने में एक साल का समय लगेगा।

अखंड भारत संदेश

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक

स्वामी श्री योगी सत्यम् फॉर योग सत्संग समिति द्वारा विपिन इण्टरप्राइजेज 1/6C माधव कुंज कटरा प्रयागराज से मुद्रित एवं क्रियायोग आश्रम एण्ड अनुसंधान संस्थान झूंसी, प्रयागराज उत्तर प्रदेश से प्रकाशित।

सम्पादक

स्वामी श्री योगी सत्यम्

RNI No: UPHIN/2001/09025

ऑफिस मो.: 9565333000

Email:- akhandbharatsandesh1@gmail.com

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र प्रयागराज होगा।

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने पाकिस्तान में हुए आतंकवादी हमले की निंदा की

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने एक बयान जारी कर पाकिस्तान के दक्षिणी बंदरगाह शहर कराची में हुए आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की है, जिसके परिणामस्वरूप दो चीनी और कई पाकिस्तानी नागरिकों की मौत हो गई

संयुक्त राष्ट्र। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने एक बयान जारी कर पाकिस्तान के दक्षिणी बंदरगाह शहर कराची में हुए आतंकवादी हमले की कड़ी निंदा की है, जिसके परिणामस्वरूप दो चीनी और कई पाकिस्तानी नागरिकों की मौत हो गई। साथ ही कई चीनी और पाकिस्तानी नागरिक घायल हो गए।

बयान में कहा गया कि सुरक्षा परिषद के सदस्य पाकिस्तान के कराची स्थित जिन्ना अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के निकट हुए आतंकवादी हमले की कड़े शब्दों में निंदा करते हैं।

उन्होंने पीड़ितों के परिवारों तथा चीन और पाकिस्तान की सरकारों के प्रति अपनी गहरी सहानुभूति और संवेदना व्यक्त की तथा घायलों के शीघ्र स्वस्थ होने की कामना की।

समाचार एजेंसी सिन्हुआ के अनुसार, परिषद के सदस्यों ने इस बात पर पुनः जोर दिया कि आतंकवाद अपने सभी रूपों और अभिव्यक्तियों में अंतर्राष्ट्रीय

शांति और सुरक्षा के लिए सबसे गंभीर खतरों में से एक है। उन्होंने आतंकवाद के इन निंदनीय कृत्य के अपराधियों, आयोजकों, वित्तपोषकों और प्रायोजकों को जवाबदेह ठहराने और उन्हें न्याय के दायरे में लाने की आवश्यकता पर बल दिया।

उन्होंने सभी देशों से अंतरराष्ट्रीय कानून और सुरक्षा परिषद के प्रासंगिक प्रस्तावों के तहत अपने दायित्वों के अनुसार चीन और पाकिस्तान की सरकारों के साथ-साथ इस संबंध में अन्य सभी प्रासंगिक अधिकारियों के साथ सक्रिय रूप से सहयोग करने का आग्रह किया।

बयान में कहा गया "सुरक्षा परिषद के सदस्यों ने दोहराया कि आतंकवाद का कोई भी कृत्य आपराधिक और अनुचित है, चाहे उसका उद्देश्य कुछ भी हो, चाहे वह कहीं भी, कभी भी और किसी के द्वारा भी किया गया हो।"

बयान में इस बात पर जोर दिया गया कि सभी देशों को संयुक्त राष्ट्र चार्टर और अंतरराष्ट्रीय कानून के तहत अन्य दायित्वों के अनुसार आतंकवादी कृत्यों के कारण अंतरराष्ट्रीय शांति और सुरक्षा को होने वाले खतरों से हर तरह से निपटना चाहिए।